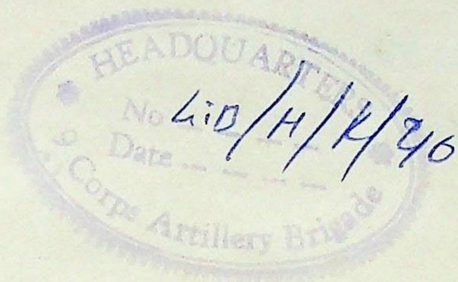
काला शहर गोरे लोग

एहसान-उल-हक



669
413



काला शहर गोरे लोग

काला शहर गोरे लोग

एहसान-उल-हक़

अनुवादक

मुनीश सक्सेना



राधाकृष्ण प्रकाशन

मूल्य : १० रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
२ अंसारी रोड, दरियागंज
दिल्ली-११०००६

मुद्रक
रूपक प्रिंटर्स
के-१७, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

मेरी यह किताब

अगर आप लंदन जाने वाले हैं तो यह किताब लंदन-गाइड का काम देगी। अगर आप लंदन में कुछ दिन गुज़ार चुके हैं तो यह किताब आपकी भूली-बिसरी यादें ताज़ा कर देगी और अगर आप न गये हैं और न जाने वाले हैं तो यह किताब आपको ऐसी जगहों पर ले जायेगी जहाँ जाते हुए डर भी लगे और जी भी चाहे।

विलायत से आने वाले हिंदुस्तानी आमतौर पर लंदन की बड़ी ग़लत तसवीर पेश करते हैं। जाने क्यों हिंदुस्तान की धरती पर क़दम रखते ही उनके व्यक्तित्व में वह पुराना अंग्रेज़ साहब-बहादुर जाग उठता है जो आज़ादी से पहले हिंदुस्तान के तपते हुए रेगिस्तानों में ख़ेमे के अंदर खाना खाते वक्त डिनर-सूट पहना करता था। दुख तो यह है कि हमारा हीनता का भाव आज तक हमें अजायबघर में रखे हुए उसी अंग्रेज़ की नक़ल करने पर मजबूर कर रहा है। इसीलिए कहते हैं कि हमने जितने बरस अंग्रेज़-शासन की गुलामी की थी उससे कहीं ज्यादा उस संस्कृति की गुलामी करेंगे जो हमें उनसे उत्तराधिकार में मिली है।

हिंदुस्तान में खून की कमी और लंदन में पौंड की कमी एक आम बीमारी है। हमारे एक दोस्त पौंड की कमी वाली बीमारी के सारे कीटाणु साथ लेकर लंदन पहुँचे और जब परेशानी हद से गुज़री तो आँख बंद करके नौकरी की तलाश शुरू कर दी। आख़िरकार नौकरी मिली लेकिन गुप्त रोग क़ी तरह, जिसके बारे में किसी को कुछ बताया नहीं जा सकता। हुआ यह कि जब कोई दरवाज़ा न खुला तो ज़मीन के नीचे चलने वाली रेलगाड़ियों के विभाग में एक वर्दीधारी नौकरी मिल गयी। काम यह था कि दिन-भर पाख़ाने के अन्दर और बाहर झाड़ू देते रहे।

धुन के पक्के थे। दिन को झाड़ू देते, शाम को स्कूल जाते और रात में होम-वर्क करते। आख़िर एक बड़ी-सी डिग्री लेकर जब हिंदुस्तान वापस पहुँचे तो एकदम कायापलट हो गयी। अब वह साहब-बहादुर बन चुके थे। एक बड़ी-सी फ़र्म में बड़ी-सी तनख्वाह पर बड़े-से अफ़सर बन गये। फिर बीते दिनों को ऐसा भूले कि अपने उस हितैषी को भी पहचानने से इनकार कर दिया जिसने लंदन के अंडरग्राउंड स्टेशन पर पाख़ाना साफ़ करने का काम दिलाया था।

ऐसी एक नहीं सैकड़ों मिसालें मिल जायेंगी। आप यक़ीन कीजिये वहाँ से वापस आने वालों में से ज्यादातर इसी तरह के काम करके अपनी पढ़ाई का ख़र्च पूरा करते हैं। वहाँ इसे 'डिगनिटी ऑफ़ लेबर' (श्रम का गौरव) का नाम दिया जाता है, लेकिन यहाँ पहुँचते ही, क्या गरमी और क्या सर्दी, गाउन बदन से नहीं उतरता। ११० डिग्री वाली गरमी में टाई गले से नहीं खुलती, चाहे हवास खो जायें।

जाने क्यों मैं जब भी किसी हिंदुस्तानी को हिंदुस्तान में अंग्रेज बनते हुए देखता हूँ तो एकदम उसकी एक और तसवीर नज़रों के सामने उभरती है। वह मुझे लंदन के किसी होटल में रात गये जूठे बर्तन धोता हुआ दिखायी देने लगता है।

लंदन की इमारतें काली हैं और वहाँ के बसने वाले गोरे। हममें और उनमें बस इतना ही अन्तर है कि हम खनकते और बजते हुए क़हक़हे लगा लेते हैं और वहाँ के लोगों को यह छोटा-सा कमाल दिखाने के लिए शराब का सहारा लेना पड़ता है। लेकिन दिल वहाँ भी धड़कते है। प्यार वहाँ भी मिल जाता है। औरतों में वफ़ादारी भी मिलती है, लेकिन आँखें खुली हुई सही रास्ता देखने और दिखाने वाली वफ़ादारी।

आमतौर पर हमारे लेखक पर्यटकों की तरह लंदन जाते हैं और फिर साहित्यकारों की तरह वहाँ की ज़िंदगी पर कहानियाँ लिख मारते हैं। लेकिन इस उपन्यास को पढ़ कर आपको ऐसा लगेगा जैसे साहित्यिक हवेली की बंद खिड़कियों के पट खुल गये हों। इसको पढ़ कर आपको एक नये अनुभव का आभास होगा। इसकी हर बात एक नयापन लिये हुए है। उपन्यास को पढ़ कर आपको गुस्सा भी आयेगा, आप गालियाँ भी देंगे—

न केवल उस देश को, बल्कि लेखक को भी। और अगर आप दक़ियानूसी क़िस्म के आदमी हैं तो हो सकता है कि किताब पढ़ने के बाद आप उसे चुपचाप कहीं छुपा कर रख दें।

बहरहाल यह एक हक़ीक़त है कि इसको पढ़ कर आपको एक पूरे देश, एक पूरे समाज और एक पूरी जाति का अनुभव हो जायेगा।

उपन्यास को पढ़ कर आपके दिमाग़ में एक सवाल पैदा हो सकता है : 'क्या सचमुच लंदन में यह सब कुछ होता है ?'

तो इस सवाल का जवाब ढूँढ़ने के लिए दूर नहीं जाना होगा। 'काला शहर गोरे लोग' के पात्र इस सवाल का जवाब देंगे। इनमें से एक पूरब का प्रतिनिधित्व करता है और दूसरा पश्चिम की जीती-जागती तसवीर है।

"हम दोनों इश्क़ की इस मंज़िल पर जिस्मों के सहारे के बिना पहुँचे थे। ये होंठ आज भी प्यासे हैं, उस वक्त भी प्यासे थे। ये उस आफ़ते-जाँ के होंठों तक कभी न पहुँच सके। इसीलिए कहता हूँ कि मुहब्बत की मुहर लगाने के लिए सिर्फ़ होंठों का मिलाप काफ़ी नहीं है।"

और दूसरा संवाद है : "योरपियन समाज की यह ख़राबी है कि यहाँ के लड़कों और लड़कियों को कम-उम्र में ही सेक्स के अनुभव हो जाते हैं और यह बताने की ज़रूरत नहीं कि यहाँ की अस्सी फ़ीसदी लड़कियों की शादी उस वक्त होती है जब वे गर्भवती हो चुकी होती हैं।"

मुझे इस वक्त लंदन की एक बे-बाक लड़की याद आ रही है। मुश्किल से २२-२३ साल उम्र होगी। हुस्न ऐसा कि नज़र थम जाये और बे-धड़क ऐसी कि आपके दिल की धड़कनें बीच-बीच में रुक जायें ! तो यह लड़की बड़ी बे-बाकी से दुनिया के मज़े लूटने पर तुली हुई थी। जब पूछा कि "भई, इतनी जल्दी क्या है ?" तो कहने लगी, "मेरे पास सिर्फ़ दो महीने हैं। मेरी मँगनी हो चुकी है और दो महीने के बाद शादी होने वाली है।"

लेकिन ये 'ऐबनार्मल कैरेक्टर' होते हैं जो किसी भी सरज़मीन पर मिल सकते हैं। मैंने ऐसी भी अंग्रेज़ लड़कियाँ देखी हैं जो अकेली रहती हैं, दफ्तरों में काम करती हैं, शराब पीती हैं और हर शाम नाचने के बावजूद

उनकी पवित्रता और उनका सतीत्व चहारदीवारी में रहनेवाली लड़कियों की तरह रहता है।

'काला शहर गोरे लोग' एक अंतर्राष्ट्रीय उपन्यास है जिसकी रंगभूमि देशों की सीमाओं, धर्म की दीवारों और वर्ण तथा जाति के भेदभाव से भी आगे निकल जाती है। शायद इसीलिए उपन्यास में जगह-जगह इंद्रधनुष के रंग बिखरे हुए मिल जाते हैं।

इसमें एक बूढ़ा रूढ़िवादी अंग्रेज़ है जो यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि उसका दामाद काला होगा। लेकिन जब वक्त उसे सबक़ सिखाता है तो 'कृष्ण की आकृति अपने डील-डौल से भी बड़ी हो जाती है' और फिर यही बूढ़ा रूढ़िवादी अंग्रेज़ एक काले बच्चे की ख़ातिर क्राइस्ट को छोड़ने को तैयार हो जाता है।

इसमें एक नौजवान मौलाना शराब के नशे में यही चिल्लाता रहता है: 'ख़ुदा की क़सम, यह दाढ़ी मेरी नहीं मेरे बाप की है। यह शराफ़त का लेबल मेरा नहीं, मेरे ख़ानदान का है।' और फिर वह अपने मानसिक बिखराव में ख़ुदा से सिर्फ़ एक शिकायत करता है: 'ऐ ख़ुदा, तेरी इबादत के बिल बहुत देर में अदा होते हैं।'

इसका हीरो गौतम बुद्ध के दार्शनिक विचारों का सहारा लेकर अपनी प्रेमिका के होंठों तक पहुँचने की कोशिश करता है। और दूसरी योरूपियन गर्भवती हीरोइन गिरजाघरों में जाकर रात-दिन गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ा कर बस एक ही दुआ माँगती हैं: 'या ख़ुदा, तू मुझे काला बच्चा दे।'

और इसका सबसे बड़ा नास्तिक हीरो आनन्द 'इतना खूबसूरत है जितना किताबों में धर्म होता है।'

अगर यह कहा जाये तो ग़लत न होगा कि लंदन में रहनेवाले हिन्दुस्तानियों की ज़िन्दगी, उनकी समस्याओं, उनकी परेशानियों, उनके भटकाओं और दो सभ्यताओं के टकराव पर इससे अच्छा उपन्यास अभी तक शायद ही कोई लिखा गया है।

एहसान-उल-हक़

१

अधूरा नृत्य

ख़ालिद को कुछ सुनायी नहीं दे रहा था। उसके क़दम अपनी जगह से हिल न सकते थे। उसने जीवन में पहली बार औरत को इतने पास से देखा था। उसके हाथ ठंडे पड़ गये और चेहरा लाल हो गया। नारी-शरीर की इसी सुगंध के बारे में उसने क्या कुछ सुना था और कितना पढ़ा था ! मगर यह तो उससे भी ज्यादा तेज़ निकली।

डांस-टीचर ने अपने सीधे हाथ की उँगलियाँ ख़ालिद की उँगलियों में उलझा दीं और बायाँ हाथ उसके कंधे पर रख कर उसे समझाने लगी कि अपना हाथ मेरी कमर के गिर्द डाल दो और फिर 'क्विक-क्विक-स्लो' की लय पर क़दम उठाओ। लेकिन ख़ालिद के क़दम तो आसमान पर थे, ज़मीन पर थे ही नहीं और दिमाग़ वे-लगाम घोड़े की तरह बहक रहा था।

"ऐसी की तैसी में गया डांस !" कमर में पड़े हुए हाथ की पकड़ सख्त हो गयी और वह उसके इतने पास आ गयी कि ख़ालिद ने उसके सीने के स्पर्श और उसकी कोमलता को अनुभव किया। उसकी साँसों से आग बरसने लगी और क़दम डगमगाने लगे। टीचर ख़ालिद की इस मनोदशा से अपरिचित, फ़र्श पर उसके क़दमों को देख कर 'क्विक-क्विक-स्लो' का मंत्र दोहराती रही। और जब उसने ख़ालिद के बेतुके उठते हुए क़दम देखे तो वह बड़े प्यार से मुस्करायी और कहने लगी :

"आज तुम्हारा पहला दिन है न ?"

"जी—जी हाँ।" ख़ालिद हकलाया।

"अपने पार्टनर को कभी इतने ज़ोर से मत पकड़ो वरना वह आज़ादी से नाच न सकेगी," टीचर ने निरीह भाव से कहा।

ख़ालिद का जी चाहा कि वह चिल्ला कर कह दे, 'मुझे नाच नहीं चाहिए, मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। मैं दोनों हाथों को तुम्हारी कमर के गिर्द जकड़ कर इस ज़ोर से भींचना चाहता हूँ कि तुम्हारा जिस्म मुझ में समा जाये।' लेकिन वह कुछ कह न सका। उसके चेहरे पर खिसियाहट ने लाली दौड़ा दी।

"मुझे गर्मी बहुत लग रही है।"

"ताज्जुब है, शाम के अखबार में तो लिखा था कि आज की जैसी सर्दी तो पिछले पच्चीस साल में नहीं पड़ी है।" टीचर मुस्करा रही थी।

"तो—तो फिर मेरी तबीअत ख़राब होगी।" ख़ालिद नर्वस था।

"जी न चाहता हो तो डांस न करो—कल आ जाना" टीचर ने नर्मी से कहा।

"ऐसी बात नहीं है। ऐसी बात बिलकुल नहीं है। मैं—मैं तो आपके साथ सुबह से शाम तक नाच सकता हूँ।" ख़ालिद कहना चाहता था कि जिन्दगी-भर नाच सकता हूँ।

संगीत की धुन बदली तो टीचर एक क्षण के लिए रुकी और ख़ालिद से कहने लगी, "क्या ख़याल है, हम लोग कल से शुरू करें?"

"हाँ—हाँ मैं कल इसी वक्त आ जाऊँगा। लेकिन एक बात है—कल आप ही मेरी टीचर होंगी ना?"

"कोई ज़रूरी नहीं है। यहाँ छः लड़कियाँ डांस सिखाती हैं। अगर आप मुझ ही से सीखना चाहते हैं तो मैनेजर से कह दीजियेगा। उसे कोई एतराज़ न होगा।"

टीचर ने ख़ालिद की कमर से हाथ निकाल लिया और ख़ालिद को ऐसा लगा जैसे हवा में उड़ते हुए पैराशूट की छतरी उसके हाथ से छूट गयी हो। लेकिन उसने हिम्मत करके एक और सवाल कर डाला:

"सुनिये, आपका नाम क्या है? यह तो मैंने पूछा ही नहीं।"

"मार्गरेट।" उसने संक्षेप में उत्तर दिया।

"और मुझे ख़ालिद कहते हैं।" वह मार्गरेट से हाथ मिला कर जब बाहर निकला तो लंदन के आसमान से कुहरा और ज़मीन से इमारतें कुछ इस तरह एक-दूसरे की ओर लपक रही थीं कि उनकी सीमाएँ निर्धारित

करना कठिन हो गया था। रंगों को तरसी हुई लंदन की इमारतों पर बेचारगी बरस रही थी। जैसे-जैसे धुंध बढ़ती रही थी, बिजली के खंभों ने अपनी रोशनी समेटनी शुरू कर दी थी और अब वे अपने क़द से दूने होकर टिमटिमा रहे थे।

जीवन के इस नये अनुभव ने उसे समय, स्थान, मौसम और कर्त्तव्य के बंधनों से मुक्त करके एक नया जीवन दे दिया था। वह रात-भर सो न सका और दूसरे दिन उसने ग़लती यह की कि फ़ैक्टरी का काम करने के लिए भी नहीं गया। नतीजा यह हुआ कि वक्त पहाड़ बन गया, जिसे काटने के लिए उसके पास केवल मार्गरेट की कल्पना और भविष्य की आशंकाएँ थीं।

दिन-भर उसने दाढ़ी नहीं बनायी। उसने सोचा मुझे छः बजे डांस के दूसरे सबक़ के लिए जाना है, इसलिए पाँच बजे दाढ़ी बनाना मुनासिब रहेगा।

शाम को छः बजे जब उसने धड़कते दिल से डांस-हाल में क़दम रखा तो मार्गरेट की कमर में किसी दूसरे छात्र का हाथ पड़ा हुआ था और वह उसे उसी लगन के साथ डांस सिखा रही थी। ख़ालिद पर एक बिजली-सी गिरी। उसको अपना दिल डूबता हुआ-सा लगा। लेकिन जल्द ही उसने अपने को संभाल लिया। ये संकट रास्ते में आयेंगे। इस पर तो वह सारी रात सोच-विचार कर चुका था। वह उदास होने लगा था। लेकिन मार्गरेट की नजर जैसे ही ख़ालिद पर पड़ी वह मुस्कराती हुई उसके सामने आ गयी।

"ख़ालिद, आज कैसी तबिअत है ?"

"कल से अच्छी है," उसने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

"कल तबिअत ख़राब होने के बावजूद तुम्हारी पकड़ बड़ी सख्त थी," मार्गरेट ने चोट की।

"लेकिन आज मैं आपको गुलाब के फूल की तरह संभाल कर रखूंगा।"

दोनों हँस दिये। मार्गरेट ख़ालिद को फ्लोर पर ले आई। हाथ हाथ से मिले। ख़ालिद ने एक क्षण के लिए मार्गरेट की आँखों में झाँक कर देखा और मार्गरेट फौरन बोल उठी, "क्विक-क्विक-स्लो याद है ?"

"हाँ, याद है। सब अच्छी तरह याद है।" दोनों बड़ी देर तक नाचते रहे। संगीत की धुन सारे वातावरण पर छायी हुई थी—मार्गरेट का कई बार जी चाहा कि वह उसके साथ बह जाये, उड़ जाये। लेकिन ख़ालिद के अनाड़ी क़दम उसे रोके रहे। फिर ख़ालिद कहने लगा :

"हमारे यहाँ जब उस्ताद पहला सबक़ देता है तो उसे मिठाई खिलायी जाती है।"

"इतनी अच्छी रस्म को तुमने क्यों छोड़ दिया है ?" मार्गरेट शरारत से बोली।

"मार्गरेट, ज़रा एक मिनट।"

जिस वक्त ख़ालिद ने अपनी जेब से वह छोटा-सा पैकेट निकाला तो उसके हाथ काँप रहे थे। उसकी आवाज़ भर्रायी हुई थी और दिन-भर का रटा हुआ जुमला उसके हलक़ में फँस रहा था।

"मार्गरेट, ये चाँदी की बालियाँ मैं तुम्हारे लिए लाया हूँ। यह तोहफ़ा मैंने हिन्दुस्तान में यह समझ कर ख़रीदा था कि लंदन की सबसे ख़ूबसूरत लड़की को पहनाऊँगा और फिर सुनहरे बालों की पृष्ठभूमि पर इन बालियों को झूलता हुआ, लहराता हुआ, नाचता हुआ देखूँगा।"

मार्गरेट को विश्वास न हुआ, लेकिन बालियों को हाथ में लेकर वह खुशी से खिल उठी। चुटकी में पकड़ कर वह उन्हें झकोले देते हुए कहने लगी, "ये तो बहुत ख़ूबसूरत हैं ! ये तो सचमुच बहुत शानदार लगती हैं! तुम कितने अच्छे हो ! शुक्रिया, बहुत-बहुत शुक्रिया ! अच्छा आओ, अब डांस करें। तुमने कल का सबक़ याद कर लिया है ?"

ख़ालिद ने तो कल का सबक़ ज़िन्दगी-भर याद रखने का फ़ैसला किया था। वह कहने लगा, "आप सनीचर की शाम मेरे साथ क्यों न गुज़ारिये—साथ खाना खायेंगे।"

मार्गरेट को ख़ालिद के साहस पर अचंभा हुआ, लेकिन उसे निमन्त्रण स्वीकार कर लेने में जीवन का एक और अनुभव होने की आशा दिखायी दी। इसलिए उसने मुस्करा कर पूछा, "क्या उस्ताद को मिठाई खिलाने का इरादा है ?"

"मिठाई नहीं, खाना।" ख़ालिद की हिम्मत बढ़ चुकी थी।

"क्या खिलाओगे ?"

"वह जो आपने जिन्दगी में कभी न खाया हो।"

"मैंने ज़हर कभी नहीं खाया है," मार्गरेट बड़ी ज़ोर से हँसी।

"आप क्यों ज़हर खायें ! जहर तो दूसरे आपकी ख़ातिर खायेंगे।"

"तो फिर ठीक है। दिन होगा सनीचर का, वक्त होगा शाम का।" मार्गरेट ने ख़ालिद का निमन्त्रण स्वीकार करते हुए कहा।

ख़ालिद के होश-हवास न सिर्फ़ लौट आये थे बल्कि उसका जी चाह रहा था कि लहक कर गाने लगे। वह मुस्कराते हुए शरारत से कहने लगा, "नहीं दिन होगा ईद का और वक्त होगा लगन का।"

ख़ालिद जब घर लौटा तो उस पर एक अजीब सन्नाटे की कैफ़ियत छायी हुई थी। आज वह अपने बीते जीवन के बारे में सोच रहा था। उसका लंदन का जीवन तो बहुत ही कम दिनों का था, लेकिन इस थोड़े-से अरसे में उसने बहुत-कुछ सीख लिया था। और अभी तो उसे अनुभवों की न जाने कितनी और मंज़िलों से गुज़रना था !

लंदन में उसने बिना पैसे के प्रवेश किया था। यहाँ के बीते हुए दिन उसके जीवन के जाने कितने बरसों पर हावी थे। अगर उसे आनन्द और बर्नी का सहारा न मिल गया होता तो शायद वह अपनी हार को कोई राजनीतिक रंग देकर या वर्ण-भेद कह कर वापसी का टिकट ले चुका होता।

आनन्द लंदन के उन अनुभवी हिन्दुस्तानियों में से एक है जो क़ानून की सीमाओं का कभी उल्लंघन नहीं करते, लंदन में रहने वालों की तरह रहने की कोशिश करते हैं, और जिन पर इडली, डोसा या सरसों का साग खाने के दौरे नहीं पड़ते और शायद यही वजह थी जो उसकी मित्र-मंडली में हर देश, हर धर्म, हर नस्ल और हर रंग के लोग शामिल हो जाते थे।

ख़ालिद ने आनन्द की तलाश उस समय शुरू की थी जब नौकरी की ज़रूरत चिन्ताजनक हद तक पहुँच चुकी थी।

काले लोगों के लिए 'सफेद कालर' की नौकरी—कुछ अजीब-सा लगता

है अंग्रेज़ों को। इसीलिए हर दफ्तर में ख़ालिद से यही कहा गया कि आप अपना पता छोड़ जाइये, हम जल्दी ही कोई इन्तज़ाम कर देंगे। दुकानों के काउंटरों पर भी दूध मिली काफ़ी के रंग के लोग सजते नहीं, इसलिए वहाँ काम मिलने का सवाल ही पैदा नहीं होता। ख़ालिद ने फ़ैक्टरी का रुख़ किया तो पता चला कि लगभग सभी जगहों पर उसके पहुँचने से कोई पन्द्रह मिनट पहले ही कोई रख लिया गया है।

अब ख़ालिद का आख़िरी सहारा बस आनन्द था जो पिछले अनगिनत बरसों से लंदन में क़ानून की शिक्षा प्राप्त कर रहा था। माँ-बाप ने बेटे को बड़े चाव और अरमानों से लंदन भेजा था लेकिन बेटा बीच रास्ते में बहक गया। फिर इतने बहुत-से मोड़ आ गये कि असली रास्ते का पता न चल सका।

लंदन में वह बी० बी० सी० के सहारे रोज़ी कमाने के अलावा बहुत-सी महत्त्वपूर्ण समाज-सेवाएँ कर रहा था। उसने भारत से आनेवाले नये विद्यार्थियों को परीक्षाएँ पास कराने और घर से रुपये मँगाये बिना शिक्षा प्राप्त करने के गुर सिखाने का काम अपने ज़िम्मे ले रखा था।

आनन्द के व्यक्तित्व में बड़ा आकर्षण था। ख़ालिद पर भी उसके व्यक्तित्व ने अपनी छाप लगा दी क्योंकि वह अपनी बातों से दुनिया देखा हुआ और सच्चा आदमी मालूम होता था। ख़ालिद जब उससे मिला तो वह फ़ौरन उपदेश देने पर उतर आया :

"सबसे पहली बात तो यह कि आप एक काला सूट ख़रीद लीजिये जिसके लिए आपके पास पौंड न होंगे। मैं उधार दे दूंगा, और यह जो नीले-पीले कपड़े आपने पहन रखे हैं, उनको तह करके सलीक़े से बक्स में रख दीजिये। अगर चार-छः महीने के बाद पहनने को जी चाहे तो आप निकाल लीजियेगा, वरना अपने साथ हिन्दुस्तान वापस लेते जाइयेगा।

"दूसरी बात यह कि बेकार क़िस्म के दब्बूपन को भूल जाइये। अगर एक जगह नौकरी नहीं मिलती तो दूसरी जगह कोशिश कीजिये। किसी के इंकार से आपकी इज्ज़त नहीं जानी चाहिए। आप लाख पढ़े-लिखे क्यों न हों, अच्छी नौकरी बहरहाल आइडियल महबूबा की तरह होती है जो कभी नहीं मिलती। आप जब अपनी शुद्ध अंग्रेज़ी शुरू करेंगे तो सामने वाला

अंग्रेज़ सिर्फ़ एक बात कहेगा। और आप जानते हैं वह क्या बात कहेगा ?"

ख़ालिद ने इंकार से सर हिलाया।

"मोसियो, वह कहेगा—आई बेग योर पार्डन ! तो ऐसी सूरत में बेहतर यही होगा कि शुरू-शुरू में आपको जो मिल जाये उसी पर सन्तोष कर लीजिये।

"तीसरी बात यह कि अंग्रेज का रोब बिलकुल न खाइये। उसे बराबर का समझ कर तमीज़ से बात कीजिये।

"और चौथी बात यह कि कहीं किसी मौक़े पर बेईमानी की या झूठ बोलने की कोशिश न कीजिये, क्योंकि यहाँ क़ानून की पकड़ सिफ़ारिश से ढीली नहीं होती।

"बाक़ी रहा काम दिलाने का सवाल तो कल आप आ जाइये, मैं नौकर रखा दूँगा।"

ख़ालिद ने आनन्द की बातों को बड़ी श्रद्धा के साथ ध्यानमग्न होकर सुना, फिर कहने लगा :

"आनन्द, मैं सिर्फ़ दस पौंड लेकर लंदन पहुँचा था और अब हालत यह है कि अगर किसी फ़ैक्टरी में मज़दूरी मिल जाये तो कौन कमबख्त है जो क़बूल न करे ?"

आनन्द का एक ज़ोरदार क़हक़हा वातावरण में गूंज उठा। ख़ालिद ने परेशान होकर वजह पूछी तो आनन्द कहने लगा :

"मैंने छः साल फ़ैक्टरी में मज़दूरी की है और आला हज़रत को भी उसी फैक्टरी में काम दिलाने का इरादा है। लेकिन अब सोच रहा हूँ क्या यह नौकरी हुज़ूर के शायाने-शान होगी ?"

एक मुद्दत के बाद ख़ालिद के चेहरे पर मुस्कराहट दिखायी दी। वह कहने लगा, "जहाँपनाह इस नौकरी को मुक़द्दर का तोहफ़ा समझ कर कबूल कर लेंगे।"

"क़िब्लए-आलम, आपकी यह क़ुर्बानी सल्तनते-बर्तानिया शायद कभी न भूल सके !"

दोनों ने एक भरपूर क़हक़हा लगाया लेकिन आवाज़ डूबने से पहले आनन्द बोला, " इतना दुखी होने की ज़रूरत नहीं है।"

"दुखी होने की बात नहीं है, आनन्द ! फ़ैक्टरी में मज़दूरी करके मैं घर वालों को क्या भेजूँगा ?" ख़ालिद ने आशंका प्रकट की।

"देखिये, यहाँ के नब्बे फ़ीसदी हिंदुस्तानियों की यही प्राब्लम है। नौकरी के बारे में आपको कुछ नहीं लिखना होगा। सिर्फ़ नौकरी मिलने की खुशखबरी और तनख्वाह का हिसाब। जब आपके वालिद बुजुर्गवार को ख़त मिलेगा कि साहबज़ादे को एक हजार रुपये की नौकरी मिल गयी है तो वह आपका ख़त लेकर सारे मुहल्ले का चक्कर लगायेंगे।"

ख़ालिद को आनन्द की बात बिलकुल सच लगी। उसकी आँखों के सामने बुड्ढे बाप की तसवीर आ गयी।

लेकिन आनन्द ने फिर उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया :

"अंग्रेज़ डिप्लोमेसी (कूटनीति) का सिम्बल (प्रतीक) है। उसने गिरे हुए काम को उठाने के लिए, यों भी कह सकते हैं कि मज़दूर के उठे हुए सर को झुकाने के लिए ऐसे-वैसे कामों पर 'डिगनिटी ऑफ़ लेबर' का लेबल लगा दिया है। इसलिए ऊँचे लोग अब अपने को ऊँचा समझते हैं और नीचे लोग अपने को नीचा नहीं समझते।"

"क्या मतलब, मैं समझा नहीं ?" ख़ालिद ने सवाल किया।

"मतलब यह 'डिगनिटी ऑफ़ लेबर' का मतलब होता है 'मजबूरी बहरहाल मजबूरी है'।"

फिर जब ख़ालिद आनन्द से विदा होने लगा तो आनन्द ने चुपके से पाँच-पाँच पौंड के तीन नोट उसकी जेब में डाल दिये थे और ख़ालिद के विरोध को शांत करने के लिए अपने होंठों पर उँगली रख कर कहा था :

"शीः...! उधार हैं।"

ख़ालिद उस दिन सचमुच रो दिया था।

और इस तरह ख़ालिद एक फ़ैक्टरी में भरती हो गया। सनीचर के दिन जब हफ्तेवार तनख्वाह का पहला लिफ़ाफ़ा उसके हाथ में आया तो उसमें दो सौ रुपये देख कर वह अपने देश को याद करने लगा। उसका मज़दूर साथी चुपचाप खड़ा हुआ ख़ालिद के चेहरे के उतार-चढ़ाव देख रहा था और ख़ालिद अपने चारों ओर की दुनिया से बेख़बर होकर सोच

रहा था, सोच रहा था—कि अचानक दिल की आवाज़ ने उसे चौंका दिया।

"मेट, आज तो तुम्हें बियर पिलानी होगी।"

"अरे, आज तो मैं तुम्हें बियर में नहला दूंगा।"

फ़ैक्टरी से मिले हुए 'पब' में वे दोनों काउंटर के पास जाकर स्टूल पर बैठ गये। डिक ने दो पाइंट 'रेड बैरल' का आर्डर दिया। ख़ालिद ने तीन रुपये का बिल अदा करके जब झाग बहते हुए मग को उठाया तो वह उसे बहुत बड़ा मालूम हुआ। डिक को घर जाने की जल्दी थी। उसने 'चियर' कह कर एक घूंट में आधा मग ख़ाली कर दिया। ख़ालिद ने जब गिलास मुँह से लगा कर चुस्की ली तो उसके होंठों के चारों ओर झाग का एक घेरा बन गया। डिक ने पहले तो मौसम पर बात की। इसके बाद कहने लगा, "एक बात पूछूँ, ख़ालिद ?"

"हाँ पूछो।"

दो लंबे घूंट लेकर डिक कहने लगा, "ख़ालिद, तुम्हें यह मुल्क, यहाँ के लोग, यहाँ का माहौल कैसा लगा ?"

डिक की नज़रें ख़ालिद की चेहरे पर गड़ी हुई थीं और ख़ालिद उस वक्त अपने दिल से पूछा रहा था—'हाँ, सचमुच यह मुल्क तुम्हें कैसा लगा ?'

"बात दरअसल यह है, डिक, कि तुम्हारा मुल्क हम उसे जैसा समझते थे उसके बहुत ख़िलाफ़ है। यहाँ हम आते हैं कुछ और सोच कर, अपने दिमाग़ में कुछ और तसवीर बना कर। पिछले कई सौ साल का इतिहास हमारे विचारों की पृष्ठभूमि होती है। लेकिन जब हमारी मुलाक़ात तुम जैसे लोगों से होती है तो सारे विचार एक झटके में अड़ाम-धड़ाम हो जाते हैं।"

डिक उस वक्त फलसफ़ियाना बातें सुनने के मूड में नहीं था। उसे तो साढ़े-छः बजे की आडंरग्राउंड ट्रेन से जाना था। उसने बात संक्षिप्त करनी चाही।

"हाँ, तुम ठीक कह रहे हो। मैं तुम्हारी बात मानता हूँ।" और यह कहते हुए उसने बारमैन को दो और पाइंट बियर का आर्डर दे दिया। उस

आर्डर के पैसे ख़ालिद के आग्रह के बावजूद डिक ने दिये और कहने लगा :

"कल तुमने टेलीविज़न का प्रोग्राम देखा था ?"

ख़ालिद ने गिलास मुँह से लगा कर एक छोटा-सा घूँट लिया और फिर डिक की बात का जवाब देने की बजाय उल्टा एक सवाल कर डाला :

"डिक, अगर अखबार और टेलीविज़न तुम्हारी ज़िंदगी से निकाल दिये जायें तो तुम क्या बातें करोगे ?"

डिक बहुत ज़ोर से हँसा और कहने लगा, "हम मौसम की बात करेंगे।"

दोनों ने मिल कर क़हक़हा लगाया। इधर-उधर बैठे लोगों ने गिलासों से नज़रें हटा कर दोनों को देखा और फिर अपने-अपने कामों में लग गये। ख़ालिद को फ़ौरन ख़याल आया कि आमतौर पर वह इतनी ज़ोर से तो नहीं हँसता है। उसका पहला गिलास ख़त्म हो चुका था। सारे बदन में सनसनी भी महसूस हो रही थी। लेकिन फिर भी उसने दूसरे गिलास की तरफ़ हाथ बढ़ा दिया। दूरी का अनुमान ग़लत निकला। उँगलियाँ गिलास से टकरायीं और बियर छलक कर काउंटर पर बहने लगी।

ख़ालिद ने एकदम महसूस किया कि उस पर बियर का असर हो चला है। और फिर उसने डिक से आग्रह किया कि उसका दूसरा गिलास भी वही पी ले। उसने थोड़े-से इंकार से बाद गिलास उठाया और एक साँस में गिलास ख़ाली करके काउंटर पर रख दिया। घड़ी पर नज़र डाली और फिर बहुत संक्षिप्त भाव से बोला :

"अच्छा भाई, गुड बाई, फिर मिलेंगे।"

डिक स्टेशन की ओर इस तरह भाग रहा था जैसे गाड़ी प्लेटफ़ार्म पर पहुँच चुकी है।

काफ़ी अँधेरा हो चुका था जब ख़ालिद घर पहुँचा। बर्नी और ख़ालिद एक डबल रूम लेकर ज़िंदगी गुज़ार रहे थे और उस समय अप्रत्याशित रूप से देर से आने पर बर्नी ख़ालिद का इंतज़ार कर रहा था। ख़ालिद की चढ़ी हुई आँखें देख कर बर्नी मुस्कराया।

"तो आज से तुम लंदन वाले बन गये। शायद 'रश आवर' ख़त्म होने

के इंतज़ार में पब में बैठ गये होगे ?"

ख़ालिद ने बर्नी की बात का कोई जवाब नहीं दिया। उसने चुपचाप जेब से तनख्वाह का लिफ़ाफ़ा निकाल कर मेज़ पर रख दिया और कहने लगा, "मुझे बंबई में एक मिनिस्टर की सिफ़ारिश से डेढ़ सौ रुपये महीने की नौकरी डेढ़ साल के इंतज़ार के बाद मिली थी और यह लिफ़ाफ़ा मेरी पाँच दिन की मेहनत का फल है।"

कीमे की प्लेट और डबल रोटी का बंडल मेज पर रखते हुए बर्नी कहने लगा, "एक चीज़ का दूसरी चीज़ से, एक आदमी का दूसरे आदमी से मुक़ाबला न किया करो वरना बहुत दुख उठाना पड़ेगा।"

ख़ालिद ने बर्नी के ख़लीलजिब्रानी वाक्य को ध्यान से सुना और फिर कहने लगा, "अगर तुमने अपनी नसीहत पर खुद ही अमल किया होता तो शायद पाकिस्तान से भाग कर लंदन आने की ज़रूरत न पड़ती।"

ख़ालिद और बर्नी समवयस्क थे और दोनों ने गर्म इंसानी खून से उभरती हुई उस नन्हीं-सी, पतली-सी, तुच्छ-सी लकीर को देखा था जो बाद में दो देशों की सीमा बन गयी थी। ख़ालिद और बर्नी दोनों को यूनिवर्सिटी की शिक्षा तक ज़बरदस्ती पाँचों वक्त नमाज़ें पढ़ायी गयी थीं और उन दोनों को हिंदुस्तान के बँटवारे का निजी अनुभव था।

बर्नी कराची में इस नतीजे पर पहुँचा था कि खुदा को दूसरों को तकलीफ़ पहुँचाने में बड़ा मज़ा आता है।

और ख़ालिद ने बंबई में खुदा और भगवान की दुश्मनी पर ग़ौर किया था और उसे खुदा और भगवान दोनों ही बड़े संकीर्ण विचारों वाले और छोटे-छोटे दिखायी दिये थे। यह क्या बात है कि जब आदमी धीरे-धीरे प्रौढ़ता की अवस्था को पहुँचता है और विषमताओं से भरे जीवन से टक्कर लेने के लिए तैयार हो जाता है तो ऊपर वाला चुपके से अपने पास बुला लेता है।

कराची में बर्नी के दिमाग़ में एक और सवाल उभरा था : आदमियों के मुक़ाबले में मोटरें बहुत कम एक-दूसरे से टकराती हैं। कहीं इसकी वजह यह तो नहीं है कि मोटर चलाने वाले सब लोगों के लिए एक उसूल होता है, एक जैसे बँधे नियम होते हैं और इंसानों की इस उलझी हुई भीड़

के रास्ता चलने का कोई एक उसूल नहीं है। सबके अपने-अपने उसूल हैं।

पाँचों वक्त नमाज़ पढ़ते-पढ़ते एक दिन ख़ालिद को एकदम इस बात का आभास हुआ था कि तरसी हुई जवानी को जा-नमाज़ के नीचे नहीं दबाया जा सकता।

और इस तरह विचारों और परिस्थितियों ने साज़िश करके ख़ालिद को बंबई से और बर्नी को कराची से लंदन पहुँचा दिया था। लंदन में इनकी मुफ़लिसी का ज़माना था। दोनों की गुज़र दूध, मक्खन, आलू और क़ीमे पर हो रही थी। और अभी तक इन दोनों की गिनती उन किरायेदारों में थी जिनसे मकान-मालकिन बहुत खुश रहती है। सनीचर और इतवार की छुट्टी दोनों के लिए आत्मा का बोझ बन जाती। कमरे की सफ़ाई की भी एक हद होती है। अगर मौसम ख़राब हो और धुंध छा गयी हो तो दिल और भारी हो जाता है। उस पर दो बजे दिन से अंधेरा और मुर्दनी फैला देता है। ऐसे ही आत्मा को कुंठित कर देने वाले वातावरण में एक दिन ख़ालिद ने कहा :

"बर्नी, डिक रोज़ाना मुझसे मेरी गर्ल फ्रेंड के बारे में पूछता रहता है। उससे यह तो कहा नहीं जा सकता कि मैंने सारी ज़िंदगी में सिर्फ़ एक औरत का हाथ छुआ है और वह औरत थी मेरी माँ।"

बर्नी ने सलाह दी, "यह बात कहने में कोई हर्ज नहीं है। अपने नैतिक मूल्य इतने ही ऊँचे हैं !"

"लेकिन मैंने तो झूठ बोल दिया है। मैंने कह दिया है कि एक जर्मन लड़की से मेरी दोस्ती है जो बेहद खूबसूरत होने के अलावा मुझ पर मरती भी है। तो अब बताओ यह कमी कहाँ से पूरी की जाये ?" ख़ालिद सचमुच जानना चाहता था।

"लड़की कहाँ से ढूँढ़ी जाये ?" बर्नी सोच में पड़ गया। "सवाल बड़ा दिलचस्प है !"

"सवाल दिलचस्प हो या न हो, जरूरी बहुत है," ख़ालिद ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा।

"देखो ख़ालिद, आज तुमने एक ऐसा सवाल उठाया है जिसका जवाब देने के लिए दो-तीन बातों को साफ़ करना ज़रूरी होगा। मैं पहले अकेला

रहता था। तुम्हारी हालत देख कर मैंने ज़रूरी समझा कि कोई डबल कमरा लेकर तुम्हारे साथ रहा जाये। साथ रहने में खर्च बहुत कम होता है। लेकिन दो लड़कों का साथ रहना यहाँ अच्छी नज़र से नहीं देखा जाता। ठीक है ?"

"हाँ, बिलकुल ठीक है।"

"ठीक है नहीं, ठीक था। अब तुमको नौकरी मिल गयी है। इतने पैसों में आदमी अलग रह कर अपना ख़र्च उठा सकता है। और जब लड़की की खोज की फिक्र हो तो फौरन अकेले रहने का बन्दोबस्त करना चाहिए।" बर्नी ने ख़ालिद को समझाते हुए कहा।

"मैं तुम्हारी बात मानता हूँ और कल से दो सिंगल कमरों की खोज शुरू हो जायेगी।" ख़ालिद ने अपना फैसला सुनाया।

"एक अपने लिए, एक अपनी गर्ल फ्रेंड के लिए!" बर्नी ने मज़ाक किया।

"अरे, नहीं भाई, एक अपने लिए और दूसरा तुम्हारे लिए। अच्छा, मेरा असल सवाल अभी तक जवाब के इंतज़ार में है।"

"दरअसल यह अपने-अपने मिजाज़ की बात होती है।"

"मेरा मिज़ाज तुम जानते हो।"

"जानना इसको नहीं कहते हैं। अभी कुछ दिन हुए अपनी शादी की पच्चीसवीं सालगिरह पर अखबारी नुमाइंदों को जवाब देते हुए एक ख़ातून ने कहा था—'मैं अपने शौहर को अच्छी तरह समझ नहीं सकी हूँ'।"

"अच्छा, बताओ तुमने इस मसले को कैसे हल किया था ?"

"यहाँ एक स्केचिंग क्लब है जहाँ मेम्बरों को स्केचिंग सिखाने के लिए नंगे माडल का इंतज़ाम किया जाता है। मुझे मेरी परेशानी ने आर्टिस्ट बना दिया और फिर मैं बाक़ायदा वहाँ जाकर स्केचिंग करने लगा। मैंने देखा कि एक लड़की भी वहाँ रोज़ाना आती है। मैंने पहले एक-दो दिन तो सिर्फ़ 'हेल्लो' तक मुलाक़ात रखी। उसके बाद हम लोग साथ चाय पीने लगे और फिर एक दिन मैंने उससे कहा कि क्यों न हम दोनों एक-दूसरे के लिए माडल बन जायें—और मेरा तीर निशाने पर बैठ गया।"

"तो लड़की ढूँढ़ने का यह तरीक़ा है ?"

"लड़की ढूँढ़ने से शायद तुम्हारा मतलब गर्ल फ्रेंड ढूँढ़ने से है ?"

"हाँ, नेकनीयती से गर्ल फ्रेंड बनाने का पवित्र ख़याल।"

"हमारे यहाँ लंबे-लंबे फ़ासलों से आँखों-आँखों में मुहब्बत होती है। इस नज़र में हज़ारों अफ़साने होते हैं, जिनकी न तो जड़ होती है, न पौधा निकलता है, न फूल खिलते हैं। और फिर ये फ़ासले उनकी जिंसी भूख को शह देकर उनमें दीमक लगा देते हैं। यूरोप में मेल-जोल बढ़ते ही एक-दूसरे के पास आने की मंज़िल आ पहुँचती है, लेकिन शादी का ख़याल दिमाग़ पर छाया रहता है। तो अगर सचमुच तुम गर्ल फ्रेंड की तलाश में हो तो यह कोई ऐसा मुश्किल काम नहीं है।"

"तुम इसको मुश्किल काम नहीं समझते ?" ख़ालिद ने उसे इस तरह संबोधित किया कि जैसे उसे यक़ीन न आया हो।

"हाँ, कोई मुश्किल काम नहीं है।"

"तो पहला सबक़ इनायत हो।"

"पहला सबक़ यह है कि लैंग्वेज-ट्यूशन सेंटर के मेंबर बन जाओ। वहाँ यूरोपीय मुल्कों की बेशुमार लड़कियाँ अंग्रेज़ी सीखने आती हैं। और सबकी प्राब्लम वही होती है जो तुम्हारी है।"

"अकेलेपन की प्राब्लम ?"

"हाँ, बिलकुल यही प्राब्लम। और दूसरा तरीक़ा यह है कि तुम यहाँ के काफ़ी हाउस में जाकर बैठा करो। अगर कोई लड़की अकेली बैठी हो तो तुम बड़े सलीक़े और शराफ़त से उससे इजाज़त ले सकते हो—'अगर आप बुरा न मानें तो मैं यहाँ बैठ जाऊँ।' इसके बाद मौसम से बात-चीत शुरू करके हिंदुस्तान की नारी के चरित्र पर आ जाओ। और तीसरा तरीक़ा यह है कि क्लेरियन के डांस हाल में एक घंटा डांस सीखने के पाँच शिलिंग लगते हैं। तुम फौरन उधर ध्यान दो। मुराद पूरी हो जायेगी और अगर घड़ी शुभ हुई तो लगन हो जायेगी।"

और बर्नी का यही तीसरा तरीक़ा था जिससे ख़ालिद की मुराद पूरी हुई थी और शुभ घड़ी की आहट उसके कानों में गूँज रही थी।

सनीचर की शाम बहुत देर से आयी, मगर आ गयी। लगन का वक्त जैसे-जैसे पास आता जा रहा था घड़ी उतनी ही सुस्त होती जा रही थी। उसका जी चाह रहा था कि लपक कर घड़ी की सुइयों को चक्करघिन्नी दे दे।

बियर की तीन-चार बोतलें। धुले हुए साफ़-सुथरे गिलास, तले हुए पापड़ मेज़ पर इस तरह सजे हुए थे जैसे ऐश्वर्य के सारे समान जमा हो गये हों और इंतज़ार के इस जानलेवा सन्नाटे में जब दरवाज़े की घंटी बजी तो ख़ालिद के हाथ से गिलास छूटकर छनाक से टूटने की बजाय क़ालीन पर लुढ़क गया। एक छलाँग में ख़ालिद दरवाज़ा खोले बा-अदब बा-मुलाहिज़ा खड़ा था, और दरवाज़े के बाहर—बाहर तो क़यामत आ चुकी थी। चाँदी की दो बालियाँ इस तरह झूम रही थीं जैसे हिप्नोटाइज करने के लिए पहनी गयी हों।

"बड़ी देर कर दी आपने ?" ख़ालिद ने मुस्कराते हुए कहा।

"देर कर दी ? ज़रा घड़ी देखिये।"

"आप ठीक वक्त पर आयी हैं लेकिन पिछला आधा घंटा आधा साल बन कर मेरे ऊपर से गुज़र गया है," ख़ालिद ने भावुकता से कहा। लेकिन मार्गरेट हँसती हुई दरवाज़े के अंदर आ गयी। ख़ालिद जब अपने दरवाज़े के पास पहुँचा तो उसने मार्गरेट को रोकते हुए कहा, "सुनिये, मुझे एक रस्म अदा करनी है।"

"कौन-सी रस्म ?"

"हमारे यहाँ यह रस्म अगर अदा न की जाये तो बड़ी बदशगुनी समझी जाती है।"

मार्गरेट हँसते हुए कहने लगी, "तो फिर देर क्या है ?"

ख़ालिद ने बढ़ कर मार्गरेट की कमर में दोनों हाथ डाल दिये, फिर कहने लगा, "हमारे यहाँ दरवाज़े पर मेहमान को प्यार किया जाता है।" और मार्गरेट के जवाब की राह देखे बिना ख़ालिद अपना काम कर चुका था।

मार्गरेट ने जब बियर पीने से इंकार किया तो एक क्षण के लिए ख़ालिद को अपने सारे मंसूबे ग़लत होते हुए दिखायी दिये। लेकिन अपनी

बरसों पुरानी शराफ़त और गिलगिलेपन का लबादा उतारने के लिए खुद उसका शराब पीना बहुत ज़रूरी था। एक बड़ा-सा गिलास भर कर उसने ग़टाग़ट हलक़ से उतार लिया। फिर दो घटनाएँ एक साथ हुईं। बियर नीचे उतरी और नशा ऊपर चढ़ा।

"मार्ग, तुम्हें मेरी खातिर थोड़ी-सी पीनी होगी।"

वह बड़ी विनम्रता से बोली, "लेकिन, ख़ालिद, मैं बियर नहीं पीती हूँ।"

"अगर तुम पीती होतीं तो मैं अपनी ख़ातिर पीने पर ज़ोर क्यों देता ?"

"लेकिन ख़ालिद, अगर मैं बियर पीने लगूँ तो इतनी मोटी हो जाऊँगी कि डांस भी न कर पाऊँगी। और फिर मेरी नौकरी भी ख़तरे में पड़ जायेगी।"

ख़ालिद बड़ा साहस करके बोला, "तुम्हें नौकरी से कौन निकाल सकता है ? मैं देख लूँगा। लाओ डार्लिंग, अपना गिलास।"

मार्गरेट ने मजबूरन अपना गिलास ख़ालिद की तरफ़ बढ़ा दिया और ख़ालिद ने मौक़ा पाते ही दो गिलास लबालब भर दिये।

बड़ी देर तक वह शराब की चुस्कियाँ लेती रही। इधर-उधर की दिलचस्प बातें करती रही। छोटी-छोटी मामूली बातों पर क़हक़हा लगाती रही। उसके हर क़हक़हे पर चाँदी की बालियाँ इस तरह झूम उठतीं कि ख़ालिद अपनी बात कहते-कहते रुक जाता। इतना निष्कलंक चित्र उसने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था। फिर वह धीरे से उठा और मार्गरेट के सोफ़े पर जाकर बैठ गया। उसने अपना गिलास उठा कर मार्गरेट की बालियों से टकराया। "इसकी आवाज़ भी दिलकश है।"

"ये बालियाँ मुझपर बहुत अच्छी लगती हैं," मार्गरेट ख़ालिद को देखते हुए बोली।

"बालियाँ इतनी खूबसूरत नहीं थीं।"

मार्गरेट ने फिर एक क़हक़हा लगाया। "तुम्हारा मतलब है कि अब खूबसूरत हो गयी हैं, चूंकि मैंने इनको पहन लिया है।"

"मैं क़सम खाकर कह सकता हूँ ये बालियाँ इतनी खूबसूरत नहीं थीं।"

मार्गरेट फिर हँस दी। उसका गिलास ख़ाली हो चुका था। ख़ालिद ने दो गिलास फिर भरे और मार्गरेट को हिन्दुस्तान के किस्से सुनाने लगा। हल्की-फुल्की बातों से जब वह गौतमबुद्ध के विषय पर आया तो उसकी ज़बान लड़खड़ा रही थी। उसने बड़े दार्शनिक भाव से कहना शुरू किया :

"मार्ग, जानती हो गौतमबुद्ध ने सबकुछ तज कर निर्वाण हासिल किया था और मरते वक्त उसने दुःख से चूर आनंद से कहा था—मनुष्य को जीवन के चार सत्यों का ज्ञान होना चाहिए। जानती हो वे चार सत्य कौन-से हैं ?"

मार्गरेट बड़े ध्यान और बड़ी दिलचस्पी से ख़ालिद की बातें सुन रही थी। उसने इंकार में सर हिलाया।

ख़ालिद थोड़ी देर के लिए गौतम की कल्पना में खो गया। वह दूर शून्य में देख रहा था।

"नंबर एक—मनुष्य का अस्तित्व दुःख से भरा हुआ है।

"नंबर दो—हर दुःख का एक कारण होता है।

"नंबर तीन—हर दुःख क्षणिक होता है।

"और नंबर चार...।" ख़ालिद वाक्य पूरा करने से पहले मार्गरेट के पास आ गया। और पास आया। फिर उसने अपने हाथ मार्गरेट की गर्दन में डाल दिये।

"...और नंबर चार—हर दुःख को दूर करने का एक उपाय होता है।" उसने मार्गरेट को अपने और पास कर लिया। "मार्गरेट, हर दुःख को, ज़िन्दगी के हर ग़म को दूर करने का भी तरीक़ा होता है।"

मार्गरेट ख़ालिद की समीपता से डरी नहीं। वह गुड़िया की तरह बैठी रही। मानो कह रही हो—जो चाहो कर लो।

मार्गरेट के नर्म व गर्म होंठों के रसीले प्यार, उसकी लिपस्टिक का फीकापन, उसके सीने की नरमी को वह कैसे भूल सकता था ! 'ये ठन-से बजने वाले सीने लेखकों की कल्पना की उपज होंगे,' उसके मन में एक क्षण के लिए विचार पैदा हुआ।

जब ख़ालिद ने मार्गरेट के होंटों को गंडेरी की तरह चूस कर लंबी साँस ली, तो जाने कहाँ से उसे यह ख़याल आ गया कि मार्गरेट एक अच्छी बीवी बन सकती है। और यह ध्यान आते ही वह मार्गरेट के चेहरे को अपनी दोनों हथेलियों के बीच लेकर उसकी आँखों में कुछ खोजने लगा। फिर धीरे-धीरे अपने चेहरे को मार्गरेट के इतना पास ले आया कि नाकें एक-दूसरे से मिल गयीं। वह बहुत धीमे से उनके कान में कहने लगा, "तुम इतनी खूबसूरत हो कि मैं तुम्हारे साथ ज़िंदगी गुजार सकता हूँ।"

मार्गरेट बोली, "तुम जल्दी कर रहे हो, ख़ालिद !"

ख़ालिद ने अपनी बात जारी रखी। "शादी के लिए सबसे ज़रूरी कौन-सी चीज़ होती है ?"

मार्गरेट ने जवाब दिया, "ज़िंदगी की सच्चाइयों को अच्छी तरह जानना और परखना।"

ख़ालिद अपनी ही धुन में था। बोला, "सिर्फ़ मुहब्बत की ज़रूरत होती है शादी के लिए। मार्गरेट, अगर मुहब्बत सच्ची हो तो फिर कोई कमी, कोई ग़लती, कोई कमज़ोरी दिखायी नहीं देती।"

मार्गरेट उसे समझाती रही, "मुहब्बत की इस मंज़िल तक पहुँचने के लिए आदमी को खुद पहुँचा हुआ होना चाहिए।"

ख़ालिद अचानक कह उठा, "मार्गरेट, मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ।"

इस विचित्र प्रस्ताव पर मार्गरेट हैरान रह गयी। उसे यक़ीन ही नहीं आ रहा था कि यह नौसिखिया लड़का कितनी तेज़ी से मंजिलों को फलाँग जाता है ! वह इतनी हैरान थी कि उसे अपने होंठों से बहते हुए खून का भी ख़याल नहीं आया। खून देख कर ख़ालिद परेशान हो गया। उसे ऐसा लगा जैसे उसने कोई क़त्ल कर दिया हो। अपने हाथ से वह मार्गरेट को तकलीफ़ कैसे पहुँचा सकता है! रूमाल लगा कर उसने मार्गरेट के होंठों को साफ कर दिया और मार्गरेट के कंधे पर सर रख कर कहने लगा, "मार्गरेट, मुझे माफ़ कर दो। मुझसे ग़लती हो गयी है।"

उसने सर उठा कर देखा मार्गरेट की गर्दन का कटाव कितना खूबसूरत था और ठुड्डी के ऊपर उसके साँचे में ढले हुए होंठ—वह अभी यहीं

तक पहुँचा था कि खून का एक और बिंदु मार्गरेट के होंठों पर उभर आया, फिर यह बिंदु बड़ा होता गया। अब खून की एक बूँद मार्गरेट के होंटों पर काँप रही थी। ख़ालिद की आँखों में आँसू छलक आये जो एक-एक करके मार्गरेट के आधा खुले सीने पर टपकने लगे। वह खुद हैरत से उन आँसुओं को सफ़ेद घाटियों के बीच फिसलते हुए देखता रहा। ऐसा अनोखा अनुभव था यह उसके जीवन का कि बदहवासी में खुद उसके आँसू थम गये।

जाने कितने घंटों के बाद घड़ी ने जाने कितने बजाये—मार्गरेट ने चौंककर घड़ी की ओर देखा। पर्स खोल कर उसने छोटे-से आईने में अपनी सूरत देखी, थोड़े से बाल दबाये, थोड़े-से बाल उभारे और फिर वापस जाने के लिये खड़ी हो गयी।

वह कुछ इस भरोसे के साथ जाने के लिए खड़ी हुई थी कि ज़ैसे फ़ैसला बदलने की कोई गुंजाइश बाक़ी न रही और ख़ालिद ने भी चुपचाप और बेचारगी से मार्गरेट को इस तरह देखा जैसे पूछ रहा हो, 'क्या तुम्हारे फ़ैसले के ख़िलाफ कोई अपील नहीं की जा सकती ?'

मार्गरेट के जाने के बाद ख़ालिद बड़ी देर तक आँखें बंद किये अपनी कुर्सी में लेटा रहा।

दूसरे दिन ख़ालिद ने अपनी आपबीती वर्नी को सुनायी। वर्नी की शांत मुद्रा में कोई परिवर्तन दिखायी नहीं दिया। वह बड़े इतमीनान से बातें कर रहा था।

"वैसे तो सब ठीक है, लेकिन जब लड़कियों को घर पर बुलाओ तो मार्टीनी की अंगूरी शराब ले आया करो। बियर लड़कियाँ इसलिए पीना पसंद नहीं करती हैं कि इससे बार-बार बाथरूम जाना पड़ता है।"

वर्नी से बातें करने के बाद ख़ालिद को पता चला कि पिछली रात ख़ालिद का हर मोहरा उल्टा पड़ा था। लेकिन मार्गरेट ने कितने धीरज और सहनशीलता से ख़ालिद को झेला था ! मार्गरेट विदा होते समय तक संतुष्ट और प्रसन्न दिखायी दे रही थी।

लेकिन मार्गरेट उसके बाद ख़ालिद से मिलने कभी नहीं आयी। ख़ालिद का एकतरफ़ा इश्क लगभग छः महीने तक दम तोड़ता रहा। जब कभी अकेलापन उससे सहन न होता तो वह मार्गरेट को फ़ोन करता। लेकिन मार्गरेट की शामें ख़ालिद के लिए कभी खाली न होतीं।

दिन इसी तरह कटते रहे। फैक्टरी की नौकरी आदत बन चुकी थी। साल में केवल चार बैंक की छुट्टियाँ होती थीं और फैक्टरी के दूसरे मज-दूरों की तरह ख़ालिद को भी इन्हीं की प्रतीक्षा रहती। उसके बोलने के ढंग में भी कोकनी उच्चारण घुल-मिल गया था। अपने साथियों को वह भी 'मेट' कहने लगा था। 'थैंक यू' की जगह 'टा' काफ़ी था। और 'कप ऑफ़ टी' के लिए उसके मुँह से भी 'कपा टी' निकलने लगा था।

लंदन की दुकानें सजना शुरू हो गयी थीं। क्रिसमस में सिर्फ़ दो महीने बाकी रह गये थे। रीजेंट स्ट्रीट पर लाल-पीली रोशनी के वंदनवार सजा दिये गये थे। रोशनियों के वड़े-वड़े हार जड़ाऊ गहनों की तरह दमक रहे थे और लंदन के अख़बार, रेडियो और टेलीविज़न क्रिसमस की चर्चा कुछ इस तरह से दिन-रात कर रहे थे कि ख़ालिद अनायास ही क्रिसमस की तैयारी में लग गया था।

२

पहला क्रिसमस

बूढ़ी एलसी आम अंग्रेज़ों की तरह सीधी-सादी थी। उसका ख़याल था कि दुनिया में बस दो कौमें बसती हैं, जिनमें एक का रंग काला है, दूसरी का गोरा। उसके लिए इंडियन, रेड इंडियन और वेस्ट इंडियन में कोई अंतर नहीं था। वह इन सबको एक ही देश का रहने वाला समझती थी। एलसी का विचार था कि दुनिया का हर आदमी क्रिसमस मनाता है। इसी लिए एक दिन फैक्टरी में एलसी ने ख़ालिद से पूछा :

"ख़ालिद, तुम क्रिसमस कहाँ मनाओगे ?"

"यहीं लंदन में," ख़ालिद ने संक्षेप में उत्तर दिया।

"तुम्हारे माँ-बाप कहाँ हैं ?"

"यहाँ से हज़ारों मील दूर हिंदुस्तान में मेरा इंतज़ार कर रहे होंगे। मेरे लिए उन्होंने तोहफ़े खरीद कर रखे होंगे। और एलसी, जब क्रिसमस के दिन मैं लोगों को खुशियाँ मनाते देखूंगा तो मेरी आँखों में आँसू भर आयेंगे !" ख़ालिद ने जान-बूझ कर झूठ बोला।

एलसी का चेहरा उतर गया, मानो उसने यही सवाल पूछ कर ग़लती की हो। वह ख़ालिद के और पास आ गयी।

"तुम्हारी बातें सुन कर दुःख हुआ। क्या लंदन में तुम्हारा कोई नहीं है ?"

ख़ालिद की आवाज़ से ग़म टपक रहा था। "नहीं, यहाँ मैं किसी को नहीं जानता। मैंने सोचा है कि क्रिसमस के दिन मैं अपने कमरे के दरवाज़े बंद करके सारा दिन रेडियो सुनूंगा और शाम को टेलीविजन से जी बहलाऊँगा।"

एलसी का ग़म और बढ़ गया। वह कहने लगी, "ख़ालिद, तुम बिल्कुल अकेले हो, कैसे दुःख की बात है! लेकिन घबराना नहीं, क्राइस्ट तुम्हारे साथ है।"

"लेकिन क्राइस्ट को जब सूली पर चढ़ाया गया था, तो उसका किसी ने साथ नहीं दिया था।"

एलसी ख़ालिद की बात को समझ न सकी। वह सचमुच उदास थी। ख़ालिद से अलग होकर वह सीधे मिसेज़ वाटसन के पास चली गयी और थोड़ी ही देर में यह किस्सा सारी फैक्टरी में फैल गया। मज़दूर मर्दों और मज़दूर औरतों ने आकर हमदर्दी ज़ाहिर की। वे सब उसके ग़म में शरीक थे। लेकिन उनमें से कोई भी ऐसा न निकला जो ख़ालिद से कहता, 'तुम मेरे यहाँ क्यों नहीं आ जाते? मेरे दरवाज़े तुम्हारे लिए खुले हैं। हम साथ मिल कर-नाचेंगे, हम साथ मिल कर गायेंगे और हम साथ मिल कर एक-दूसरे का दुःख-सुख बाँट लेंगे।'

ख़ालिद सोचने लगा, ईसा मसीह भी सूली पर ऐसे ही अकेले रहे होंगे। उनसे भी सारी क़ौम ने ऐसी ही हमदर्दी की होगी।

क्रिसमस पूरी धूम-धाम से आ गया। उसने कुछ कार्ड खरीद कर अपने साथियों को पोस्ट कर दिये। एक ख़ास कार्ड ख़रीद कर मार्गरेट को भेजा। हालाँकि ख़ालिद ने उस पर बहुत साफ़ अक्षरों में अपना नाम लिख दिया था। पर उसका कोई जवाब नहीं आया।

क्रिसमस की डाक में उसके नाम बस एक खत था और वह भी ब्रिटिश कौंसिल का। उस ख़त में लिखा था:

"मिस्टर और मिसेज़ सुलिवन क्रिसमस के दूसरे दिन आपको अपने यहाँ चाय पर निमंत्रित करना चाहते हैं। यदि आप उनका निमंत्रण स्वीकार करें तो यह उनके लिए गौरव की बात होगी।"

ख़ालिद ने निमंत्रण-पत्र मेज़ पर रख दिया। सामने वाली खिड़की में क्रिसमस ट्री के कुमकुमे जगमगा रहे थे। वह उन्हें बड़ी देर तक देखता रहा लेकिन उसका मन कहीं और था।

'क्रिसमस से मेरा वास्ता? लेकिन इससे क्या हुआ, त्योहार तो बहर-

हाल त्योहार होता है और ऐसे खुशी के मौक़े पर अकेले रहना मुझे पसंद नहीं है।'

मिसेज़ सुलिवन के यहाँ वह क्यों जाये ? क्या वह बीमार है जिसे इलाज के लिए मिसेज़ सुलिवन के अस्पताल भेजा जा रहा है ? मैं वहाँ क्यों जाऊँ—सात बूढ़े-बुढ़ियाँ 'थैंक यू' वाली मुस्कराहट लिये मेरा स्वागत करेंगी। मुझे देख कर उन्हें बेहद खुशी होगी। वे मौसम के बारे में अपनी राय जाहिर करेंगी और फिर कहेंगी' 'हम हर साल अपने यहाँ समुद्र-पार के विद्यार्थियों को बुलाते हैं।' इस पर मैं कहूँगा, 'हम हर साल ज़कात निकालते हैं।'

फिर वे जकात के बारे में सवाल करेंगे। मैं उनको कैसे समझाऊँगा ?

फिर उसने सोचा कि अगर वहाँ कोई ऐसा बूढ़ा अंग्रेज़ मिल गया जो हिंदुस्तान में बड़ा साहब बन कर ज़िंदगी गुज़ार चुका होगा तो फिर सच-मुच मुसीबत हो जायेगी। ख़ालिद को उन अंग्रेज़ों से बेहद नफ़रत थी जो टूटी-फूटी हिंदुस्तानी बोल लेते थे।

'छोड़ो इस मुसीबत को। तुम्हें आख़िर वहाँ जाने की ज़रूरत ही क्या है। ब्रिटिश कौंसिल का ख़त निमंत्रण-पत्र है, कोई डाक्टर का नुसख़ा तो है नहीं।'

और इस फ़ैसले के बाद उसने जेब से अपनी डायरी निकाली, बी० बी० सी० का फ़ोन नंबर मिलाया। आनन्द वहाँ मौजूद था।

"हम तो समझे थे कि तुम अल्लाह को प्यारे हो चुके हो। इतने दिनों से गुम हो। और लंदन में जब कोई दोस्त लापता हो जाये तो समझ लो कि या तो उसके दिन ईद और रातें शबे-बरात हैं या फिर वह हिंदुस्तान वापस चला गया है। और वापसी की ख़बर दोस्तों को इसलिए नहीं दी जाती है कि वे ढेर सारा सामान लाद देते हैं। अच्छा, यह तो बताओ क्रिस-मस कैसा गुज़र रहा है ?"

"क्राइस्ट बना हुआ हूँ," ख़ालिद ने जवाब दिया।

"सूली मैं भिजवा दूँ या इंतज़ाम कर लिया है ?"

"सच बताओ आनंद, खुशी के दिन ग़मों की परछाइयाँ इतनी गहरी क्यों हो जाती हैं ?"

"आम आदमियों का साथ दो। खुशियाँ मनाओ। क्रिसमस ट्री पर कुमकुमे जला दो। क्रिसमस के बहाने लड़कियों से गले मिलो। बस यही तरीक़े हैं। तुमने तो आम लोगों को छोड़ कर बड़े लोगों का सहारा ले लिया है।"

"कौन से बड़े लोग ?"

"क्राइस्ट और कौन !...आम लोगों का साथ दो, नहीं तो क्राइस्ट तो तुम अपने आप बन जाओगे।"

"इस वक्त तुम क्या कर रहे हो ?"

"मैं क्रिसमस मना रहा हूँ, और आज के दिन कहीं जाने के लिए इजाज़त की ज़रूरत नहीं होती। चले आओ।"

ख़ालिद ने फ़ोन रख दिया। अपना कोट उठाया। स्विस काटेज का अंडरग्राउंड स्टेशन पाँच मिनट की दूरी पर था। स्लाट मशीन में एक शिलिंग डाल कर जब उसने टिकट निकाला तो गाड़ी के आने की आवाज़ सारे स्टेशन पर गूंज रही थी और हवा की तेज़ी का वह आलम था कि लड़कियों ने अपने स्कर्ट संभाल लिये थे। मर्दों के हाथ उनके पेट पर थे और दूर एक आदमी अपने अख़बार के पीछे भाग रहा था। प्लेटफ़ार्म के पश्चिमी कोने पर खड़ी हुई एक अधेड़ औरत न जाने खुश थी या शर्मिंदा, उसका चेहरा सुर्ख़ हो गया था और पास खड़ा हुआ अजनबी सांत्वना के भाव से उससे कह रहा था, "कोई बात नहीं, हम लोगों की छतरियाँ भी बिल्कुल इसी तरह उलट जाती हैं।" लेकिन वह अजनबी दरअसल सोच रहा था कि यह औरत लाल रंग का अंडरवियर क्यों पहनती है।

बी० बी० सी० क्लब तक पहुँचने में उसे लगभग आधा घंटा लगा। क्लब में दरवाज़े से लेकर काउंटर तक लाल क़ालीन बिछा हुआ था। दीवार के क़ाग़ज पर गुलाबी रंग के बूटे रंगों में संतुलन और सामंजस्य पैदा कर रहे थे। सुरमई रंग की कुर्सियों पर काले सूट पहने हुए लोग स्मार्ट लग रहे थे। उनकी मुस्तैदी और होशमंदी से अंदाज़ा होता था कि क्लब अभी-अभी खुला है। काउंटर के दायें हाथ की तरफ़ दीवार के काग़ज़ पर बड़े-बड़े शेरों का डिज़ाइन बना हुआ था और शेरों की इस पृष्ठभूमि

में आनन्द अहिंसा का पुजारी जैसा बैठा हुआ बड़ा अजीब-सा लग रहा था। ख़ालिद को देख कर आनन्द मुस्कराया।

हाथ मिला कर उसने ख़ालिद का स्वागत किया। एक लंबा कश खींच कर पाइप को छत की तरफ़ उठा कर फ़र्श की तरफ़ एक जँचा-तुला झटका दिया और थूक की मिली हुई एक लम्बी-सी लाइन क़ालीन पर उभर कर डूब गयी।

"क्यों मोसियो, क्या पियोगे ?"

"ज़हर के अलावा कुछ भी पिला दो।" ख़ालिद उदास था।

"इसी को कहते हैं—ख़त आया हाल मालूम हुआ। इतने परेशान हो तो ज़हर की जगह कुछ भी पिला दो की जगह तुम्हें कहना चाहिए था—ज़हर पिला दो कमबख्तो, ज़हर पिला दो !"

"यह बात नहीं है, आनन्द ! ज़हर तो ख़ुशनसीब को मिलता है। हमारे ऐसे नसीब कहाँ ?"

"नहीं, हम तो आज तुम्हें खुशनसीब बना कर रहेंगे। आनन्द ने मेज़ पर से सफ़ेद लेबल की वर्थिगटन की बोतल उठा कर दिखायी और कहने लगा, "उसमें यह नीचे जो एक इंच बियर की तह छोड़ दी जाती है, उसे देखो।" आनन्द ने बोतल को ज़रा-सा झटका दिया और बोतल में बची हुई बियर कीचड़ की तरह गदली हो गयी।

वह कहने लगा, "यह 'सेडिमेंट' कहलाते हैं, जो किडनी के लिए ज़हर है। इसलिए इसको बोतल में छोड़ दिया जाता है। मोसियो, इस बियर को उँडेलना अपनी जगह खुद एक आर्ट है। क्योंकि गिलास में 'सेडिमेंट' का एक क़तरा भी नहीं आना चाहिए।"

ख़ालिद आनन्द की बातों को सुनता रहा क्योंकि वह शराब के शिष्टाचार और उनकी क़िस्मों से बहुत अपरिचित नहीं था। लेकिन जब आनन्द ने गिलास उसके सामने लाकर रखा तो उसे वर्थिगटन के दो घूंट में 'किक' महसूस हुई।

आनन्द दूसरे विश्वयुद्ध के दिनों में लंदन पहुँचा था। इतना समय लंदन में बिताने के बाद अंग्रेज़ियत उसके मिज़ाज़ में कूट-कूट कर भर चुकी थी। तीन पीस का सूट पहनना, कलफ़दार कालर लगाना, 'गार्डियन' और

'न्यू स्टेट्समैन' पढ़ना उसकी ज़िंदगी का मामूल बन चुका था। यों तो उसके अनगिनत दोस्त थे, पर सबसे पक्का रिश्ता उसने वर्थिंगटन की सफेद लेबल की बोतल से जोड़ा था। उस बोतल में जाने क्या जादू था कि आनन्द का चेहरा खिल उठता था, वाणी में एक प्रवाह और विचारों में एक चमक पैदा हो जाती थी।

आनन्द ने इस शहर को संक्रमण-काल से गुज़रते हुए अपनी आँखों से देखा था। उन दिनों लंदन में हर चीज़ पर राशन था। शीशों के कारख़ाने में बंदूकें ढल रही थीं। 'पब' में अपने गिलास तसवीरें-जानां दरबग़ल की तरह साथ ले जाने होते थे। और चाकलेट तो लोग देखने को तरस गये थे।

...एक दिन मुझे एक बच्चे की सालगिरह पर जाना था और मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या तोहफ़े लेकर जाऊँ। मैंने अपनी लैंड-लेडी से मशविरा किया। वह कहने लगी कि तुमने अपने राशनकार्ड की चाकलेट तो ली नहीं है। वही ले जाओ। और साहब, जब वह चाकलेट का डिब्बा लेकर मैं सालगिरह में पहुँचा हूँ...।

आनन्द अभी यहीं तक पहुँचा था कि जैकब जेबों में हाथ डाले टहलता हुआ आ निकला और वह दूर ही से चिल्लाया, "यह आपको चाकलेट की कहानी सुना रहे होंगे। और अगर सचमुच सुना रहे हैं तो इसका मतलब है कि आनन्द साहब चार गिलास उतार चुके हैं।"

आनन्द शर्मिंदा होकर मुस्कराया और बात का रुख़ इस तरह बदल दिया जैसे क़िस्सा पूरा हो चुका हो।

जैकब ने बीस साल तक बाँद्रे की एक खोली में रह कर अपना रिश्ता लंदन के लोगों से बाँधे रखा था लेकिन लंदन पहुँच कर उस पर यह रहस्य खुला कि उसका वतन हिन्दुस्तान है। उसके घर के लोग बाँद्रे में हैं और वह ब्रिटेन में दूसरे दर्जे के नागरिक के अलावा कुछ भी नहीं है। उसके दिमाग़ में बाँद्रे की मिट्टी इस तरह जगमगा उठती थी जैसे वह उसकी अपनी ज़मीन, अपनी धरती, अपनी मिट्टी हो।

जैकब ने घड़ी देखी फिर कहने लगा, "साढ़े-छः बज कर एक मिनट हो

चुका है और करीम साहब एक मिनट लेट हो चुके हैं। कहीं बीमार तो नहीं हो गये ?"

जैकब की बात अभी पूरी भी नहीं होने पायी थी कि करीम साहब सिपसन का जैकेट पहने और मुँह में डनहिल का मोटा-सा पाइप दबाये, चमड़े का एक भारी ब्रीफ़-केस हाथ में लिये अंदर घुसे। इधर-उधर बस यों ही छिछलती हुई नज़र डाली और विक्टोरियन ढंग से सलाम लेते हुए सीधे काउंटर पर पहुँच गये। वहाँ एक-दो लोगों को उन्होंने मौसम की ताज़ा रिपोर्ट दी ही थी कि बार-मैन ने वर्थिंगटन की सफेद लेबल की बोतल एक लंबे गिलास में उँडेल कर उनके सामने बढ़ा दी।

पिछले पंद्रह साल से करीम साहब रोज़ इसी वक्त क्लब में आते हैं। मौसम को बड़े प्यार से फ़ारसी में गाली देते हैं, ऐसे ही सलाम लेते हैं, यही शराब पीते हैं, डनहिल का पाइप इस्तेमाल करते हैं और पहला गिलास खरीदने के बाद सारे क्लब का निरीक्षण करते हुए सोचते हैं कि किस ग्रुप में शामिल हुआ जाये। लेकिन अगर जैकब और आनन्द वहाँ मौजूद हों तो किसी और को चुनने का सवाल पैदा नहीं होता। साढ़े-छः बजे से सात बज कर पच्चीस मिनट तक वह बियर पीते हैं। क्लब से स्टेशन का रास्ता पाँच मिनट का है। साढ़े-सात बजे उन्हें घर जाने के लिए ट्रेन मिल जाती है।

इन नपे-तुले सिद्धान्तों को वह बरसों से बड़े सलीक़े के साथ निभा रहे हैं। और महफ़िल से उठने का सलीक़ा करीम साहब को इतना आ गया है कि उनके क्लब से जाने के कोई आधे घंटे के बाद लोगों को उनके मौजूद न होने का पता चलता है।

करीम साहब ने अपना गिलास उठाया और बियर की पाली-पोसी तोंद को बड़ी सावधानी से संभाले गिरजाघर के पवित्र शमादान की तरह गिलास पकड़े हुए आगे बढ़े और आनन्द की मेज़ पर आ बैठे, फिर बड़े प्यार से गाली देकर कहने लगे, "बच्चू, जब हम तुम्हारी उमर के थे तो क्रिस-मिस के दिन 'मिसिल-टो' हाथ में लेकर घूमा करते थे।"

जैकब बोला, "और अब मिसिल-टो के नीचे खड़े रहते हैं।"

करीम साहब ने एक ज़ोरदार क़हक़हा लगाया, "बच्चू, तुम बहुत बदमाश हो !"

"करीम साहब, आपके ज़माने में लड़की से बुरा काम करने के लिए उससे शादी करनी पड़ती थी और अब ज़माना इतना आगे बढ़ चुका है कि वही सब काम शादी के बग़ैर हो जाते हैं।"

आनन्द ख़ालिद को सम्बोधित करके बोला, "यह 'मिसिल-टो' क्या चीज़ है मालूम है ?"

"नहीं।"

"उफ़्फ़ोह, गज़ब कर दिया ! जाने कितने मौक़े तुमने गँवा दिये ? वह सामने दरवाज़े की ओर देखो। बीच में जो हरी-हरी पत्तियाँ लटक रही हैं यही 'मिसिल-टो' है। और इसके नीचे जो भी खड़ा हो आप लपक कर उसका मुँह चूम सकते हैं।"

करीम साहब के जाने के बाद आनंद ने अपनी दोस्त जेन के क़िस्से शुरू कर दिये, जिसे ख़ालिद बड़े ध्यान से सुनता रहा और सोचता रहा। कि इन लोगों ने लंदन को कितना डूब कर देखा है ! लेकिन जब बैठे-बैठे उसने अगली-पिछली बातें निथार कर उनका सत्त निकालने की कोशिश की तो शराब और औरत के सिवा उसे कुछ न मिला। वह सोचने लगा कि लंदन में बसने वाले हिंदुस्तानियों की ज़िंदगी में दिन-भर की मेहनत के बाद बस यही दो बहलावे हैं, यही दो विषय हैं—शराब और औरत !

३

अधूरे स्वेटर

उदासियों में डूबे हुए क़हक़हों की मंज़िल काफ़ी दूर निकली। दर्जनों गिलास वर्थिंगटन की बियर पीने और लगातार चार घंटे बिताने के बाद आवाज़ें तेज़ हो गयी थीं और होश-हवास ग़ायब हो रहे थे। आनन्द की जबान से शब्द लुढ़कते हुए बाहर आ रहे थे, जो कभी निशाने पर बैठते और कभी निशाने से बहुत दूर चले जाते। और जब ये मतवाले तर्कों से अधिक आवाज़ के नीचे दबने लगे तो जैकब को एकदम ध्यान आया कि उसकी बीवी इंतज़ार कर रही होगी। वह उठा ही था कि सामने से थकी-हारी जेन आती हुई दिखायी दी।

आनन्द को उस वक्त जेन की ही ज़रूरत थी। वह अपनी बहस भूल कर बड़े ज़ोर से 'हैलो' कहते हुए उठा और जेन की कमर में हाथ डाल कर सीधा काउंटर पर चला गया।

"क्या पियोगी, डार्लिंग ?"

"शैंडी—बड़ी सर्दी है, आनन्द !" जेन ने सूचना दी।

"पहले क्यों न एक ब्रांडी पी लो—सर्दी के लिए अच्छी चीज़ है।"

"नहीं, थैंक यू !"

जेन ख़ालिद को देख कर मुस्करायी। उसे ताज्जुब हो रहा था कि खालिद आज यहाँ कैसे आ गया !

"मैं यहाँ क्रिसमस मनाने आया हूँ।"

जेन बड़ी ज़ोर से हँसी, "तब तो तुम्हें लंदन के क्रिसमस का कोई अंदाज़ा न हो सकेगा।"

"क्या करता ? यही एक दरवाज़ा खुला था।"

जेन चुप हो गयी। ख़ालिद जेन से पहले मिल चुका था। जेन शिक्षा और आयु को उस सीमा पर पहुँच चुकी है जहाँ शादी का नाजुक सवाल भारी-भारी विद्वता के प्रमाणपत्रों के नीचे दब जाता है। दिमाग़ और ज़बान पर बड़े-बड़े आदर्शों का प्रभुत्व हो जाता है और फिर किसी घने छायादार पेड़ के नीचे बैठ जाने को जी चाहने लगता है।

जेन के चेहरे पर ग़मों की परछाइयाँ थीं। वह सोचने लगा—जेन किसी ज़माने में बहुत खूबसूरत रही होगी।

वह गिलास संभाल कर अभी इतमीनान से बैठने भी न पायी थी कि क्लब बंद होने की घंटी बजी और सबको जैसे एकदम होश आ गया। जैकब दरवाज़े की तरफ़ बढ़ते-बढ़ते लौट पड़ा।

"क्यों, भाइयो, वन फ़ॉर दी रोड (one for the road) हो जाये ?"

सबने चिल्ला कर समर्थन किया और छलकते हुए गिलासों की एक और ट्रे मतवालों के हाथ लग गयी।

दस मिनट के बाद क्लब की रोशनियाँ बुझ गयीं। किनारे के सोफ़े पर एक 'बास' अपनी सेक्रेटरी से डिक्टेशन ले रहा था। बार-मैन काउंटर से आकर खाली गिलास समेट रहा था। और लोग हँसते हुए बातें करते लड़कियों की कमर में हाथ डाले बाहर निकल रहे थे।

बाहर कुहरा था। अँधेरा और ठंडक थी। ख़ालिद ने मुड़ कर देखा तो सब साथी तितर-बितर हो चुके थे। उसे सिर्फ़ आनन्द और जेन टैक्सियों की तरफ़ लपकते हुए दिखायी दिये। जेन कहने लगी :

"ख़ालिद तुम हमारे साथ चल कर खाना खाओ। थोड़ी बियर भी है।" ख़ालिद उस हद तक शराब पी चुका था जहाँ कम पीने का उसूल ग़ोते खा जाता है।

टैक्सी में आनन्द और ख़ालिद के बीच जेन सैंडविच बनी हुई कुछ सोच रही थी। उसकी नज़रें टैक्सी के वाइपर से चिपक कर रह गयी थीं जो बड़ी तेज़ी से ऊपर-नीचे हो रहा था। जैसे ही किसी ख़याल का सिरा पकड़ती वाइपर उसे रगड़ता हुआ स्लेट को साफ़ करके निकल जाता।

ख़ालिद ने एकदम उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया।

"क्या सोच रही हो, जेन ?"

"सोच रही थी, ड्राइवर के सामने शीशे पर अगर वाइपर न लगा होता तो ऐसे मौसम में गाड़ी चल नहीं सकती थी। मौसम अच्छा हो तो यह कितनी बेजान तुच्छ-सी चीज़ होती है लेकिन ज़रूरत पड़ने पर यही वाइपर सब-कुछ हो जाता है।"

"जेन, कोई अच्छी बात सोचो। मेरा ख़याल है तुम्हें शेंडी के एक और गिलास की ज़रूरत है।"

"मैं ठीक कह रही हूँ। मौसम अच्छा हो तो यह कितनी बेजान बेकार-सी चीज़ हो जाती है ! ख़ालिद मुझे ऐसा लगता है कि मैं एक वाइ-पर हूँ और आनन्द एक ड्राइवर है। दोनों साथ-साथ रहते हैं।"

आनन्द जेन के मूड से भलीभाँति परिचित था और उसे यह भी मालूम था कि जेन इस समय अपने अतीत की ओर देख रही है। वह एकदम बोल उठा, "जेन, अब तुम फिर बहक रही हो।"

"मैं बिलकुल ठीक कह रही हूँ। ज़रूरत पड़ने पर यह वाइपर सब-कुछ हो जाता है। शराब पीकर तुम्हें मेरी ज़रूरत, मेरी कमी, मेरी तलब महसूस होती है।"

आनन्द की आवाज़ ऊँची थी, "नहीं, बिलकुल नहीं होती। मैंने आज तक तुम्हें शराब पीने के बाद कभी टेलीफ़ोन नहीं किया। हमेशा तुम खुद आ टपकती हो।"

जेन की इस समय वही हालत थी जैसे कोई बिल्ली किसी फंदे में फँस कर बुझी-बुझी निगाहों से रहम के लिए फ़रियाद कर रही हो। उसकी नीली आँखें आँसुओं से लबालब भर गयीं। उसने आनंद के कंधे पर मुँह रख दिया, फिर संभल कर बैठ गयी और बास्केट में से बच्चे का अधबुना स्वेटर निकाल कर फंदे डालने लगी।

आनन्द जेन की तरफ़ देख कर मुस्कराया, फिर कहने लगा, "हैप्पी क्रिसमस !"

जेन के सारे दुःख जैसे आनन्द के इन दो शब्दों ने धो डाले। वह आनन्द के और पास खिसक आयी। ख़ालिद ने बात टालने के लिए बात छेड़ी।

"बड़ा ख़ूबसूरत स्वेटर है ! किसके लिए बुन रही हो ?"

"मेरी एक बहन है, उसके बच्चे के लिए। तुम्हें पसंद है ?"

बात अभी यहीं तक पहुँची थी कि आनन्द ने टैक्सी रुकवायी। "बस, यही घर है।"

पहली मंज़िल का अँधेरा कमरा आनन्द का है। आनन्द में अब सिर्फ़ इंटेलेक्चुअल बनने की इनर्जी बाक़ी रह गयी है। ज़िम्मेदारियों से दूर भाग कर उसने सिर्फ़ किताबों और दोस्तों से मुहब्बत की है। दोस्तों के दिलों में मुहब्बत का बीज बोया है और किताबों के पन्नों पर जगह-जगह पेंसिल के लाल निशान छोड़े हैं। लाल निशान आम तौर पर वह लकीरें हैं जहाँ आनंद और लेखक का सोचने का ढंग एक हो गया है।

कमरे में चारों ओर किताबें बिखरी पड़ी हैं। बियर और दूध की बीसियों खाली बोतलें हैं। बीच की मेज़ पर चाय की जूठी प्यालियाँ, टोस्टर, सिगरेट के खाली पैकेट, टेप रेकार्डर, टुथब्रश और दाढ़ी बनाने का सामान रखा है। कुर्सी पर पतलून, सोफ़े पर टाइयाँ और मेज़ के नीचे स्लीपिंग सूट है।

जेन ने जल्दी-जल्दी कुर्सियाँ खाली कीं जैसे यह उसका अपना घर हो। मेज़ की ख़ाली बोतलों में से तीन-चार ख़ाली बोतलें अलग कीं और गिलासों को आगे बढ़ा कर खाने का सामान देखने लगी।

आनन्द ने बड़ी सावधानी से गिलास भरे और जेन की तरफ़ गिलास बढ़ाते हुए 'चियर्ज़' कह कर एक घूँट लिया, फिर कहने लगा, "मेरे पास कीमा-स्पैगहैटी के कई टीन रखे हैं। तुम्हें पसंद हो तो हिन्दुस्तानी ढंग से पकाया जाये ?"

ख़ालिद ने पूछा, "कितनी देर लगेगी ? साढ़े ग्यारह पहले ही बज चुके हैं।"

आनंद पूरा ब्योरा बताने लगा, "मुश्किल से सात मिनट लगेंगे। प्याज़ भूना, दो चमचे करी पाउडर, एक चमचा लाल मिर्च और थोड़ा पानी डाल कर एक उबाल दे दिया। इसके बाद स्पैगहैटी के डिब्बे खोल कर उसमें उलट दिये। बल्कि मेरा ख़याल है सिर्फ़ पाँच मिनट लगेंगे।"

जेन कहने लगी, "खाने की क्या जल्दी है ? आनंद, तुम ख़ालिद को

अपनी वह नयी कविता सुनाओ जो तुमने मुझ पर लिखी है।"

ख़ालिद एकदम चौंका। "आनंद, तुमने शायरी कब से शुरू की ?"

"पिछले दस साल से मैं शायरी कर रहा हूँ। बल्कि मेरा ख़याल है जिस दिन से जेन से मेरी मुलाक़ात हुई है।"

और अंग्रेज़ी बोलते-बोलते उसने चुपके-से एक वाक्य हिन्दुस्तानी में कह दिया, "ग़ालिब की ग़ज़ल अपनी कह कर सुनायी थी।"

"क्या कहा तुमने, आनंद ?" जेन से सवाल किया।

"कुछ नहीं, डार्लिंग ! ज़बान की कुछ ऐसी बारीकियाँ होती हैं जिनका अनुवाद नहीं किया जा सकता है। मैंने तुम्हारी वाली कविता की एक लाइन इनको सुना दी थी।"

जेन के चेहरे पर शेंडी की लाली को दबाती हुई खुशी की एक लहर दौड़ गयी।

बोतलों की शराब दिमाग़ पर कसी हुई लगामों को लेकर ग़ायब हो चुकी थी।

आनंद खाना पकाने की कोशिश में लगा हुआ था। और वह खूबसूरत उदास लड़की ख़ालिद के पास बैठी हुई लड़खड़ाती ज़बान से पूछ रही थी, "ख़ालिद, क़सम खाओ कि आनंद ने यह कविता मेरे ऊपर कही है।"

"तुम्हें इसमें शक क्यों है ? जेन, तुम्हारी आँखों पर, तुम्हारे खूबसूरत तराशे हुए होंठों पर, तुम्हारी इस सुडौल नाक पर अलग-अलग नज्में कही जा सकती हैं।" ख़ालिद चढ़ते नशे में बहक रहा था।

"या खुदा, ये पूरब के लोग ! आज से छः साल पहले बिलकुल यही बात एक पाकिस्तानी लड़के ने कही थी। यही फंदे थे जिनमें एक अनजान लड़की उलझ गयी थी।"

जेन की आवाज़ में यादों के दीये लौ देने लगे थे। "और मुझे दो साल के बाद मालूम हुआ था कि वह लड़का न सिर्फ़ शादीशुदा है बल्कि उसकी हिन्दुस्तानी बीवी यहीं लंदन में है। उस रात शायद पहली बार मैं फूट-फूट कर रोयी थी। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे ज़िन्दगी के सारे दरवाज़े

मुझ पर बन्द हो गये हैं। और उसी मूड में मेरी मुलाक़ात आनंद से हुई थी।"

"अच्छा, तो आनंद तुमसे इस तरह मिला था !"

"आनंद ने अपने ब्रीफ़केस से बहुत-सी स्लीपिंग पिल्ज़ निकाल कर मुझे दीं और कहने लगा कि अगर तुम समझती हो कि अब ज़िन्दगी में कुछ नहीं रहा है तो ये गोलियाँ तुम्हारा साथ देंगी और अगर अभी ज़िंदगी से बिलकुल निराश नहीं हुई हो तो आओ मेरे साथ। चलो नाचेंगे।"

"और फिर तुम नाचने पर तैयार हो गयी थीं ?"

"नहीं, मैं ज़िन्दा रहने पर तैयार हो गयी थी।"

जेन की इस मनोदशा ने कमरे का पूरा वातावरण बदल दिया था। ख़ालिद चुप था, मानो अब उस विषय को बन्द कर देना चाहता हो। आनंद खुद अपनी यादों के मज़ार में दफ़्न था। उसकी ज़िन्दगी में अब किसी जेन के लिए कोई जगह नहीं थी। वह परिपक्वता की उस अवस्था में था जहाँ दूसरों की हर बात पूरी तरह मानसिक पृष्ठभूमि में सुनायी देती है। और बुरा मानने या शिकवे-शिकायत करने का सिलसिला हमेशा के लिए बन्द हो जाता है। वह चुपचाप आगे बढ़ा और विचारों की दिशा बदलने के लिए मेज़ पर प्लेटें सजाने लगा।

जेन शराब पीकर हमेशा उदास हो जाती है। इसलिए अपनी प्लेट हटाने के लिए उसने हाथ बढ़ाया तो निशाना चूक गया। सन्नाटा चटख़ने की आवाज़ उभरी और चीनी के छोटे-छोटे टुकड़ों को फूल की पत्तियों की तरह बिखेरती हुई गुम हो गयी।

"तुम क्यों इतनी शराब पीती हो ?" आनंद गरजा।

"मैं इतनी शराब उस आपरेशन के बाद से पीती हूँ। कभी तुमने इस पर भी ग़ौर किया है, डार्लिंग ? ख़ालिद, इन्होंने मेरा आपरेशन करवा दिया है। अब मेरे बच्चा कभी नहीं होगा। मैं सदा बाँझ रहूँगी। मैं बाँझ रहूँगी !" और जेन यह कहते-कहते फूट-फूट कर रोने लगी।

ख़ालिद कुछ कहना चाहता था। मगर वह क्या कहे ? वह कैसे हमदर्दी करे ? नसीहत करना उसे सबसे ज्यादा आसान मालूम हुआ।

"जेन, सब बच्चे एक जैसे होते हैं। तुम अपनी बहन के बच्चे

से मुहब्बत कर सकती हो।"

जेन का एक खोखला क़हक़हा दुमदार सितारे की तरह टूटा। उसकी लम्बी-सी चमकदार दुम धीरे-धीरे अँधेरे में बुझती चली गयी। जेन की आवाज़ डूबती चली गयी।

ख़ालिद नशे में लड़खड़ाता हुआ अपना ओवरकोट ढूँढ़ने लगा। वार्ड-रोब खोला तो उसकी नज़रें एक कोने में जम कर रह गयीं। बच्चों के आठ-दस अधबुने स्वेटरों का एक ढेर था। उसने आनंद को ग़ौर से देखा।

"ये स्वेटर तुम जेन की बहन को भिजवा क्यों नहीं देते ?"

"शिः...!" आनंद गम्भीर होकर कानाफूसी के अंदाज़ में कहने लगा, "जेन के कोई बहन नहीं है।"

४

ख़ाली कमरे

लंदन का भी कोई मौसम हुआ ! गर्मियाँ हैं तो रात के ग्यारह बजे तक दिन की रोशनी फैली हुई है और सर्दियाँ हैं तो हफ्तों सूरज महाराज के दर्शन को आँखे तरस जायें। कुहरे और मैले बादलों के पीछे सूरज जाने कब निकलता और कब डूबता है। धरती से उनका जो भी सम्बन्ध हो, लंदन वालों से उनका केवल मानसिक सम्बन्ध है। यहाँ उजाले की राह देखते-देखते सोने वाले बहुत देर तक सोते रह जाते हैं।

ख़ालिद की आँख खुली तो उसने अपने को सूट पहने और जूते चढ़ाये बिस्तर पर पाया। घड़ी की दोनों सुइयाँ तीन की गिनती पर लटक रही थीं। वह घबरा कर उठ बैठा।

दूध की बोतल, 'गार्जियन' अख़बार और कुछ पत्र बाहर दरवाज़े पर पड़े उसकी राह देख रहे थे। और लैंडलेडी उन्हें देख कर सोच रही थी कि ख़ालिद शायद रात घर नहीं वापस आया, वरना दूध की बोतल दरवाज़े पर न होती। कमरे की सफ़ाई के लिए उसने दरवाज़ा खटखटाया तो ख़ालिद अन्दर था।

लैंडलेडी ने 'गुड मार्निंग डियर' को अपनी आदत के अनुसार संक्षिप्त करके दाग़ दिया, "गुमोन डिया !"

"गुड आफ्टरनून, मिसेज़ टामस ! आज कैसी हैं आप ?"

"कैसा बेहूदा मौसम है !"

"मुझे ऐसे मौसम से नफ़रत है। मिसेज़ टामस, यह मौसम मायूसी फैलाता है।...मेरा कोई फ़ोन तो नहीं आया था ?"

मिसेज़ टामस मुस्कराने लगीं। लेकिन आमतौर पर उनके मुस्कराने

की कोई वजह नहीं होती। इसलिए ख़ालिद ने मुस्कराहट का मतलब समझने की कोई कोशिश भी नहीं की। फिर वह ख़ुद ही कहने लगी—

"डिक का फ़ोन आया था। उसने कहा कि जैसे ही तुम्हें फ़ुरसत मिले उसे फ़ोन कर लो।"

"आपको बड़ी ज़हमत होती है मेरी वजह से।"

"ज़हमत की क्या बात है? वैसे एक बात और है—यह ख़त मैं तुमको देना चाहती थी।"

ख़ालिद ने बिना पते का ख़त खोला। पढ़ते-पढ़ते उसका रंग उतरता गया। नीचे दस्तख़त मिसेज़ टामस के थे।

"लेकिन, मिसेज़ टामस, मैं इतनी जल्दी कैसे छोड़ सकता हूँ?"

"तुम्हारे पास एक हफ्ता है। मैं मजबूर हूँ, ख़ालिद! मैं चाहती नहीं थी लेकिन तुम्हारे पड़ोसी कई बार शिकायत कर चुके हैं।"

"एक बार और आख़िरी बार मौक़ा दीजिये। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि अब मैं इन तमाम छोटी-छोटी बातों को बड़े अहम मसलों की तरह अहमियत दूंगा।"

"इससे पहले कई बार हम लोग यह बात कर चुके हैं। कितनी बार मैं तुमसे कह चुकी हूँ कि तुम्हारे पड़ोसियों को इस बात पर एतराज़ है कि तुम पतलून की जगह पाजामा पहन कर कमरे से बाहर निकलते हो और गाऊन पहनने का कष्ट नहीं करते। हमेशा दरवाज़ा खोल कर रेडियो सुनते हो। हमेशा ज़ीने पर ज़ोर-ज़ोर से बातें करते हो। और हमेशा हम लोग इसी तरह बातें करते हैं।"

"मिसेज़ टामस, बस अब सब नसीहतें मैंने याद कर ली हैं। इनको लिख कर अब मैं अपने कमरे में टाँग दूंगा ताकि आपको दुबारा न याद दिलाना पड़े।"

"तुम्हें इस घर में रखने का मतलब यह होगा कि मेरे तीन किराये-दार कमरे ख़ाली करके चले जायेंगे। मैं समझती हूँ कि ख़ालिद इस नोटिस के अलावा मेरे पास अब कोई दूसरा रास्ता नहीं है।" लैंडलेडी यह कहकर कुछ तेज़ी से अपने कमरे की ओर चली गयी।

ख़ालिद के पास भी सिवाय चुप रह जाने के कोई चारा नहीं था। लेकिन आज उसे पहली बार अंग्रेज़ी कल्चर का अंदाज़ा हुआ। आज तक उसने कमरे से बाहर निकलते समय स्लीपिंग-सूट पर गाऊन पहनने को इतनी गंभीरता से नहीं देखा था। वह अगले हफ्ते तक कोई दूसरा कमरा ढूंढ़ लेगा। इसका उसे पूरा भरोसा था।

अब तो डिक को टेलीफ़ोन करना और ज़रूरी हो गया था। उसने लपक कर फ़ोन उठाया। चार पेनी डाल कर नंबर मिलाया तो टेलीफ़ोन पर डिक की आवाज़ सुनायी दी।

"हेलो डिक,...तुमने फ़ोन किया था ?"

"हाँ, तुम्हें एक दावत देनी थी।"

"लेकिन डिक मैं सिर्फ़ ऐसी दावत में जा सकता हूँ जहाँ अपना बोरिया-बिस्तर साथ ले जा सकूँ। मुझे मिसेज़ टामस ने नोटिस दे दिया है क्योंकि मैं स्लीपिंग सूट पर गाऊन नहीं पहनता हूँ और कुल मिला कर बद-तमीज़ आदमी हूँ।"

"इसमें तो कोई शुबहा नहीं, ख़ालिद ! लेकिन मैं तुमसे ज्यादा बद-तमीज़ सफेद चमड़ी वालों से मिल चुका हूँ। वैसे तुम फ़िक्र न करो, मैं तुम्हारे लिए जगह का इंतज़ाम कर दूँगा। लैंडलेडी ने कितने दिन का नोटिस दिया है ?".

"मैं अपने घर के सभ्य लोगों को सात दिन और परेशान कर सकता हूँ।"

"सात दिन में तो ऊपरवाले ने सारी दुनिया बना दी थी।"

"दुनिया बनाना इतना मुश्किल काम नहीं था जितना एक काले आदमी के लिए कमरा तलाश करना है।"

"तुम ठीक कहते हो। परेशान न हो, मैं मौजूद हूँ। मैंने तुम्हें फ़ोन इसलिए किया था कि 'मदर्स डे' आ रहा है। मैं चाहता हूँ कि मेरे और बिल के साथ तुम भी ममी से मिलने चलो। वह तुमसे मिल कर बहुत खुश होंगी। तुम्हें भी तो अपनी ममी याद आती होंगी। मेरी ममी से मिलो, शायद तुम्हारे दर्द की दवा उनके पास हो।"

"मैं ज़रूर चलूंगा। लंदन आकर मुहब्बत को तरस गया हूँ। डिक,

मुझे किसी ऐसे सहारे की ज़रूरत है जो मेरी कमज़ोरियों की ओर ध्यान न देकर मुझसे मुहब्बत कर सके। खूबियों से मुहब्बत करने वाले तो सभी होते हैं।''

''तो फिर तय रहा। तुम मेरे साथ चलोगे।''

''हाँ, तय रहा लेकिन अगर तुम किसी वजह से न जा सको तो मुझे उनका पता दे देना।''

''तुम्हारे मिज़ाज में अंग्रेज़ी ह्यूमर कहाँ से आ गया है ?''

''दो सौ साल लगे हैं उसमें,'' ख़ालिद मन-ही-मन मुस्कराया। लेकिन उसकी मुस्कराहट टेलीफ़ोन पर व्यर्थ हो गयी।

''राजनीति हम लोगों ने मलिका की अंग्रेज़ी बोलने वालों के लिए छोड़ रखी है।'' दोनों ओर से ज़ोर का ठहाका लगा और टेलीफ़ोन खटाक से बंद हो गया।

कुहरे, बारिश और धुंध के दिन पेंशन की उम्मीद में जीने वाले क्लर्क के दिनों की तरह घिसटते हुए हाँफते हुए आगे बढ़ गये।

डिक की कार हैमस्टेंड हीथ से होती हुई कौन-कौन-सी गलियों का चक्कर काटती मज़विल हिल की एक चौड़ी सड़क पर रुक गयी। अठारह नंबर के मकान के सामने एक नयी स्पोर्टस-कार खड़ी थी। सामने दरवाज़े पर बिल खड़ा मुस्करा रहा था। मिसेज़ कुक की मुस्कराहट फैल कर कानों तक पहुँच गयी थी और उनके हाथ खुशी से काँप रहे थे।

पीछे के कमरे में एक बड़ी-सी तसवीर लटक रही थी जिसमें एक खूबसूरत रोबीला नौवजान दो प्यारे-प्यारे बच्चों को गोद में लिये खड़ा था। यह हैं मिस्टर कुक—डिक और बिल के स्वर्गीय पिता। साइप्रस में अंग्रेज़ी राज मिस्टर कुक को विरासत में मिला था और उसी सरज़मीन पर वह मलिका के अधिकारों की रक्षा करते हुए एक क्रांतिकारी की गोली से मारे गये थे।

ममी ने दिन-रात की मेहनत के बाद इन दोनों बच्चों को मुहब्बत करने, शादी करने और अलग घर बसाने के लायक़ बनाया है। अब इन बच्चों के अपने मकान हैं, अपनी कारें हैं जिनकी क़िस्तें अदा करने के लिए उन्हें ओवरटाइम करना पड़ता है। ओवरटाइम की थकान उतारने

के लिए इतवार के दिन आराम करना होता है और उन्हें अकसर ऐसा लगता है जैसे उनकी ज़िंदगी के असल दिन बहुत दिन पहले निकल चुके हैं और अब ज़िंदगी का सिर्फ़ एक मक़सद है : उधार की क़िस्तें अदा करना।

लेकिन फिर भी साल में दो दिन, क्रिसमस और मदर्स-डे पर ये बच्चे अपनी माँ को, जो इस दुनिया में बिल्कुल अकेली है, कभी नहीं भूलते। डिक और बिल दोनों पूरी ईमानदारी से अपने को आज्ञाकारी बेटा समझते हैं। ममी के लिए साल में दो दिन का जो कोटा बँधा हुआ है वह उससे संतुष्ट रहती हैं।

मिसेज़ कुक ख़ालिद से कुछ इस तरह घुल-मिल गयीं जैसे वह भी उनका अपना बेटा हो। डिक और बिल इतमीनान से बैठ कर बहस करने लगे कि ममी के घर आने के लिए सबसे छोटा रास्ता कौन-सा है। इस बहस में कोई पंद्रह मिनट लगे होंगे कि बिल ने बात कारों तक पहुँचा दी। फिर दोनों बड़ी देर तक अपनी-अपनी कारों की तकनीकी समस्याएँ एक-दूसरे को समझाते रहे। बीच-बीच में ममी कभी बिल का और कभी डिक का साथ देती रहीं। ख़ालिद सोचता रहा कि ममी बहस में हिस्सा लेने के लिए नहीं बल्कि अपनी उपस्थिति का आभास दिलाने के लिए बोल रही हैं।

ख़ालिद का विचार ग़लत था। ममी को अपने बच्चों से दिलचस्पी है। उनकी हर बात से दिलचस्पी है। उनकी हर समस्या से दिलचस्पी है चाहे वह मोटरकार के कार्बोरेटर की हो और चाहे टेलीविज़न के कार्यक्रम की।

फिर डिक ने अपने मकान की बात छेड़ दी, जिसे उसने खुद सजाया है। दीवारों पर सफ़ेदी की जगह वाल-पेपर चिपकाये हैं। वह बताने लगा कि काग़ज़ को सफ़ाई से चिपकाने के क्या गुण हैं। बिल ने बात काट कर फ़ुटबाल-पूल के जुए की चर्चा छेड़ दी। बातों के बीच जब थोड़ा-सा अंतराल आया तो ममी कहने लगीं, "मैंने पड़ोसी की डेरी से सामान ख़रीदना छोड़ दिया है क्योंकि वह अब सामान के साथ उपहार के कूपन नहीं देता है।"

ममी के पास एक-एक करके लगभग चार सौ कूपन जमा हो चुके हैं।

थोड़े और हो जायें तो फिर कमरे को गर्म रखने वाला हीटर मुफ्त मिल सकता है।

बे-सिर-पैर की एक से दूसरी बात निकलती रही। आख़िर डिक को ख़ालिद की समस्या याद आ गयी।

"ममी, तुम्हारी वह चर्च वाली दोस्त जो हैं, उनके घर में एक कमरा ख़ाली था। अगर वह अब भी ख़ाली हो तो ख़ालिद को दिलवा दो, यह घर से निकाल दिया गया है।"

"हाँ, कल ही तो वह कह रही थी। ख़ालिद बेटा, तुमको फ़ोन नंबर देती हूँ तुम बात कर लेना। या तुम वहाँ चले जाओ। बहुत अच्छी धर्मात्मा औरत है। चर्च वेलफ़ेयर सोसाइटी की सेक्रेटरी है।"

ख़ालिद फ़ोन नंबर लिख कर जेब में रखने जा रहा था कि डिक बोला, "ख़ालिद, फ़ोन यहीं से कर लो, इसी वक्त कर लो।"

"जल्दी क्या है, कर लेंगे।"

"तुम समझते नहीं। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो यहीं से इसी वक्त फ़ोन कर लेता।"

"छोड़ो, आज मदर्स-डे है। आज इस तरह के बेकार काम नहीं करने चाहिए। अच्छी-अच्छी बातें करो।"

"तुम बेकार बात कर रहे हो। चलो उठो, फ़ौरन फ़ोन करो।"

"ठीक है, बाद में कर लेगा।"

"लाओ, मैं फ़ोन मिलाये देता हूँ। कुछ काम होते हैं जिनमें देर करना खुदकशी के बराबर होता है।"

"मैं खुद ही मिलाये लेता हूँ।"

नंबर मिलाने के दो ही क्षण बाद दूसरी ओर से कोई वयस्क औरत बोल रही थी। ख़ालिद ने जब मालूम कर लिया कि लैंडलेडी ही बात कर रही है तो कहने लगा, "माफ़ कीजिये, मैं आपको तकलीफ़ दे रहा हूँ। मैंने सुना था कि आप कमरे किराये पर देती हैं।"

"जी हाँ, देती हूँ।"

"क्या-क्या सुविधाएँ हैं ?"

"हीटर है, चूल्हा है, वार्डरोब है, पानी का इंतज़ाम है, गीज़र है। सभी कुछ है।"

"तब तो सचमुच सभी कुछ है। क्या यह कमरा मुझे मिल सकता है?"

"क्या आप विद्यार्थी हैं?"

"मैं हिंदुस्तानी स्टूडेंट हूँ और काफ़ी दिनों से लंदन में हूँ।"

"बात दरअसल यह है कि एक साहब कमरे के लिए एडवांस देकर गये हैं। अगर वह नहीं आते तो मैं कमरा आपको दे दूँगी।"

"तो क्या इसका मतलब मैं यह समझूँ कि कमरा किराये पर दिया जा चुका है?"

"आप जो जी चाहे समझिये। मैंने सही पोज़ीशन आपको बता दी है।"

"शुक्रिया, आपका वक्त ख़राब करने का मुझे अफ़सोस है।"

सबके सब चुपचाप बड़े ध्यान से ख़ालिद की बातें सुन रहे थे। डिक ने एक ज़ोरदार क़हक़हा लगाया। तीनों ने मुड़ कर उसे देखा। और ममी कुछ गुस्से से बोलीं, "इसमें हँसने की कौन-सी बात थी?"

डिक हँसे चला जा रहा था और सब सवालिया निशान बने उसे देख रहे थे। आख़िर हँसी रोकते हुए डिक बोला, "ममो, एक शर्त लगाती हो?"

"कैसी शर्त?" बिल ने मसले में दिलचस्पी लेते हुए पूछा।

डिक ने व्यंग्य किया, "मुझे यक़ीन है कि यह कमरा अभी तक ख़ाली है। ख़ालिद इत्तफ़ाक़ से हिंदुस्तानी है और काले रंग के लिए, चाहे उसका शेड कुछ हल्का ही क्यों न हो, हर दरवाज़ा नहीं खुलता।"

"डिक बेटे, ऐसी बातें नहीं करते हैं। मैं इस औरत को अच्छी तरह जानती हूँ। बिना किसी को जाने हुए उस पर शक न किया करो। उसने अपना जीवन चर्च के लिए समर्पित कर दिया है। दो हज़ार रुपये देकर उसने चर्च में अपने लिए बैठने की ख़ास जगह का प्रबंध कराया है। वह ग़रीबों के लिए दिन-रात चंदे जमा करती रहती है। भला ऐसी औरत

काले-गोरे का फ़र्क देख सकती है ?"

"तुमने उसकी तारीफ़ में जितनी बातें बतायी हैं उनसे मेरा शक और पक्का हो गया है।"

बिल जो अभी तक चुप बैठा था, कहने लगा, "ममी, मैं तुम्हारी बात को मानता हूँ लेकिन अब तुम्हारा फ़ोन करके सही बात मालूम करना बहुत ज़रूरी हो गया है, वरना ख़ालिद हम लोगों के बारे में ग़लत राय बना लेगा।"

तीनों ने ममी पर इस तरह नज़रें गाड़ दीं कि वह नर्वस हो गयीं। कमरे में बिलकुल ख़ामोशी थी और छः आँखें ममी पर इस तरह जमी हुई थीं कि वह उनका मुक़ाबला न कर सकीं। टेलीफ़ोन के नंबर घूमे। दूसरी तरफ़ चर्च की सेक्रेटरी बोल रही थी।

"हेलो डियर, तुमने कहा था कि तुम अपना एक कमरा किराये पर उठाना चाहती हो। तो क्या वह कमरा अब भी ख़ाली है ?"

तीनों के दिल धड़क रहे थे। लेकिन ममी को पूरा भरोसा था। कमरे के सन्नाटे में दूसरी तरफ़ की आवाज़ बिलकुल साफ़-सी रही थी। "हाँ मिसेज़ कुक, अभी तक ख़ाली है। अगर आपको ज़रूरत हो तो फौरन ले लीजिये। मैं तो परेशान हो गयी हूँ।"

मिसेज़ कुक ने एक हारी हुई नज़र डिक पर डाली। डिक ने दबे स्वर में सलाह दी, "बुक कर दो फ़ौरन।"

ममी ने ख़ालिद पर एक नज़र डाली और फिर बड़े भरोसे से बोलीं, "तो डियर तुम उसे मेरे बेटे के लिए बुक कर दो।"

फोन बंद करके वह ख़ालिद की तरफ़ बढ़ीं। उसके गाल बड़े प्यार से थपथपाये। फिर कहने लगीं, "आज से तुम मेरे तीसरे बेटे हो।"

डिक सोफ़े पर फैलते हुए बोला, "ममी, इसीलिए कहता हूँ कि चर्च से डरो। इस क्लब में तरह-तरह के लोग जमा हो जाते हैं। इस औरत को हर मर्द से शिकायत होगी। पचास साल का अरसा आधी सदी कहलाता है और आधी सदी में एक भी सूरमा सामने न आया जो आगे बढ़ कर उसका हाथ पकड़ लेता और शादी के लिए बैठ जाता। किसी भी इंसान ने इस

घूरे पर पड़े हुए मोती को न पहचाना।

"ममी, सच कहता हूँ अब उसने अपने पापों के प्रायश्चित के लिए चर्च का सहारा लिया है और बदला लेने के लिए हर उस आदमी को दबोचा है जो उससे किसी भी तरह ज़रा कम हो।"

मिसेज़ कुक बहुत लज्जित थीं। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करें और क्या कहें। सफ़ाई देते हुए कहने लगीं, "रंग का फ़र्क ज़िन्दगी पर क्या असर डाल सकता है, यह आज तक मेरी समझ में नहीं आया। ख़ालिद, अगर हिन्दुस्तान की गर्मियों में मुझे रहना पड़े तो मेरा रंग भी तुम्हारी तरह हो जायेगा।"

"ममी, यह तो बड़ी कुदरती बात है। हमारे यहाँ भी जब बच्चा पैदा होता है तो सबसे पहले यह सवाल किया जाता है कि कैसा है बच्चा—काला या गोरा? और जहाँ तक मुहब्बत का सवाल है वह तो साथ रहने से पैदा होती है। मुझे याद है जब मैं छोटा था तो रात को जल्दी सुलाने के लिए मेरी माँ मुझे डराया करती थी। और जानती हो वह क्या कहती थी? वह कहा करती थी, 'जल्दी सो जाओ नहीं तो गोरा उठा कर ले जायेगा।' और नन्हा-सा बच्चा सहम कर सो जाया करता था। डिक, तुम लोग अपनी सरज़मीन पर कितने प्यारे लगते हो! और उपनिवेशों में जाकर तुम्हारा यही रूप कितना भयानक हो जाता है!"

"मेरा ख़याल है कि इंगलैंड का हर निकम्मा आदमी कालों के ख़िलाफ़ है। उसे अपनी कमज़ोरियों का इल्ज़ाम किसी-न-किसी के सर थोपना जो ठहरा।"

"लेकिन, बिल, मेरा ख़याल है कि नफ़रत से ज्यादा ग़लत-फ़हमियाँ इसकी वजह हैं। बाहर वालों को यह नहीं मालूम कि कम-से-कम दोस्त रखना तुम्हारा स्वभाव है और कम-से-कम बात करना तुम्हें सबसे अच्छा लगता है। और इसीलिए बाहर वालों को ग़लतफ़हमी हो जाती है। यह बात ज़रूर है कि अगर एक भी बाहर का आदमी तुम्हारी मजलिस में आ जाये तो तुम गूँगे बन जाते हो और अगर बोलते भी हो तो तुम्हारे जुमलों से वकालत की बू आने लगती है जैसे अख़बारों को बयान दे रहे हो।"

डिक और बिल और ममी पूरे ध्यान से ख़ालिद की बातें सुन रहे थे और ख़ालिद था कि बोलता चला जा रहा था—

"अभी कुछ दिन की बात है, मेरे एक दोस्त फिंचले रोड स्टेशन से कलबर्न जा रहे थे। कंपार्टमेंट में उनकी बायीं तरफ़ एक सीट ख़ाली थी। अगले स्टेशन पर एक बुड्ढा अंग्रेज़ अंदर आया। उसने मेरे दोस्त को ध्यान से देखा। दोस्त ने ख़ाली सीट की तरफ़ इशारा भी किया, लेकिन बुड्ढा अंग्रेज़ शुक्रिया अदा करके एक किनारे खड़ा हो गया। अपनी ऐनक निकाली और फिर अख़बार निकाल कर उसमें मुँह छुपा लिया।

"मेरे दोस्त को बेहद गुस्सा आया। वह अफ़सोस करने लगा कि मैंने इस तास्सुबी आदमी को सीट पर बैठने का इशारा क्यों किया। जो आदमी काले आदमी के पास बैठना भी गवारा न करता हो उसे तो धक्के देकर बाहर फेंक देना चाहिए।

"इत्तफ़ाक़ से दूसरे दिन फिर यही बात हुई। वह बुड्ढा अंग्रेज आया। उसने ग़ौर से मेरे दोस्त को देखा। लेकिन आज मेरे दोस्त ने उसकी तरफ़ नज़र उठा कर न देखा। वह बुड्ढा पहले की तरह किनारे खड़ा हुआ, ऐनक निकाली और अख़बार के पीछे मुँह छुपा लिया।

"लेकिन आज मेरे दोस्त की दायीं तरफ़ जो अंग्रेज़ बैठा था उससे न रहा गया। वह बड़ी नरमी से बोला—'मालूम होता है कि आप इस इलाके में नये-नये आये हैं। यह बुड्ढा जो किनारे खड़ा अख़बार पढ़ रहा है, यह पिछले दस-पन्द्रह साल से इसी वक्त, इसी ट्रेन में, इसी डिब्बे में और इसी सीट पर बैठ कर सफ़र करता है, जिस पर आप बैठे हैं। जो लोग इसे जानते हैं सीट छोड़ कर खड़े हो जाते हैं। नहीं तो वह खुद किनारे खड़े होकर अख़बार पढ़ता रहता है'।

"मेरे दोस्त ने जब यह क़िस्सा सुना तो उसे शर्म महसूस होने लगी। वह उठा। मिस्टर ऐंड्रयूज़ के पास जाकर माफ़ी माँगी और इसरार किया कि आप आकर अपनी सीट पर तशरीफ़ रखिये। बुड्ढे ने बहुत तकल्लुफ़ किया लेकिन मेरे दोस्त का इसरार उसे ले ही आया। वह कई बार शुक्रिया अदा करते हुए सीट पर बैठ गया।

"बिल, अब तुम ही बताओ, शुरू में मेरे दोस्त ने अंग्रेज़ों के बारे में

जो राय क़ायम की थी वह कितनी ग़लत थी ! या कम-से-कम उसकी बुनियाद कितनी ग़लत थी ! ख़ामोशी के चारों ओर कितनी बहुत-सी ग़लतियाँ लिपटी रहती हैं।"

ममी चुपचाप ख़ालिद का लेक्चर सुनती रहीं। उनकी आँखों में प्यार का भाव उमड़ आया था और वह ख़ालिद को बड़े प्यार से देख रही थीं कि डिक खड़ा हो गया। उठ कर आतिशदान के पास गया और एलार्म क्लाक उठा कर चाभी देते हुए कहने लगा, "हम लोग सोने से पहले घड़ी में चाभी दिया करते हैं।"

५

यादों के मज़ार

ऐसा लगता था कि लैंडेलेडी ने अभी थोड़े ही दिन हुए अधेड़ उम्र की सीमा पार की थी। गुलाब की पँखुड़ियों के किनारे मुरझा गये थे और अब मुर्दनी फैलना शुरू हो गयी थी। लेकिन छवि वही थी, अकड़ वही थी और बातों का हाकिमाना अंदाज़ अभी तक साथ दे रहा था।

"मिस्टर ख़ालिद! ग्यारह बजे के बाद आपके कमरे में किसी दूसरे को न होना चाहिए। वैसे हम मेहमानों का ज्यादा आना-जाना पसंद नहीं करते हैं। इसके अलावा हिंदुस्तानी खाना पकाने से परहेज़ कीजियेगा क्योंकि प्याज़ की बू सारे घर में बस जाती है। रह गया किराया, तो वह हफ्तेवार या माहवार जिस तरह चाहें दे सकते हैं।"

"मैं यह तय करके आया हूँ कि जैसा लैंडलेडी चाहेगी, मैं बिलकुल वैसा ही करूँगा।"

लैंडलेडी हँसी, लेकिन मुस्कराहट फीकी और उजाड़ थी। उसने कमरे की चाभी ख़ालिद को देते हुए कहा कि आप कमरा नंबर पाँच में जा सकते हैं।

नये कमरे की खिड़की सड़क की तरफ़ खुलती थी। फ़र्श पर लाल क़ालीन था और परदे विस्कुटी रंग के थे, जिस पर बड़े-बड़े नीले और लाल फूल बने हुए थे। एक आराम-कुर्सी के अलावा दो और कुर्सियाँ भी थीं। मेज़ गोल मगर ख़ूबसूरत थी। वार्डरोब दीवार के अंदर बना हुआ था, जिसके एक चौथाई हिस्से में नल था, दूसरे में बिजली का चूल्हा और तीसरे में कपड़े रँगने का इंतज़ाम। वार्डरोब का दरवाज़ा बंद कर दीजिये तो सब चीज़ें नज़रों से ओझल हो जाती थीं।

आराम-कुर्सी पर बैठ कर ख़ालिद ने कमरे का जायज़ा लिया और फिर सोचने लगा—'मेरा पड़ोसी कौन है। कोई माक़ूल सूरत दीवार की दूसरी तरफ़ रहती हो तो फिर इतना सूना नहीं रहेगा।'

इतने में किसी ने उसका दरवाज़ा खड़खड़ाया। वह जाने क्या सोच कर उठा। बालों पर जल्दी से कंघे का एक हाथ मारा। लपक कर दरवाज़ा खोला तो एक बुड्ढ़ा अंग्रेज़ खड़ा था।

"माफ़ करना बेटे, मेरा नाम जान है। ज़रा माचिस दे सकते हो।"

"ज़रूर ! ब-खुशी ! यह लीजिये।"

"बात यह है कि मैं आज ही यहाँ आया हूँ। अभी सामान ठीक नहीं किया है।"

"अजीब इत्तफ़ाक़ है, मैं भी आज ही आया हूँ," ख़ालिद खुश होकर बोला। "चलिये, अच्छा हुआ, हम दोनों में कम-से-कम एक चीज तो मिलती-जुलती निकली।"

जान ख़ालिद के इस वाक्य का पूरा अभिप्राय समझ गया। वह ख़ालिद की मानसिक प्रवृत्ति की थाह लेते हुए कहने लगा, "एक क्यों, बहुत-सी चीज़ें मिलती-जुलती निकल आयेंगी। ढूँढे बिना कोई चीज़ नहीं मिलती है।"

बुड्ढा जान माचिस लेकर चला गया। ख़ालिद सोचने लगा, आदमी माकूल मालूम होता है। थोड़ी-सी देर के बाद जान ने फिर दरवाज़ा खटखटाया। माचिस वापस करते हुए पूछने लगा, "तुम क्या करते हो लंदन में ?"

"पढ़ने आया था। अब एक फैक्टरी में नौकर हूँ और शाम को स्कूल जाता हूँ।"

"इसका यह मतलब हुआ कि सुबह छः बजे से रात के ग्यारह बजे तक तुम काम करते रहते हो।"

"जी हाँ, मतलब तो यही हुआ।"

"थक नहीं जाते ?"

"किससे शिकायत करूँ ? जिससे कहूँगा वह यही कहेगा कि

कि पढ़ना छोड़ दो और या फिर नौकरी से इस्तीफ़ा दे दो।"

"नहीं, ऐसा न करना। लेकिन मज़दूरी में जो थकन होती है वह पढ़े-लिखे आदमी का दिल तोड़ देती है।"

"अब इस ज़िंदगी की आदत होती जा रही है।"

"तुम्हें ज्यादा पैसों की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए। पार्ट-टाइम काम क्यों नहीं कर लेते ?"

"मैंने बहुत खोजा। लेकिन अजीब बात है, मैं जहाँ-जहाँ गया मेरे पहुँचने से कुछ देर पहले जगह भर चुकी थी।"

"मैं जानता हूँ। मैं अच्छी तरह जानता हूँ। बात दरअसल यह है कि हमारी मलिका मुअज्ज़िमा सिर्फ़ क्रिसमस के दिन कामनवेल्थ के लोगों को याद करती हैं, और वह भी रेडियो पर।...बहरहाल इन छोटे-छोटे मसलों का कोई हल नहीं हुआ करता। मेरा मतलब है, सरकारी हल नहीं होता। इनको सिर्फ़ निजी तौर पर ही हल किया जा सकता है।"

"निजी तौर पर मसले उसी वक्त हल होते हैं जब लोगों को मिल-बैठ कर एक-दूसरे के ग़म और खुशियाँ बाँटना आता हो।"

"बिलकुल ठीक है। बिलकुल ठीक कहते हो। पत्थर हैं, पत्थर। देखो मैं कोशिश करूँगा तुम्हारे लिए। हो सकता है कि तुमको पार्ट-टाइम काम दिलाने में कामयाब हो जाऊँ। लेकिन मुझे याद दिलाते रहना।"

यह पहला अंग्रेज़ था जिसने ख़ालिद की प्राब्लम को पहली ही मुलाक़ात में समझ लिया था। दिल अच्छा हो तो दिल को दिल से राह हो जाती है।

'जान, तुम सचमुच अच्छे आदमी हो !' ख़ालिद ने अपने-आपसे कहा।

सचमुच अगर जान उसे कहीं पार्ट-टाइम काम दिला दे तो उसकी ज़िन्दगी सुधर जायेगी। वह अपनी पढ़ाई जारी रख सकेगा। और फिर एक दिन वह अपनी मंज़िल तक पहुँच जायेगा जिसकी ख़ातिर वह इतना लम्बा सफ़र करके लंदन आया है। लेकिन वह कौन-सी मंज़िल है ? क्या कोई ऐसी चीज़ भी होती है जिसका नाम मंज़िल हो ?

नयी जगह की उदासियों ने ख़ालिद को घेर लिया। वह दिन-भर अपने कमरे में पड़ा रहा। समस्याओं की चढ़ाई होती तो मार्गरेट की कल्पना में पनाह ढूंढ़ लेता। फिर उसने सोचा कि क्यों न जान से गप्प लड़ायी जाये।

जान का दरवाज़ा उसने धीरे-से खटखटाया। दूर से आवाज़ आयी, "अन्दर आ जाओ।" जान अपनी आराम-कुर्सी पर लेटा हुआ था। बाँये हाथ की मेज़ पर बहुत खूबसूरत कार्नेशन के ताज़ा फूल रखे थे। और उनके पीछे एक प्यासी-सी नाजुक नाक-नक्श वाली लड़की फ्रेम में मुस्करा रही थी। ख़ालिद ने फूलों को पसन्द किया, "बड़े खूबसूरत फूल हैं!"

"तुम्हें पसन्द हैं तो तुम ले लो।"

"नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है। अच्छे फूल तो सभी को अच्छे लगते हैं।"

"सभी को अच्छे नहीं लगते। यही तो बात है और जिसे अच्छे लगते हों उसे फूल ज़रूर ले लेने चाहिए।" जान ने दो-तीन फूल निकाल कर ख़ालिद के हाथों में दे दिये और उससे इंकार करते न बना।

"शुक्रिया! लेकिन ये फूल आप किसके लिए लाये थे?"

"यह लड़की जो फ्रेम में मुस्करा रही है, यह मेरी बेटी हेलेन है। बहुत-सी यादें जुड़ी हुई हैं इससे। आज हमारी बच्ची की सालगिरह का दिन है। उसे कार्नेशन बहुत पसन्द हैं। इसलिए आज के दिन मैं यह तोहफ़ा कभी नहीं भूलता।"

"तो...तो फिर आप यहाँ अकेले...इस अजनबी घर में...?"

"ख़ालिद, तुमको यह सुन कर ताज्जुब होगा, इस घर में मैं अजनबी नहीं हूँ। बहुत दिनों की बात है, यह घर मेरा था। लिली का था और फिर हेलेन आ गयी—मेरी बच्ची। यहाँ की हर दीवार में हमारे क़हक़हे बसे हुए हैं। और फिर एक-एक करके सब साथ छोड़ गये। छोटी-छोटी यादें वक्त के साथ-साथ गर्द में दबती चली गयीं। अब ये यादें बड़े-बड़े मज़ार बन चुकी हैं। उनको मैं सीने से चिपटा कर रखना चाहता हूँ क्योंकि अब मेरे पास इनके अलावा कुछ नहीं है, कुछ भी नहीं है।"

"लेकिन जान, यह लैंडलेडी तो तुमको पहचानती होगी?"

"नहीं, यह नहीं पहचानती और इसीलिए मैं यहाँ किरायेदार बन कर आ गया हूँ। अगर वही आदमी इसका मालिक होता जिसके हाथ मैंने यह घर बेचा था तो शायद मेरी हिम्मत न होती इस घर में आने की। यह बात लैंडलेडी बेचारी क्या जाने? इसको क्या मालूम कि मैं कौन हूँ?"

ख़ालिद को अपने चारों ओर क़ब्रिस्तान का सन्नाटा महसूस हुआ। कार्नेशन के फूल उसे ऐसा लगा जैसे किसी मन्दिर से प्रसाद में मिले हों। उसने डरते-डरते जान से पूछा—

"जान, हेलेन अब कहाँ है ? क्या वह तुम्हारे साथ नहीं रहती ?"

"पहले नहीं रहती थी, लेकिन अब मेरा साथ नहीं छोड़ती।"

जान शून्य में घूरता रहा। फिर धीरे-धीरे ख़ालिद की ओर देखे बिना उसने कहना शुरू किया—"ख़ालिद, मुझे तुम्हारे देश के हर लड़के से प्यार है। मुल्क कोई भी हो, आँख कोई भी हो, आँखों की नमी एक होती है, दिल के धड़कने की आवाज़ एक होती है। ख़ालिद, यह बात मैंने बहुत बड़ी कुर्बानी देकर सीखी है। मुझे काले रंग से नफ़रत नहीं थी, लेकिन मैं मुहब्बत भी नहीं करता था उस रंग से। बस, कोई सम्बन्ध नहीं था, जिसको एक हिन्दुस्तानी लड़के ने सम्बन्ध में बदल दिया। हेलेन को जाने कैसे उस लड़के से प्रेम हो गया। मैं सब कुछ बर्दाश्त करने के लिए तैयार था लेकिन अपनी बेटी की शादी एक हिन्दुस्तानी से कर देना मेरी तबीअत ने कभी गवारा नहीं किया। काले दामाद को घर लाना—मैं इस कल्पना ही से काँप उठता था।

"मैं एक दीवार की तरह हेलेन के सामने खड़ा हो गया। वह बच्ची थी। उसने बग़ावत करनी चाही तो मैंने क़ानून का सहारा लेकर बग़ावत को कुचल दिया। माँ-बाप से आज़ादी इक्कीस साल की उम्र में मिलती है। वह सिर्फ़ उन्नीस साल की थी। फिर वे दोनों यहाँ से भाग कर स्काटलैंड चले गये क्योंकि वहाँ का क़ानून कम उम्र में अपनी मर्ज़ी से शादी की इजाज़त देता है। मुझे इस बात का पता चल गया। मैं उसी रात अपनी कार में उनका पीछा करने के लिए निकल खड़ा हुआ।"

जान एक क्षण के लिए चुप हो गया। उसने फूलों को ढंग से सजाया और फिर कहने लगा—

"काश ! मैं उनका पीछा करने न निकलता। वहाँ मैंने पुलिस की मदद से दोनों का पता लगा लिया। होटल पर जब पुलिस ने छापा मारा तो हेलेन फूट-फूट कर रो रही थी और कृष्ण को इस तरह पकड़े थी जैसे दुनिया की कोई ताक़त उसे अलग नहीं कर सकती।

"लड़के पर झूठा इल्ज़ाम लगा कर मैंने उसे क़ैद करा दिया। हेलेन तड़पती रही लेकिन मेरा कुछ न कर सकी। मैं यही सोचता रहा कि बच्ची है ठीक हो जायेगी ।...ख़ालिद, उसने मुझे इसके लिए ज़िन्दगी-भर माफ़ न किया। मरते वक्त तक मैं उसकी निगाहों में मुजरिम था। बल्कि शायद क़ातिल भी था।"

ख़ालिद को ऐसा लगा कि जैसे वह स्वयं उस कहानी का पात्र हो। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे हेलेन और कृष्ण को वह हमेशा-हमेशा से जानता हो। फिर वह कहने लगा—

"जान, तबाही के रास्तों की रहबरी हमेशा जज़्बात ही करते आये हैं।"

जान की आँखें भर आयी थीं। वह तसवीर को देखते हुए कह रहा था, "तुम्हारा ख़याल ग़लत है, ख़ालिद ! जज़्बात ज़िन्दगी में रंग भरते हैं। मैं समझता हूँ कि खुदा ने आदम से खुश होकर उसे नीचे भेजा था। फ़रिश्तों की गुलामों जैसी जी-हज़ूरी से उकता कर उसने एक नयी दुनिया बसाने का फ़ैसला किया था। बहरहाल मेरे घर की यह दुर्घटना तो इस वजह से हुई कि मैं जज़्बात से बिलकुल ख़ाली था—पत्थर था।

"हेलेन ने अख़बारों को बयान दिया कि उसने कृष्ण को भागने पर मजबूर किया था। लेकिन क़ानून की नज़र में नाबालिग़ तो नाबालिग़ ही होता है। लंदन की एक बड़ी-सी कम्पनी में मैंने हेलेन को एक अच्छी-सी नौकरी दिला दी, लेकिन उसका दिल न लगा। तुम्हारे देश के एक लड़के ने उसे जड़ से उखाड़ दिया था। छोटे-छोटे पौधों को दुबारा ज़मीन में लगा दीजिये तो वे नये सिरे से ज़िन्दा हो जाते हैं। लेकिन पले-बढ़े पेड़ एक बार उखड़ जायें तो उनकी जड़ें अपनी पकड़ खो देती हैं। वह उदास खोयी-खोयी-सी रहने लगी। फिर उसका वज़न कम होना शुरू हो गया! दो-तीन बार वह मुझसे छिप कर जेल में कृष्ण से मिलने भी गयी, जहाँ दोनों ने शादी करने की क़समें खायी। वे दो साल क्या, दो सौ साल इंतज़ार करने से लिए तैयार थे।

"अब सोचता हूँ, कृष्ण लाखों में एक लड़का था। उसने जेल में भी अपनी पढ़ाई का सिलसिला जारी रखा। जेल से छूटते ही दो साल के अंदर

उसने बी० एस-सी० पास कर लिया। लेकिन मेरे दिल में नफ़रत का भाव पहले की तरह ही बना रहा। मैं इस शादी का हमेशा विरोधी रहा। इम्तहान पास करने से डिग्रियाँ ज़रूर मिल जाती हैं लेकिन खाल का रंग नहीं बदलता। हेलेन जब इक्कीस साल की हो गयी तो उसने मुझसे, अपने जल्लाद बाप से नाता तोड़ लेने का फ़ैसला किया। अब क़ानून उसकी तरफ़ था और मैं सिवाय समझाने के और कुछ नहीं कर सकता था। उन्होंने अपनी शादी की तारीख़ तय कर ली।

"हेलेन की सारी चंचलता, सारी रंगीनियाँ, सारी ज़िन्दगी वापस आ गयी। शादी से एक दिन पहले वह कृष्ण का इंतज़ार कर रही थी लेकिन वह नहीं आया। रात बीत गयी, वह नहीं आया। सुबह के कोई छः बजे होंगे, किसी ने दरवाज़े की घण्टी बजायी। मैं हैरान था कि अभी तो दिन की रोशनी भी नहीं फूटी है, ऐसे में कौन आया है ? एक पुलिस का आदमी खड़ा हुआ था। उसने जेब से एक तसवीर निकाल कर दिखायी, जो मेरी बेटी की थी। पुलिस वाला मेरी बेटी से मिलना चाहता था। मैं हेलेन को बुला कर लाया तो जाने कैसे उसे ख़तरे का आभास हो गया। लेकिन वह समझी कि मैंने फिर कोई तरकीब चली है। वह गुस्से से काँपते हुए बोली, 'डैडी, आख़िर तुम कब हमारा पीछा छोड़ोगे ? तुम्हें तरस नहीं आता, तुम्हारी बेटी मुर्दों की तरह ज़िन्दा है'।

"पुलिस वाले ने उसको समझाने की कोशिश की। जेब से फ़ोटो निकाल कर हेलेन के हाथ में देते हुए पूछने लगा, 'यह तसवीर आपने किसको दी थी ?'

—'हाँ-हाँ, मैंने कृष्ण को दी थी। क्या हुआ ? वह ठीक तो है ?' हेलेन का चेहरा सफ़ेद हो गया, जैसे शरीर का सारा खून किसी ने खींच लिया हो।

—'मोटर-साइकिल की सवारी कोई अच्छी सवारी नहीं है। कल रात कृष्ण का ऐक्सीडेंट हो गया। डाक्टरों की कोशिश के बावजूद हम उसे बचा न सके।'

"हेलेन ने अपने निचले होंठ के एक कोने को इतने ज़ोर से अपने दाँतों से दबाया कि गोश्त की एक बोटी उसके मुँह में आ गयी। वह चीख़ी।

फिर उसके बाद वह रो न सकी।...लोग पागलपन में बे-तरह हँसते हैं, वह हँस भी न सकी।

"मेरे रास्ते का काँटा अब हट चुका था। कृष्ण अब इस दुनिया में नहीं था। हेलेन मेरे लिए पहले भी सब कुछ थी और अब तो और ज़्यादा हम दोनो को एक-दूसरे की ज़रूरत थी। लेकिन हेलेन की ख़ामोशी न टूट सकी।

"कृष्ण की आकृति बड़ी होती गयी। अपने आकार से भी बड़ी हो गयी। बढ़ते और फैलते हुए वह मेरे दिल और दिमाग़ पर छाती गयी। मैं हेलेन को लेकर लेक डिस्ट्रिक्ट चला गया। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के बीच ठहरी हुई नीली झील में भागती हुई किश्तियाँ उसका जी न बहला सकीं। कार्नेशन के लाल फूल लिये वह झील के किनारे बैठी रहती। रात को चौंक कर उठती; कार्नेशन के फूल हाथ में लेकर खिड़कियाँ खोल देती। गहरी झील की सतह पर सिर्फ़ चन्द रोशनियाँ भागती नज़र आतीं और बस !

"लेकिन मुझे अपनी ग़लती का एहसास हेलेन का आख़िरी ख़त पढ़ कर हुआ जो उसने मरने से कुछ पहले लिखा था।"

जान ने बड़े थके हुए अंदाज़ में तसवीर की ओर हाथ बढ़ाया। उसके हाथ काँप रहे थे। उसका बुढ़ापा कुछ और बढ़ गया था। उसने कई बार फ्रेम खोलने की कोशिश की और जब उसके हाथ काँपने लगे तो उसने फ्रेम ख़ालिद की तरफ बढ़ा दिया। तसवीर के नीचे एक ख़त रखा था। उसने चुपचाप वह ख़त ख़ालिद के हवाले कर दिया। ख़त यूँ था—

प्यारे डैडी,

सुबह मैं न हूँगी। मैं जानती हूँ कि दुख से तुम्हारी उम्र दुगुनी मालूम होने लगेगी। मैं बहुत सोचने के बाद इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि कृष्ण के बिना मेरा जीना बेकार है। दिल में अब भी उस अन्तिम क्षण का जाने क्यों ख़याल आता है !

दो साल पहले अगर तुमने शादी की इजाज़त दे दी होती तो शायद कृष्ण आज ज़िन्दा होता और शायद मैं भी अपनी स्वाभाविक मौत मरती।

डियर, मेरी मौत को अख़बार की ख़बर न बनने देना। अपनी

हेलेन की अंतिम इच्छा तो पूरी कर दोगे ना ?

तुम्हारी
हेलेन

"हेलेन नींद की गोलियाँ खाकर ऐसी लेटी कि फिर कभी न उठी। मुझे माफ़ी तक माँगने की मुहलत न दी उसने।"

लैंप की रोशनी में जान की आँखें झिलमिला रही थीं। वह बड़ी देर तक छत को घूरता रहा फिर कहने लगा, "उसकी मौत ने मेरे दिमाग़ के सारे दरवाज़े खोल दिये हैं। लेकिन ख़ालिद, वक्त के तकाज़े कुछ और ही होते हैं। वह हर चीज़ को, हर आदमी को जगह ख़ाली करने के लिए कहता है ताकि कोई दूसरा आदमी कोई दूसरा क्षण वहाँ गुज़ार सके। और किसी दूसरे दिल की धड़कन वहाँ सुनायी दे सके। ख़ुदा से मायूस नहीं होना चाहिए। उसकी सृष्टि के कारख़ाने का काम कभी ख़त्म नहीं होता।

ख़ालिद अपने विचारों में गुम चुपचाप बैठा रहा। उसकी नज़रें हेलेन की तसवीर पर जमी हुई थीं। बुड्ढे जान ने ख़त को मोड़ा और तसवीर के नीचे रख कर फ्रेम कसने लगा। ख़ालिद सोच रहा था :

हीर जब हेलेन का रूप धर कर आती है तो हमारी पुराणपंथी आँखें धोखा खा जाती हैं। पूरब की प्रेम-कहानियों और यूरोप की हेलेन की इस आप-बीती को अगर एक ही तराज़ू के दो पलड़ों में रखा जाये तो कौन-सा पलड़ा झुक जायेगा ?

६

'गुड मार्निंग' से 'गुड नाइट' तक

ख़ालिद जाने क्यों जान और हेलेन को भूल कर सारी रात कृष्ण के बारे में सोचता रहा। परदेस की मौत कैसी भयानक होती है ! कहते हैं परदेस में चिता सुलगती है, भड़कती नहीं, इस इंतज़ार में कि शायद कोई सगा-संबंधी, कोई रिश्तेदार आ जाये। ऐसी मौत माँ-बाप को बे-मौत निगल लेती है।

सुबह जब वह फैक्टरी जाने के लिए निकला तो उसे पता चला कि घर में एक लड़की भी रहती है। ज़ीने पर दोनों की एक क्षण के लिए मुलाक़ात हुई। ख़ालिद के मुँह से 'गुड मार्निंग' निकल गया, जिसका जवाब बहुत रूखे अंदाज़ में 'मार्निंग' मिला।

लड़की के चेहरे पर न तो ताज्जुब था न ख़ुशी ही, जैसे कह रही है, 'फिर सलाम करने की ज़रूरत नहीं है।'

नीचे मेज़ पर वह अपनी डाक देखने लगी। ख़ालिद ने भी एक नज़र ख़तों पर डाली, फिर उसे ख़याल आया कि अभी तो किसी को उसका पता भी न मालूम होगा।

ख़ालिद के मन में लड़की का रूखापन काँटे की तरह चुभ रहा था, लेकिन चमन में रहने के लिए काँटों से निभाना ही पड़ेगा।

"ग़ालिबन, सुबह सलाम करने की आपको आदत नहीं है ?"

"मुझे इन सलामों से कोई दिलचस्पी नहीं है। इसके बावजूद मैं आपके सलाम का जवाब दे चुकी हूँ।"

"जैसे स्लाट मशीन टिकट दे देती है।"

"तो फिर और कैसे जवाब दूँ ? नाचना शुरू कर दूँ, मारे ख़ुशी के ?"

"बाज़ लड़कियों को काले लड़कों के सलाम अच्छे नहीं लगते।"

"तुम लोगों की शंकाएँ हर बात को नया रंग दे देती हैं। यह रंग का सवाल नहीं है, समझे। मुझे ये सलाम इस वजह से अच्छे नहीं लगते हैं कि ये आमतौर पर 'गुड मार्निंग' से शुरू होकर 'गुड नाइट' तक पहुँच जाते हैं।"

ख़ालिद को लड़की का गुस्सा बड़ा प्यारा लगा, और उसकी बात इसके भी ज्यादा प्यारी। वह फ़ैक्टरी पहुँच कर भी लड़की के बारे में सोचता रहा। और शाम को जब वह आनंद से मिला तो उसने सारा क़िस्सा सुना डाला। आनंद बहुत ज़ोर से हँसा, फिर कहने लगा, "घर बदलते हो?"

"किराया ज़्यादा देना पड़ेगा।"

"जिन लोगों को तेज़ मिर्च खाना अच्छा लगता है वे डाक्टरों की सलाह के बावजूद खाते हैं।...वैसे ख़ालिद, ऐसी लड़कियों के पास आमतौर पर दर्दमंद दिल होता है। इस नाराज़गी में बड़ा लगाव होता है।"

आनंद हमेशा की तरह मूड में था। वह ख़ालिद को समझाता रहा, "नीयत साफ़ रखो, फिर किसी लड़की से डर नहीं लगेगा। और फिर पड़ोसिन से प्यार करने की बात तो बाइबिल में आयी है।"

"छोड़ो यार, इस सबक़ को और गोली मारो उस लड़की को।"

देर रात गये ख़ालिद अंडर-ग्राउंड स्टेशन की बिजली से चलने वाली सीढ़ियों पर खड़ा ऊपर पहुँचने का इंतज़ार कर रहा था। उसके आगे एक खूबसूरत लड़की काला ओवरकोट पहने और एक खूबसूरत स्कार्फ़ सर पर बाँधे खड़ी हुई थी। रूमाल के बाहर निकली हुई लटें बता रही थीं कि बाल भूरे हैं। लड़की ने मुड़ कर ख़ालिद की तरफ़ देखा। एक पल के लिए नजरें मिलीं। वह मुस्करायी और फिर अपने पर्स में कोई चीज़ ढूँढ़ने लगी।

'वह यक़ीनन मुझे देख कर मुस्करायी थी,' ख़ालिद ने अपने शुबहे को यक़ीन में बदलने की कोशिश की। फिर जाने क्या सोच कर ग़ोते खा गया—जाने कैसे-कैसे विचारों का एक रेला आया। फिर हिम्मत करके उसने लड़की से कहा, "आज मौसम बड़ा सुहावना है!"

"जी हाँ, बुरा नहीं है मौसम।"

वह भागता हुआ ज़ीने के ऊपर पहुँच गया। ख़ालिद को ठंडी हवा जो

लगी तो नशा छा गया। वह सोचने लगा, 'यह स्काच व्हिस्की का नशा देर में क्यों चढ़ता है ?'

दोनों एक-दूसरे के पीछे चलते रहे। आख़िर एक मोड़ पर दो-चार क़दम तेज़ी से बढ़ा कर ख़ालिद उसके साथ आ गया। उसका नशा बोला, "आप बहुत खूबसूरत लग रही हैं और इस काले रूमाल के बीच आपका चेहरा बिल्कुल ऐसा लगता है जैसे बादलों में से चाँद निकल आया हो, या फिर जैसे कोई तरोताज़ा गुलाब का फूल झाँक रहा हो।"

लड़की ने कोई जवाब न दिया, लेकिन वह पूर्ववत साथ-साथ चलती रही। ख़ामोशी फैलने लगी। ख़ालिद को डर लगा कि कहीं बातों का सिलसिला बिल्कुल ही टूट न जाये। उसने एक और कोशिश की। "इस वक्त आप किसी पार्टी से आ रही हैं ?"

"जी हाँ, मेरी एक सहेली की सालगिरह थी।"

ख़ालिद ने अपने सीने पर क्रास का निशान बनाया, फिर कहने लगा, "शुक्र है, आप बोलीं तो। वैसे लड़कियों के सालगिरह मनाने के मैं बहुत ख़िलाफ़ हूँ।"

"वह किसलिए ?" लड़की ने दिलचस्पी ली।

"वह इसलिए कि उनकी उम्र एक साल बढ़ जाती है, और यह कोई ख़ुशी की बात तो है नहीं।"

"उम्र बढ़ जाती होगी लेकिन केक पर मोमबत्तियाँ लगाते वक्त लड़कियाँ आमतौर पर गिनती भूल जाती हैं।"

ख़ालिद बहुत ज़ोर से हँसा, उसका क़हक़हा बे-तुका था।

"जब तक मोमबत्तियाँ इतनी ढेर सारी न हों कि उनकी क़ीमत केक से ज़्यादा हो जाये, उस वक्त तक सालगिरह न मनाना चाहिए।"

लड़की ने चोट की, "तो आप किसी ऐसी ही सालगिरह से आ रहे हैं ?"

"हाँ, हम परदेसी लोग अपनी तनहाई की सालगिरह मना रहे थे। मैं अपने दोस्तों के साथ बैठा अच्छी-अच्छी बातें कर रहा था। फिर जाने क्यों तबियत उचाट हो गयी और अपना कमरा याद आने लगा। मैंने सोचा वह बेचारी बैठी राह देख रही होगी।"

लड़की ने चौंक कर पूछा, "कौन राह देख रही होगी ?"

"तनहाई !" ख़ालिद ने धीरे-से लड़की का हाथ पकड़ने की कोशिश की। लेकिन उसने घबरा कर हाथ छुड़ा लिया और दूर हट कर चलने लगी। लेकिन वह नाराज़ नहीं थी।

"हमारे एक बहुत अच्छे शायर ने लिखा है—'अगर तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में आ जाये तो रास्ते के सारे चिराग़ जल उठेंगे।' और आप यक़ीन कीजिये कि उस शायर ने किसी आप ही जैसी लड़की के लिए यह बात लिखी थी।"

लड़की मुस्करा रही थी। कहने लगी, "दूर चलने में टकराने का ख़तरा कम रहता है।"

"आपको दूर हट कर चलने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। मैं अहिंसा के देश का रहनेवाला हूँ! ऋषियों और साधुओं के मुल्क से आया हूँ—अच्छा, आप खुद बताइये आप कितनी दूरी रख कर चलना चाहती हैं ? मैं अगर उससे एक इंच भी आगे बढ़ूँ तो...तो जो सज़ा चाहे दीजियेगा।"

लड़की थोड़ी देर तक ख़ालिद को ध्यान से देखती रही। फिर मुस्करा कर कहने लगी, "मेरा ख़याल है बारह इंच की दूरी काफ़ी होगी।"

दोनों ने एक दबा-दबा क़हक़हा लगाया और फिर दोनों के क़दम एक साथ उठने लगे। ख़ालिद कहने लगा, "यह दूरी बहुत मुनासिब है। मैं चाहता था कि इतने पास ज़रूर हो कि आँख और कान के अलावा नाक भी इस्तेमाल हो सकती हो।"

लड़की मूड में थी। "नाक तो कहीं भी रगड़ी जा सकती है।"

"यह बात नहीं है। लड़कियों में एक अजीबो-ग़रीब भीनी-भीनी खुशबू होती है जिसकी चपेट में आकर बचना मुश्किल होता है और मुझे बचने में कोई दिलचस्पी नहीं है।"

ख़ालिद की नज़र उठी तो वह अपने घर के सामने पहुँच चुका था। वह एक क्षण के लिए रुका। लड़की भी रुक गयी। ख़ालिद के दिमाग़ ने ठोकर खायी, लेकिन फिर संभल गया।

"आपको भी अकेलापन महसूस होता है ?"

"अपने घर में कोई अकेला महसूस नहीं करता।"

"यही तो रोना है। कुछ लोग भरे-पूरे घरों में, भीड़ में भी अकेले होते हैं। यह ज़िंदगी एक क़ैद के सिवा कुछ नहीं है—क़ैदे-तनहाई। मेरा अकसर जी चाहता है कि मैं अपने वजूद को कहीं चुपके-से रख कर भूल जाऊँ जैसे लोग छतरी भूल जाते हैं। मगर मुश्किल यह है कि उस मंज़िल तक पहुँचने के लिए शराब भी साथ नहीं देती। होश जो है न, वह गिरता-पड़ता, लँगड़ाता हुआ साथ देता ही रहता है।"

"शराब अगर आप किसी मसले के हल के सिलसिले में पीते हैं तो बेहतर होगा कि छोड़ दीजिये।"

"छोटी-छोटी बुराइयाँ आदमी को करते रहना चाहिए।"

"ताकि बड़ी बुराइयों से बचा रहे।"

ख़ालिद और वह अजनबी लड़की अँधेरी रात में लैंप-पोस्ट के नीचे बड़ी देर तक खड़े बातें करते रहे। ख़ालिद ने कई बार सोचा कि यह लड़की जाती क्यों नहीं है। इसका कोई क़दम आगे उठे तो मैं भी अपने घर की ओर बढ़ूँ। फिर एकदम उसे ख़याल आया कि क्यों न उसे ऊपर आने की दावत दी जाये।

लड़की पूर्ववत खड़ी बातें करती रही। बात से बात निकाल कर बात बढ़ाती रही। ख़ालिद की बातों में नयापन था जो आमतौर पर अंग्रेज़ लड़कों की बातचीत में नज़र नहीं आता है। शायद इसीलिए वह अभी जाने को तैयार नहीं है। जब कुछ और समय बीत गया तो ख़ालिद कहने लगा, "अगर मुझे सुबह फैक्टरी न जाना होता तो मैं सुबह तक आपसे बातें करता रहता। आपकी हल्की-फुल्की प्यारी-प्यारी बातें, आपकी हँसी, आपकी मुस्कराहट मुझे पसंद है। आपका हर क़हक़हा मुझसे कहता है—जानती हैं क्या कहता है?"

"कोई बेतुकी बात कहता होगा।"

"कहता है कि ज़िंदगी से मायूस होने की ज़रूरत नहीं है—सुनिये आपसे फिर कब मुलाक़ात हो सकती है?"

लड़की मुस्करायी, "हम रोज़ मिल सकते हैं।"

"यह कैसे हो सकता है। देखिये, मैं खुशी से पागल हो जाऊँगा। मेरी

क़िस्मत इतनी अच्छी नहीं है। अच्छा, तो बताइये, कल छः बजे हम लोग कहाँ मिलेंगे ?"

"पिकैडली के स्टेशन पर।"

"देखिये, एक बात और है। यह हमारी पहली मुलाक़ात है। इतनी जल्दी फ़ैसला न कीजिये। पहले घर जाकर सोच लीजिये कि आपको एक अजनबी से मिलना चाहिए या नहीं। आप यक़ीन कीजिये, अगर कल आप स्टेशन पर न आयीं तो मुझे कोई शिकायत नहीं होगी। दुःख ज़रूर होगा। लेकिन दुःख तो एक निजी चीज़ है। दुःख का क्या, वह तो बात, बे-बात होता रहता है। आप कहाँ रहती हैं ? चलिये, मैं पहुँचा दूँ।"

लड़की अपनी हँसी रोक न सकी। उसने एक क़हक़हा लगाया—"आपको तकलीफ़ करने की जरूरत नहीं है, मैं खुद चली जाऊँगी।"

"सुनिये, अँधेरा बहुत हो गया है। एक लम्हे के लिए अपना हाथ दे दीजिये तो यह अँधेरा छँट जायेगा। जाने से पहले यह छोटी-सी कुर्बानी तो आप कर ही सकती हैं।"

लड़की ने अपने पर्स से चाभी निकाली। "लेकिन जाने से पहले मैं चाहती हूँ कि आपको घर तक पहुँचा दूँ," उसने बड़ा दरवाज़ा खोल कर ख़ालिद से कहा।

"चलिये अंदर—यहाँ काफ़ी सर्दी है।"

ख़ालिद के आश्चर्य की कोई सीमा न रही। फिर जैसे उसको कोई भूली-बिसरी शकल याद आ गयी। उसने लपक कर लड़की की दोनों बाँहें अपने हाथों में जकड़ लीं। उसकी आँखों में झाँक कर देखा, फिर उसके सर से रेशमी स्कार्फ़ हटा कर कहने लगा, "तो आप हैं गुड मार्निंग ?"

"जी हाँ, मैं हूँ गुड मार्निंग।"

दोनों हँसते हुए जीने पर चढ़ने लगे। पहली मंज़िल पर दोनों के कमरे आमने-सामने थे। और उन दोनों के बीच में जान की यादों का मज़ार।

अपने-अपने दरवाज़ों के पास खड़े होकर दोनों ने एक-दूसरे को देखा, फिर ख़ालिद धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा। उसने बहुत प्यार से फूल की तरह लड़की का हाथ अपने हाथों में लेकर गर्म-गर्म होंठ रख दिये। फिर दबे स्वर में पूछने लगा, "नाम क्या है आपका ?"

"बार्बरा।"

"बार्बरा, तुम बहुत खूबसूरत हो ! तुम्हारी आँखें और तुम्हारे होंठ कितने मुकम्मल हैं, जैसे खुदा ने नहीं माइकेल एंजेलो ने तराशे हों !"

ख़ालिद ने बार्बरा के चेहरे को अपनी दोनों हथेलियों में लेकर ऊपर उठाया। उसकी आँखें बंद थीं और बड़ी-बड़ी पलकें गालों पर बिछीं हुई थीं। ख़ालिद ने डूबती हुई आवाज़ में वज़ीफ़ा पढ़ा, "बार्बरा...बार्ब...!"

बार्बरा की लंबी पलकें बड़ी श्रद्धा के साथ ऊपर उठ गयीं। ख़ालिद कहने लगा, "नीली आँखें कहती हैं कि मुझसे मुहब्बत करो, नहीं तो मैं मर जाऊँगी। लेकिन तुम्हारी काली आँखें, जानती हो, मुझसे क्या कह रही हैं। ये कह रही हैं कि मुझसे मुहब्बत करो नहीं तो मैं तुमको मार दूंगी।"

बार्बरा के होंठ और आँखें मुस्करा उठीं। ख़ालिद ने धीरे-से बढ़ कर अपने होंठ बार्बरा के होंठों पर रख दिये। वे दोनों काफी देर तक एक-दूसरे से विदा न हो सके।

"अब मुझे चलना चाहिए," बार्बरा को होश आया तो वह ख़ालिद की बाँहों से निकल कर अपने कमरे में जाने के लिए मुड़ी। ख़ालिद उसे जाते हुए देखता रहा।

"अच्छा बार्बरा, फिर मिलेंगे। गुड नाइट !"

ख़ालिद अभी अपने दरवाज़े तक भी न पहुँचा था कि बार्बरा ने लपक कर उसको रोका। "ख़ालिद याद है, मैंने सुबह तुमसे कहा था ये सलाम आमतौर पर 'गुड मार्निग' से शुरू होकर 'गुड-नाइट' तक पहुँच जाते हैं।"

७

फ्रांसीसी पिकनिक

सुबह बहुत देर से हुई।

ख़ालिद बिस्तर में लेटे-लेटे रात की घटनाओं की कड़ियाँ जोड़ता रहा। कल का दिन उसके जीवन का सबसे सुखद दिन था—ज्यों-ज्यों घटनाओं की कड़ियाँ जुड़ती गयीं उसका आश्चर्य बढ़ता चला गया। मुस्कराहट फैलती चली गयी। कल्पना में फूल खिलते चले गये।

आज वह बार्बरा से फिर मिलेगा। उसे किसी बहुत बड़े रेस्टोराँ में खाने की दावत देगा। रात को कमरे पर उसके साथ नाचेगा। नाच के लिए उन दोनों का क़द आइडियल था। बार्बरा उससे सिर्फ चार इंच छोटी थी। उसका माथा ख़ालिद के होंठों तक पहुँचता था और होंठों से होंठ मिलाने के लिए उसे सिर्फ अपने पंजों के बल खड़े होना पड़ता था। पंजों के बल खड़े होकर असंभव को संभव बनाने वाली लड़की कितनी प्यारी लगती है! फिर वह सोचने लगा कि अगर बार्बरा चाहे तो उसे जीवन का वह अनुभव दे सकती है जो ख़ालिद को आज तक नहीं मिल सका था। यही तो वह क्षण होता है जब कोई औरत किसी मर्द के दिमाग़ पर अपना नाम हमेशा-हमेशा के लिए अंकित कर सकती है। और यह क्षण जीवन में केवल एक बार आता है।

बार्बरा बेवकूफ़ नहीं निकली। ख़ालिद के जीवन के मुखपृष्ठ पर उसने अपना नाम ज्वलंत अक्षरों में लिख दिया। ये दोनों पहले तो एपांइट-मेंट करके मिलते रहे, फिर दरवाज़ा खटखटा कर मिलते रहे और उसके बाद सारे दरवाज़े बीच से हट गये। रोज़ की मुलाक़ात, आदत और जुदाई उलझन बन गयी।

बुड्ढा जान इन दोनों को छिप-छिप कर देखता रहा। दोनों को साथ देख कर उसकी बाँछें खिल उठतीं। ख़ालिद के रूप में उसे कृष्ण दिखायी दे रहा था। वह बार-बार अपने से कहता : 'मैं इस दोनों भोले प्राणियों को कभी अलग न होने दूँगा।'

बुड्ढा जान मन-ही-मन उनके कल्याण के लिए दुआएँ माँगता, 'हे मसीह, तेरे दिल में दुनिया का दर्द है। लेकिन अलग-अलग लोगों के दुखों का भी कोई इलाज है तेरे पास ? बार्बरा और ख़ालिद मेरे बच्चे हैं। तू एक बार मेरे बच्चों को छीन चुका है, लेकिन अब अगर इन बच्चों को कोई नुक़सान पहुँचा तो मैं तेरे दर पर कभी सर न झुकाऊँगा।'

बार्बरा को ख़ालिद की दोस्ती से कुछ असाधारण संतोष मिला—उसे ऐसा लगा कि जैसे यही वह लड़का है जिसके सोते-जागते उसने सपने देखे थे, जिसके बारे में जाने कितना सोचा था, तसवीरें बनायी थीं, पूजा की थी और जीवन का सब कुछ निछावर कर देने की तमन्ना की थी।

दोनों की रातें साथ बीतने लगीं। वे एक बिस्तर में, एक प्याली से चाय पीने लगे। एक चमचे से नाश्ता करने और एक ही गिलास से पानी पीने लगे। ख़ालिद को जीवन में पहली बार आभास हुआ कि घर में औरत का होना कितना सुखद हो सकता है। यह औरत माँ से अधिक महत्त्वपूर्ण और बहन से भी अधिक निकट हो सकती है। बार्बरा उसके जीवन का एक अंग बन कर उसके अस्तित्व पर छा गयी।

शुक्रवार की रात थी। शनिवार और इतवार छुट्टी के दिन होते हैं। बार्बरा ने करवट ली और फिर कहने लगी, "क्यों न हम लोग कल फ्रेंच पिकनिक मनायें ?"

"हाँ, ज़रूर चलो। कल कुछ सैंडविच वग़ैरह बना लो। सुबह-सुबह निकल चलेंगे।"

बार्बरा बड़े ज़ोर से हँसी। "फ्रेंच पिकनिक में घर के अन्दर रहना ज़रूरी होता है।"

ख़ालिद एक प्रश्नसूचक चिन्ह बना हुआ था। "घर के अन्दर रहना ज़रूरी होता है ?"

"फ्रेंच का शब्द उन तमाम जगहों पर इस्तेमाल किया जाता है जहाँ आप परम्पराओं को तोड़ने का इरादा रखते हों। फ्रेंच पिकनिक घर में बैठ कर दरवाज़े बंद करके मनायी जाती है ?"

"बहुत दिलचस्प बात है। हाँ, तो फिर आगे क्या होता है ?"

"हम लोग दो दिन की ज़रूरत की सारी चीज़ें कमरे में रख-कर अड़तालीस घंटे के लिए दरवाज़ा बंद कर देंगे। दुनिया से, दुनिया की ज़रूरतों से, दुनिया के झंझटों से और समाज से अलग होकर कुदरती ज़िंदगी गुज़ारेंगे। और इसके लिए पैदाइशी लिबास ही तन पर सजाना ज़रूरी होता है।"

"पैदायशी लिबास !"

"जब तुम पैदा हुए थे तो कौन-सा लिबास पहने थे ?"

"समझ गया ! समझ गया ! लेकिन क्या मज़ा आयेगा उसमें ?"

"क्यों ? मैं तो समझती हूँ कि काफ़ी दिलचस्प तरीक़ा है पिक-निक मनाने का। और फिर एक बिलकुल नया तजुर्बा करने को किस का जी नहीं चाहता। देखो न, ऐसी पिकनिकों के क़िस्से नाविलों में पढ़ते चले आये हैं। जी चाहता है कि नाविलों के उन पन्नों को ज़िंदगी का आईना बना लें।"

"मुझे तो एतराज़ है।"

"आख़िर तुम्हें किस बात पर एतराज़ है ?"

"मुझे इसकी मुद्दत पर एतराज़ है।"

"मुद्दत के लिए रोने की ज़रूरत नहीं है। हम चौबीस घंटे नहीं तो बारह घंटे में ख़त्म कर देंगे।"

"अरे यह बात नहीं है। यह अड़तालीस की गिनती जो है यह हिन्दुस्तानी ज्योतिषशास्त्र के हिसाब से बहुत मनहूस होती है। इस मुद्दत को बहत्तर घंटे क्यों नहीं कर देतीं।"

बार्बरा ने ख़ालिद की आँखों में शरारत देख ली थी। वह हँसते हुए कहने लगी, "गुरू, मैं हार गयी ?"

ख़ालिद का जी चाहा कि वह कह दे, 'बार्बरा, मैं तुम्हारे साथ सारी

ज़िंदगी एक कमरे में गुज़ार सकता हूँ।' लेकिन ख़ालिद यह दावा कर न सका।

"बार्बरा, पिकनिक की मुद्दत कम-से-कम बारह घंटे बढ़ायी जा सकती है।"

"वह कैसे ?"

"क्यों न यह पिकनिक अभी शुरू कर दी जाये। थोड़ा अभ्यास चाहिए नहीं तो जब दिन का उजाला फैल जायेगा मेरी नज़रें तुम्हारी तरफ़ उठ न सकेंगी।"

बार्बरा कुछ सोचते हुए बोली, "ख़ालिद, तुम ठीक कहते हो। परंपराओं को तोड़ने के लिए काफ़ी अभ्यास की ज़रूरत होती है।"

अड़तालीस घंटे की पिकनिक बार्बरा और ख़ालिद को शारीरिक और मानसिक रूप से एक-दूसरे के इतना निकट ले आयी कि फिर वे एक प्राण और दो शरीर हो गये। कुछ लोग होते हैं जिन्हें जितना पास से देखिये वे उतने ही ज़्यादा अच्छे लगने लगते हैं। बार्बरा ख़ालिद को कुछ ऐसा ही समझने लगी थी। बार्बरा को पिछले इक्कीस साल में इतना प्यार नहीं मिला था जितना उसे इन अड़तालीस घंटों में मिल गया। ज़िंदगी अगर इसी का नाम है तो फिर वह स्वर्ग के बदले भी उसका सौदा करने के लिए तैयार नहीं थी।

बाहर पाला गिर रहा था। सड़कों पर कभी किसी के तेज़ कदमों की आवाज़ उभरती, फिर डूब जाती। इक्का-दुक्का लोग ओवरकोट के कालरों में गर्दन समेटे चले जा रहे थे। भागती हुई कारों की लाल रोशनियाँ किसी दानव की आँखों की तरह चमक रही थीं। कमरे के अंदर आतिशा-दान की आग तेज़ थी और लपटों की लंबी-लंबी ज़बानें चिमनी की तरफ़ ऐसे लपक रही थीं जैसे ऊपर जाने के लिए बेताब हों। जलती हुई लकड़ियाँ चटख़ रही थीं और कभी-कभी कोई चिंगारी विद्रोह करके सर-हद पार आ जाती।

सुलगती हुई इसी आग के सामने ख़ालिद बार्बरा के सीने पर सर रखे जाने क्या सोच रहा था। उस पर तंद्रा-सी छायी हुई थी। बार्बरा उसके बालों की सुगंध में डूबती चली जा रही थी। उसकी लंबी और ख़ूबसूरत

उँगलियाँ ख़ालिद की नंगी पीठ पर धीरे-धीरे नृत्य कर रही थीं। फिर वह दबी-दबी आवाज़ में कहने लगी, "ख़ालिद !"

"डार्लिंग !" ख़ालिद ने अपने जागने का सबूत दिया।

"ख़ालिद, मैं सोचती हूं कि यह बीतता हुआ क्षण बस इसी तरह रोक दिया जाता। जीवन बस इसी परिस्थिति का नाम होता, इसी रफ़्तार का नाम होता तो फिर ज़िंदा रहने को जी चाहता।"

"और फिर मैं शायद पागल हो जाता। यह ठहराव बस पिकनिक के लिए मुनासिब है। इसके बाद तो यह गला घोंट देगा।"

"मुझे तुमसे डर लगने लगा है।"

"मैं इतना डरावना हूँ ?" ख़ालिद उठ कर बैठ गया।

"मुझे तुमसे मुहब्बत होती जा रही है। मुहब्बत में माँगें बहुत बढ़ जाती हैं। और मुझे माँगों से नफ़रत है, चाहे वे मेरी अपनी ही क्यों न हों। ख़ालिद, तुमने कभी मुहब्बत की है ?"

"हाँ, की है।"

"किस से ? कब ?"

"यहाँ से बहुत दूर अपने देश में की थी। हमारी शादी न हो सकी। लेकिन अब भी वह लड़की एक चुभन बन कर मुझमें समायी हुई है। हर मन अपनी पहली मुहब्बत की ओर भागता है। अक्सर यह हुआ है कि मैं किसी दूसरी लड़की के साथ भावनाओं की लहरों में बह गया हूँ और वहाँ यह लड़की, मेरी पहली मुहब्बत उभर कर सामने आ गयी है।"

"अच्छा ही हुआ कि शादी न हो सकी वरना यह सहारा भी न रहता। ये हसीन यादें भी छिन गयी होतीं।"

लंदन में पहली बार ख़ालिद के घाव हरे हो गये। उसने एक क्षण के लिए अतीत को वर्तमान और भविष्य से अधिक उज्ज्वल पाया। बार्बरा उस कहानी का और अधिक ब्योरा मालूम करने के लिए बेचैन थी। उसके दिमाग़ में एक सवाल कचोके लगा रहा था। आख़िर जब उसके धीरज ने जवाब दे दिया तो वह कहने लगी, "उस लड़की से तुम्हारी शादी क्यों न हो सकी ?"

"यह बात आज भी मेरे लिए एक पहेली है। उस लड़की की मम्मी

मुझे बेहद पसंद करती थीं। मुझे अपने घर में देख कर मम्मी को एक अजीब-सी खुशी होती थी, जिसका अंदाज़ा करने के लिए बस उनके चेहरे को देखना काफ़ी था। मेरे दोस्तों का और ख़ुद मेरा ख़याल था कि मम्मी जब सुनेंगी कि मैं उनकी लड़की से शादी करना चाहता हूँ तो उनकी खुशी की कोई हद न रहेगी। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। मम्मी ने जब मेरी इस इच्छा की ख़बर सुनी तो उन को दिल का दौरा पड़ गया। उन्होंने शादी के ख़िलाफ़ एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया। अब उनकी आँखों में मेरे लिए नफ़रत ही नफ़रत थी। मैं मम्मी की इज्ज़त करता था, मुहब्बत करता था। मुझे उनके इस बदले हुए रवैये से ऐसा धक्का लगा कि मैंने उस घर को हमेशा के लिए छोड़ दिया।"

"लेकिन उस लड़की ने विरोध क्यों नहीं किया?" बार्बरा ने लड़की के स्वभाव की थाह लेने की कोशिश की।

"हमारे देश के एक सभ्य मध्यम वर्ग के परिवार की लड़की जो कुछ कर सकती है उसने किया। ज़हर खाने की धमकी दी। रोयी, पीटी। घर से भाग निकली। लेकिन हमारे यहाँ समाज के नाखून बहुत लंबे, बहुत ज़हरीले होते हैं। वह फिर पिंजरे में बंद कर दी गयी। माँ-बाप ने बीमारी के लिए शादी की दवा सुझायी। मुझसे नहीं, किसी और से। दवा ने काम न किया। चहकती हुई चिड़िया अपने नये पिंजरे में ख़ामोश हो गयी।"

ख़ालिद पर एक क्षण के लिए ख़ामोशी का दौरा पड़ा। वह दूर बहुत दूर कुछ देखता रहा। आग सुलगती रही। चिंगारियाँ फुलझड़ी के फूलों की तरह नाचती हुई हवा में घुलती रहीं। ख़ालिद की आँखें झिलमिला रही थीं। वह कहने लगा—

"बार्बरा, हिंदुस्तानी और यूरोपियन मुहब्बत में बड़ा फ़र्क होता है। हम दोनों इश्क़ की उस मंजिल पर जिस्म का सहारा लिये बिना पहुँचे थे। ये होंठ आज भी प्यासे हैं, उस वक्त भी प्यासे थे। ये उस आफ़ते-जाँ के होंठों तक कभी न पहुँच सके। इसीलिए कहता हूँ कि मुहब्बत की मोहर लगाने के लिए सिर्फ़ होंठों का मिलाप ही काफ़ी नहीं होता।"

ख़ालिद देर तक अतीत में घूमता रहा, बार्बरा चुपचाप जाने क्या सोचती रही। आतिशदान की भड़कती हुई आग का अधिकांश भाग राख

बन कर नीचे गिर चुका था और कमरे में ठंडक धीरे-धीरे प्रवेश कर चुकी थी।

ख़ालिद फ़र्श पर से उठा और दोनों हाथ फैला कर धीरे से बार्बरा को गोद में उठा लिया। दो शरीरों की गरमी मौसम का मुक़ाबला करने के लिए काफ़ी थी। वह बड़ी देर तक बार्बरा को गोद में उठाये रहा। फिर उसके रूप में खोया रहा। फिर कहने लगा, "बार्बरा, तुम फूल की तरह नाज़ुक हो ! मुझे डर लगता है कहीं तुम मेरे हाथों में टूट न जाओ।"

"डार्लिंग, तुम मुझे छोड़ न देना। मैं क़सम खाकर कहती हूँ तुम्हारे बिना मेरा दम निकल जायेगा।"

"हम दोनों साथ मरेंगे।" और यह कहते हुए ख़ालिद ने बार्बरा को पलंग पर लिटा दिया।

सुबह बहुत जल्दी आ गयी। या फिर बार्बरा की रात ही नहीं हुई थी। ख़ालिद ने जब आँख खोली तो बार्बरा चाय बना कर उसके सिरहाने की छोटी मेज़ पर सजा चुकी थी। लेकिन वह फिर सो गया। बार्बरा चुपचाप बैठी उसे देखती रही। फिर उसकी नजरें खिड़की से गुज़र कर लंबी सड़क पर भटकती रहीं। सड़क के किनारे लगे हुए पेड़ों पर लाल फूल बे-रंग थे। बर्फ़ीली हवाएँ गिरे हुए पीले पत्तों को उड़ाती फिर रही थीं। बार्बरा पीले पत्तों का नृत्य देखती रही। बेजान पत्ते पेड़ से अलग होकर कितने दिन अपना अस्तित्व बनाये रख सकते हैं ! बार्बरा सोचने लगी—ख़ालिद का पिछला प्रेम इन पीले पत्तों से कितनी समानता रखता है ! वह भी मर चुका है, दम तोड़ चुका है। एक खरोंच बाक़ी है जिसे समतल होने में समय लगेगा। लेकिन दिल के एक कोने से आशंकाएँ भी सर उठा रही थीं।

अगर ख़ालिद का यह प्रेम अभी तक बाक़ी है तो फिर बार्बरा इस वक्त यहाँ क्या कर रही है। वह इस कमरे में अकेली ख़ालिद के साथ क्यों बंद है ? उसने अपने सारे कपड़े उतार कर पैदाइशी लिबास क्यों पहन रखा है ?

ख़ालिद ने करवट ली तो बार्बरा के विचारों का क्रम टूट गया। वह मुस्करायी, "गुड मार्निंग !"

"मुझे ये सलाम अच्छे नहीं लगते क्योंकि ये 'गुड मार्निंग' से शुरू

होकर 'गुड नाइट' तक पहुँच जाते हैं।" दोनों हँस पड़े।

बार्बरा ने ख़ालिद के लिए चाय की एक प्याली बनायी, फिर कहने लगी, "सुबह-सुबह झूठ नहीं बोलना चाहिए। एक बात पूछूँ ?"

"यह सच बोलने की नसीहत इसीलिए की गयी है ?"

"ख़ालिद, वह लड़की यक़ीनन बहुत खूबसूरत होगी ! हिंदुस्तानी लड़कियाँ बहुत खूबसूरत होती हैं !"

ख़ालिद ने बार्बरा को एक झटके से अपने पास खींच लिया।

"हाँ, वह भी खूबसूरत थी लेकिन तुम...तुम सचमुच लाजवाब हो। देखें, सुबह तड़के तुम्हारे होंठों का मज़ा कैसा होता है।"

बार्बरा ने अपने को ख़ालिद की पकड़ से निकाल लिया।

"बार्बरा, खिड़की के सामने यह जो पेड़ लगा है उसको मैंने बारहा फूलों से लदा देखा है। लेकिन पतझड़ में जब यह नंगा हो जाता है तो जाने क्यों यह मुझे कहीं ज़्यादा हसीन और दिलकश लगता है।"

"हाँ, कुछ जिस्म नंगे अच्छे लगते हैं।"

"अच्छे नहीं, बहुत अच्छे लगते हैं," ख़ालिद ने बार्बरा को घसीटने की कोशिश की, लेकिन वह फिसल कर निकल गयी। "तुम्हारा अपने जिस्म के बारे में क्या ख़याल है ?"

"अभी तो ठीक है।"

"अभी तो से क्या मतलब ?"

"मतलब यह है कि फूल थोड़े दिन के लिए खिलते हैं। जब यह पेट ऐसे फूल जायेगा तो मैं लड़की से औरत बन जाऊँगी।"

"बच्चे पाल सकती हो?"

"मुझे दूसरों के बच्चे अच्छे लगते हैं, अपने तो लूट लेंगे।"

"कितने बच्चे पाल सकती हो ?"

"तुम्हारे हों तो दस।"

"तब तो तुमको दस साल तरसना होगा। मैं तो एक बच्चे पर पागल हो जाऊँगा। तुम्हें छोड़ कर भाग खड़ा हूँगा।"

बार्बरा मुस्कराती हुई आगे बढ़ी और ख़ालिद की गोद में बैठ कर गले में बाँहें डाल दीं। "ख़ालिद, मैं तुमको भागने नहीं दूंगी। इस तरह

से जकड़ लूँगी।"

बार्बरा की पकड़ मज़बूत हो गयी। लेकिन ख़ालिद की हृष्ट-पुष्ट भुजाएँ जब कसना शुरू हुईं तो बार्बरा की पकड़ ढीली हो गयी। होंठ से होंठ मिला कर ख़ालिद ने बार्बरा को धीरे से एक तरफ़ गिरा दिया। फिर खुद उठ कर अपनी दोनों बाहों के सहारे इस तरह बैठ गया कि बार्बरा उनके बीच लेटी हुई थी। उसकी आँखों ने निमंत्रण दिया और ख़ालिद ने छः इंच की दूरी से बार्बरा की आँखों में डूबना चाहा लेकिन बर्बरा के मोटे चुंबकीय होंठों ने उसे अपनी ओर खींच लिया। काफ़ी देर के बाद वह एक लंबे, गर्म और लिसलिसे प्यार से कुछ क्षणों के लिए उभरा जैसे मछली साँस लेने के लिए बाहर आयी हो।

"बार्बरा, मुझे मोटे होंठ बहुत अच्छे लगते हैं। कम-से-कम ये पकड़ में तो आते हैं।"

फिर एक तूफ़ान उठा। कड़कड़ाती सर्दियों का मौसम आन की आन में बदल गया। वे जो एक-दूसरे की आँखों में न डूब सके थे पसीने में डूब गये।

जैसे पहाड़ों से गिरनेवाली नदी मैदानी इलाक़े में पहुँच गयी हो, ख़ालिद को शांति का आभास हुआ। मन स्थिर हुआ तो उसने अस्तित्व के दर्शन की किताब उठा ली। बार्बरा उठ कर काफ़ी बनाने में व्यस्त हो चुकी थी। पनीर की प्लेट उसने ख़ालिद के सिरहाने रख दी। वह उसकी पतली-पतली परतें काट-काट कर खाता रहा, पढ़ता रहा। बार्बरा ने हेलेन श्यीरो की धुन छेड़ी जिसे सुन कर ख़ालिद के विचार फिर बदले। उसकी प्यार में चूर नज़रें बार्बरा के शरीर के हर स्पंदन को घेरे हुए थीं। वह सोचता रहा, फिर मनोविज्ञान के डाक्टरों की तरह कहने लगा, "बार्बरा, मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाह रहा हूँ जिसका जवाब देने के लिए मैं तुमको सिर्फ़ तीन सेकंड दूँगा और अगर तीन सेकंड से ज़्यादा तुमने सोचा तो फिर जवाब देने की ज़रूरत नहीं। बोलो, मंजूर है?"

बार्बरा हँसते हुए कहने लगी, "मंजूर है।"

"शादीशुदा ज़िंदगी के बारे में कोई क़िस्सा, कोई चुटकुला, कोई वाक़या सुनाओ।"

बार्बरा ने मुश्किल से दो सेकंड सोचा होगा, फिर कहने लगी, "हाँ, एक वाक़या है जो शायद मैं कभी भूल न सकूँ।"

"क्या है, फ़ौरन सुनाओ।"

"शीला से तुम मिले हो। उसकी माँ यह क़िस्सा हम लोगों को सुनाया करती थी। वह जब कालेज में पढ़ती थी तो अपनी एक सहेली के साथ मिल कर उसने एक छोटा-सा फ्लैट ले लिया था। दोनों के ब्वाय फ्रेंड आया करते थे और ज़िंदगी खुशियों से भरपूर थी। एक दिन उसकी सालगिरह थी और उसके ब्वाय फ्रेंड ने बड़े-से होटल में बड़ी-सी पार्टी देने का वादा किया था। वह बेचारी सारा दिन सजती-बनती रही। बाज़ार जाकर एक बहुत क़ीमती जोड़ा ख़रीद कर लायी। नये ढंग के बाल बनवाये और हर बात पर अपनी सहेली का मशविरा लेती रही। शाम को जब ब्वाय फ्रेंड ने नीचे से हार्न बजाया तो शीला की माँ सजी-बनी भागती हुई नीचे पहुँच गयी। ब्वाय फ्रेंड ने उसे बड़े ग़ौर से देखा, फिर पूछने लगा, 'आख़िर आज तुम्हें क्या हो गया है।'

—'आज मेरी सालगिरह है और तुम्हारे साथ जाने के लिए यह सब कुछ किया है।'

—'लेकिन यह सब कुछ बकवास है। यह फ्राक मुझे पसंद नहीं है। और तुम्हारे बालों का यह स्टाइल, ऐसा लगता है जैसे तुम पागल हो गयी हो। तुम फ़ौरन जाओ और अपना हुलिया बदल कर पाँच मिनट में नीचे आ जाओ।'

"वह बेचारी पहले तो समझ न सकी। चुपचाप अपने ब्वाय फ्रेंड की ओर देखती रही, मानो कह रही हो, सच-सच बताओ।

—'मैं ठीक कह रहा हूँ। तुम जाओ और अपना हुलिया बदल कर आओ।'

"शीला की माँ भागती हुई ऊपर गयी और रोज़मर्रा के कपड़ों में से एक फ्राक निकाल कर बदली। पाँच घंटों में जो केश-भूषा तैयार की गयी थी वह कंघे के कुछ ही मज़बूत झटकों ने दो मिनट में बराबर कर दी।

उसकी सहेली उसे बार-बार समझाती रही कि तुम्हें उल्टे अपने ब्वाय फ्रेंड को डाँट देना चाहिए। ऐसी बेइज़्ज़ती मैं कभी बर्दाश्त नहीं कर

सकती। तुम्हारी अपनी भी तो कोई पसंद होनी चाहिए, वग़ैरह-वग़ैरह। लेकिन शीला की माँ आईने के सामने खड़ी होकर मुस्कराती रही और फिर भागती हुई नीचे पहुँच गयी।

"इस घटना को बहुत दिन बीत गये, कई साल बीत गये। ज़िंदगी के एक मोड़ पर दोनों सहेलियाँ फिर मिलीं और जब एक-दूसरे का हाल-चाल पूछा तो मालूम हुआ कि शीला का विवाहित जीवन बहुत सुखद है और उसकी सहेली को एक बार तलाक़ हो चुका है और दूसरे तलाक़ का केस अदालत में चल रहा है।"

क़िस्सा सुनकर ख़ालिद बोला, "यह वाक़या तो मुझे सुनाना चाहिए।"

"अगर तुमने सुनाया होता तब भी मुझे ज़िंदगी भर याद रहता।" बार्बरा ने जवाब दिया।

ख़ालिद बड़ी देर तक जाने क्या सोचता रहा। उसे अपने सवाल का जवाब मिल चुका था। और बार्बरा परीक्षा में सफल हो चुकी थी। फिर वह बार्बरा से कहने लगा, "ज़रा यहाँ आओ, मेरे पास।"

बार्बरा कुछ समझ न सकी। वह चुपचाप ख़ालिद के पास आ गयी। ख़ालिद ने उसकी ठोड़ी पर हाथ रख कर चेहरे को ज़रा-सा ऊपर उठाया, फिर कहने लगा, "कहीं तुम वही तो नहीं हो ?"

"कौन ?"

"जिसको मैं इतने दिनों से खोज रहा था।"

बार्बरा हँस पड़ी। फिर बोली, "एक बात बताओगे ? लेकिन सही-सही बतानी होगी।"

"मैं झूठ कभी नहीं बोलता," ख़ालिद ने दावा किया।

बार्बरा चुपचाप ख़ालिद की तरफ़ देखती रही। ख़ालिद की उलझन बढ़ रही थी। आख़िर कहने लगा, "पूछती क्यों नहीं हो ?"

"डर लगता है कहीं सच से मेरा दम न निकल जाये। पूछना यह था कि हम दोनों ने अभी जो तूफ़ानी क्षण गुज़ारा है उसमें तुम्हारे साथ कौन था—मैं या तुम्हारा पहला इश्क़ ?"

ख़ालिद ने क़हक़हा लगाया। किताब हाथ से रख कर उसने बार्बरा

को अपनी गोद में खींच लिया। "बार्बरा, तुम्हारे होते तो खुदा भी याद नहीं आता।"

"डार्लिंग, बस इन्हीं दोनों को मौजूद नहीं रहना चाहिए।" बार्बरा के होंठों पर विजय की मुस्कराहट थी। लेकिन उसी क्षण उदासी के बादल उतर आये। वह ख़ालिद की गोद से निकल कर गुमसुम बैठ गयी। ख़ालिद ने उसकी परेशानी को महसूस किया। फिर उसके गले में बाँहें डाल कर कहने लगा—

"ऐसे मौक़ों पर उदास नहीं होना चाहिए। शगून अच्छा नहीं होता। क्या सोच रही हो ?"

"ख़ालिद, मैं सोच रही थी कि अगर कुछ हो गया तो ?" वह निरंतर शून्य में देख रही थी। ख़ालिद एक दम खड़ा हो गया और फिर आश्चर्य से पूछने लगा, "बार्बरा, क्या ऐसा हो सकता है ?"

"होने के बारे में तो कुछ कहा नहीं जा सकता। लेकिन मान लो कि अगर कुछ हो गया तो क्या होगा ?"

ख़ालिद बहुत गंभीर था। उसके चेहरे पर चिंता स्पष्ट झलक रही थी। "होगा यह कि किसी डाक्टर की मदद लेनी पड़ेगी। हम लोगों के हालात बिल्कुल ऐसे नहीं हैं कि बच्चे पाल सकें।"

"बच्चे पालने के लिए कैसे हालात की ज़रूरत होती है ?" बार्बरा ने सवाल किया।

ख़ालिद कुछ ऊँचे स्वर में कहने लगा, "कैसे हालात की ज़रूरत होती है यह तो मुझे नहीं मालूम है। यह मैं ज़रूर जानता हूँ कि मेरे हालात जो हैं उनमें बच्चों के लिए कोई जगह नहीं है।"

ख़ालिद का उत्तर बार्बरा को संतुष्ट न कर सका, लेकिन वह एक निर्णायक भाव से उठी। वह मुस्करायी और फिर ख़ालिद के गले में झूल कर उसकी नंगी गर्दन पर सैकड़ों प्यार निछावर कर दिये।

८

यह कैसी दुनिया है, यह कैसा वेश्याघर है !

बार्बरा शराब के नशे में हो जाने वाले पाप की पैदावार थी। माँ-बाप खुद एक-दूसरे को न चाह सके तो उसे मुहब्बत कहाँ से मिलती ? टेलीविज़न सेट के सामने पली-बढ़ी लड़की जब जीवन की ठोस वास्तविकताओं से टकराती है तो उसे पलायन के अलावा और कहीं शरण नहीं मिलती। ज़रा-सा लगाव, ज़रा-सी सहानुभूति, ज़रा-सा प्यार उसकी आँखों में नमी ले आता है और ज़रा-सी मुहब्बत उसे किसी के कंधे पर सर रख कर रोने पर मजबूर कर देती है। ख़ालिद के पास लगाव भी था, मुहब्बत भी थी और जनम-जनम की प्यास भी। दोनों को ऐसा महसूस हुआ जैसे एक-दूसरे की ज़रूरत को पूरा करने के लिए ही पैदा हुए हैं।

बार्बरा से मिल कर ख़ालिद के जीवन की बहुत बड़ी शून्यता भर गयी थी। उसने अपने जीवन में संतुलन-सा अनुभव किया। उसके अव्यवस्थित जीवन में जाने कहाँ से दबे-पाँव सुरुचि का प्रवेश हो गया था !

ख़ालिद को जीने का एक सहारा मिला तो वह अपने मित्रों की परिधि से एकदम अलग हो गया। उसका रंगमंच से इस तरह ग़ायब हो जाना सभी मित्रों के लिए चिंता का विषय बन गया। बर्नी जब इधर-उधर फ़ोन करके हार गया तो उसने आनन्द से ख़ालिद का हाल मालूम करने कोशिश की। लेकिन आनन्द को जीवन के इस मोर्चे का काफ़ी अनुभव था। उसको लगा कि मित्रों की इस चिंता का कारण उनकी अनुभवहीनता है।

रात के कोई दस बजे होंगे कि ख़ालिद के टेलीफ़ोन की घंटी बजी। आनन्द की आवाज़ तीन पाइंट बियर की पुष्टि लिये हुए थी। वह कहने लगा—

"ख़ालिद, यह फ़ोन मैं इसलिए कर रहा हूँ कि आजकल तुम्हें मेरे मशविरे की ज़रूरत होगी। मुझे डर यह है कि कहीं तुम्हारा दम न निकल जाये पहले इश्क़ में।"

"लेकिन—लेकिन तुमको कैसे पता चला?" ख़ालिद ने घबरा कर पूछा।

"देखो ख़ालिद, मैं चार हल्के-फुल्के और तीन जानलेवा इश्क़ के मोर्चों से ज़िंदा-सलामत निकल आया हूँ। लंदन में अगर आदमी पहले इश्क़ से बच कर निकल आये तो बाद में उसे ऐसा महसूस होता है जैसे किसी दुर्घटना से बाल-बाल बच कर निकल आया हो। बहरहाल, तुम फौरन मुझसे मिलो।"

ख़ालिद हैरान था। कहने लगा, "मेरा ख़याल था कि तुमने कभी इश्क़ नहीं किया है, आनन्द!"

आनन्द दूसरी तरफ़ मुस्कराया। "तुम्हारा यह भी तो ख़याल है कि इश्क़ में आदमी बदहाल हो जाता है। खोया-खोया रहने लगता है। बाल उलझ जाते हैं और उसकी पूरी शख्सियत 'एबनार्मल' हो जाती है। क्यों, है न यही ख़याल?"

"तुम किसी हद तक ठीक हो," ख़ालिद ने जवाब दिया।

"मैं बड़ी हद तक ठीक हूँ। एक बात और याद रखना—लंदन में शादी करना सबसे आसान काम है और शादी से बच निकलना सबसे मुश्किल—बाँध लो गिरह में।"

"बाँध लिया गिरह में—अच्छा यह बताओ फ़ोन क्यों किया है?"

"फ़ोन इसलिए किया है कि कल हमारे यहाँ बोतल पार्टी है। जेन चाहती है कि तुम भी अपनी 'फ़ेमिली' के साथ शरीक़ हो।"

ख़ालिद ने कहा, "अरे भाई फ़ेमिली किसके पास है?"

"फ़ेमिली से मतलब है एक अदद गर्ल फ्रेंड और दो अदद बोतल, अब समझे?"

"आनन्द, मैं एक और बात पूछना चाहता था। तुमको बार्बरा के बारे में कैसे पता चला?" ख़ालिद ने सवाल किया।

"बार्बरा को मैं जानता हूँ। और यह सुन कर तुम्हें ताज्जुब नहीं होना चाहिए।"

ख़ालिद हैरान था। लेकिन आनन्द बार्बरा को नहीं जानता था। यह दूसरी बात है कि वह लंदन की हर लड़की को बार्बरा ही समझता था। लंदन में फैली हुई तनहाई, दिलों में उतरी हुई उदासी और चारों ओर प्यार का अकाल—इन तीनों हक़ीक़तों से वह भली-भाँति परिचित था। उसे यह बात भी मालूम थी कि किसी सूरत-शकलवाले और सभ्य हिंदुस्तानी लड़के का लंदन में इतने दिन अकेले रहना मुमकिन नहीं है। आनन्द ने ख़ालिद की लंबी ग़ैर-हाज़िरी का मतलब ठीक ही समझा था। नयी दोस्ती में कहने-सुनने के लिए बहुत-सी नयी बातें होती हैं।

दूसरे दिन आनन्द के घर पर मित्रों का एक अंतर्राष्ट्रीय जमघट था। सभी लोग अपनी-अपनी 'फेमिली' के साथ आये थे। ख़ालिद और बार्बरा के अलावा जेन की दोस्त मोना अपने फ्रांसीसी दोस्त आंद्रे को लेकर आयी थी। तीन कमरों में लोग बँटे हुए थे और पृष्ठभूमि में बहुत ही धीमे सुरों में संगीत था। ख़ालिद को बर्नी की प्रतीक्षा थी लेकिन वह अभी तक नहीं आया था। ख़ालिद ने आनन्द से पूछा भी लेकिन आनन्द कहने लगा, "फेमिली नहीं होगी।"

ख़ालिद एक क्षण के लिए चुप हो गया। वह सोचने लगा कि आनन्द का ख़याल सही हो सकता है।

इतने में एक खूबसूरत, भरे-भरे बदन, सुतवाँ नाक और पतले होंठ वाली लड़की सामने आकर खड़ी हो गयी। जेन कहने लगी—

"ख़ालिद, यह है मेरी दोस्त मोना और यह है उसका साया आंद्रे।"

मोना हँसते-हँसते कहने लगी, 'ओ-ल-ला, मेरा साया इतना लंबा-चौड़ा कैसे हो सकता है !"

इतने में बार्बरा भी उसी तरफ़ आ गयी। जेन ने आंद्रे से परिचय कराते हुए कहा, "और यह है बार्बरा, ख़ालिद की दोस्त।"

आंद्रे ने मिलाने के लिए अपना हाथ बार्बरा की ओर बढ़ा दिया। "बड़ी खुशी हुई आपसे मिल कर।" आंद्रे की आँखों में शरारत थी। बार्बरा और

आंद्रे ने मिल कर क़हक़हा लगाया और बार्बरा ख़ालिद से कहने लगी, "आंद्रे को मैं जानती हूँ।"

"हम दोनों बहुत साथ रहे हैं।" आंद्रे ने हँसते हुए भोलेपन से कहा।

ख़ालिद सोचने लगा कि यह साथ किस क़िस्म का था। बार्बरा ने आज तक आंद्रे की चर्चा क्यों नहीं की? लेकिन जल्दी ही ख़ालिद ने अपने बहकते हुए विचारों पर क़ाबू पा लिया। आंद्रे और बार्बरा एक-दूसरे से मिल कर बहुत खुश थे, जैसे मुद्दतों के बिछड़े मिल गये हों। आंद्रे शरारत से बोला, "ख़ालिद, इससे होशियार रहना। बहुत ही ख़तरनाक लड़की है।"

बार्बरा ने आंद्रे को एकदम डाँटा, "फिर तुमने अपना बड़ा-सा मुँह खोल कर छोटी-सी बात की। ख़ालिद इसकी बातों में न आना।"

"ख़तरनाक से मेरा यह मतलब है कि एक बार जो बात इसके दिमाग़ में चली गयी वह निकलती नहीं है।"

"लेकिन आंद्रे यह तो अच्छी बात है," ख़ालिद बोला।

"अच्छी बात तो ज़रूर है, लेकिन मान लो कि कोई ग़लत बात दिमाग़ में चली गयी...।" आंद्रे का वाक्य पूरा नहीं हुआ था कि सब लोग क़हक़हा मार कर हँस पड़े।

आंद्रे फिर बार्बरा को संबोधित करके बोला, "कोई तीन साल के बाद तुमसे मुलाक़ात हुई है और अब तुम ख़तरनाक हद तक ख़ूबसूरत हो गयी हो।"

"और इसीलिए मैं इनके साथ हूँ," बार्बरा अभी बोलने भी न पायी थी कि ख़ालिद बीच में कूद पड़ा।

मेहमानों का बँटवारा अपने आप ही हो गया। रेडियोग्राम वाले कमरे में संगीत और नृत्य के रसिया जमा हो गये। दूसरा कमरा छोटा था और ढकी-छुपी बिजली की रोशनी ने कमरे में उजाले से ज़्यादा अँधेरा फैला रखा था, जहाँ कुछ जोड़े उजाले से भाग कर अँधेरे में शरण लेने के लिए आ गये।

ख़ालिद, बार्बरा, मोना और आंद्रे तीसरे कमरे में आनन्द और जेन के साथ थे। मोना बार्बरा से कुछ इस तरह घुल-मिल कर बातें कर रही थी जैसे दोनों एक-दूसरे को मुद्दत से जानते हों। आनन्द ने अभी कुछ सेकंड

पहले माचिस की कई तीलियाँ अपने पाइप पर नष्ट की थीं और अब धुएँ के गहरे बादल उसके चेहरे को छुपाये हुए थे। ख़ालिद के होंठों के बीच एक ताज़ा सिगरेट झूल रही थी और हाथ लाइटर पर था, जिसे देख कर आनन्द कहने लगा—

"ख़ालिद, तुमने अभी थोड़ी देर पहले पाइप जलाने के लिए अपना लाइटर मुझे पेश किया था। ऐसा कभी न करना।"

"क्यों, खैरियत तो है !" ख़ालिद ने मुस्कराते हुए पूछा।

"लाइटर से सिर्फ़ सिगरेट जलायी जाती है।" आनन्द 'सिर्फ़' के शब्द पर ज़ोर देते हुए बोला।

"मैंने सैकड़ों लोगों को गैस के लाइटर से पाइप जलाते हुए देखा है," ख़ालिद ने विश्वास के साथ कहा।

"तुमने हज़ारों लोगों को बीच सड़क पर पीक थूकते हुए भी देखा होगा। इसका यह मतलब तो नहीं हुआ कि वे लोग ठीक करते हैं। इसी तरह लाइटर से पाइप जलाने वाले आमतौर पर जाहिल या अनाड़ी होते हैं जिनको पाइप पीने के आदाब नहीं मालूम होते हैं। होता क्या है कि जब आप लाइटर से पाइप जलाते हैं तो गैस या पेट्रोल से निकली हुई लपट तंबाकू पर अपना हल्का-सा असर छोड़ जाती है। और पारखी आदमी इस चीज को कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

आनन्द की बात सुन कर आंद्रे से चुप न रहा गया। वह कहने लगा, "तुम लोग परंपराओं के गुलाम हो। इन्हीं छोटी-छोटी बूर्जुआ नज़ाकतों ने ज़िंदगी को उलझा कर रख दिया है। जलाने दो, जिसका जिससे जी चाहे जलाये। इस पर पाबंदियाँ लगाने की क्या ज़रूरत है ?"

"बिलकुल पाबंदी नहीं है। आपका जैसे जी चाहे जलाइये। अपका जहाँ जी चाहे थूकिये। पूरी आज़ादी है।" ख़ालिद के स्वर में व्यंग का पुट था। फिर वह आनन्द से पूछने लगा—

"और सिगार के अनाड़ियों को कैसे पहचाना जाता है ?"

"वह तो बहुत आसान काम है। नंबर एक, वह सिगार को लाइटर से जलाता है और नंबर दो, उसके सिगार के पिछले हिस्से में ट्रेड मार्क का कागजी छल्ला आख़िरी वक्त तक लगा रहता है। यह बिलकुल ऐसा ही है

जैसे सूट के अस्तर पर लगा हुआ दर्ज़ी का ट्रेड मार्क बाहर जेब के ऊपर सिलवा ले।"

आनन्द की नज़र लड़कियों पर पड़ी जो अभी तक अपनी बातों में व्यस्त थीं। उसने पार्टी के मर्दाने और ज़नाने के विभाजन को ख़त्म करने की कोशिश की, "मोना हमारे यहाँ अगर कोई कानाफूसी करे तो उसे असभ्य आदमी समझा जाता है।"

"और हमारे यहाँ अगर दो आदमी किसी अनज़ानी भाषा में बातें शुरू कर दें तो उन्हें असभ्य आदमी समझा जाता है।" मोना का यह सहज व्यंग बड़े निशाने पर बैठा। ख़ालिद को अपनी ग़लती का आभास फौरन हुआ। इस बदतमीज़ी का नमूना उसने यहाँ की बहुत-सी महफ़िलों में देखा था। लेकिन आनन्द इन बातों की ज़्यादा परवाह नहीं करता। अपनी कमज़ोरी की ओर से आँखें मूँद लेना इसकी पुरानी आदत थी। ख़ालिद ने सबकी समान भाषा में एक सवाल उठाया—

"आंद्रे, क्रिस्टीन कीलर ब्रिटेन के नैतिक पतन की प्रतीक है। अगर क्रिस्टीन कीलर और वार्ड की घटना फ्रांस में होती तो क्या वहाँ भी इतना ही बड़ा हंगामा उठ खड़ा होता ?"

"तुमने दो सवाल किये हैं। पहला सवाल, यानी क्रिस्टीन कीलर को प्रतीक बनाने पर मुझे एक क़िस्सा याद आया। ट्राफलगर स्क्वायर पर नेल्सन की स्टैच्यू देखी है ?"

"देखी है।"

"एक जर्मन टूरिस्ट ने जब उस स्टैच्यू को देखा तो अपने अंग्रेज़ दोस्त से पूछने लगा—यह कौन है ? अंग्रेज़ दोस्त बड़े गर्व से कहने लगा—अरे तुम इनको नहीं जानते ? आज ब्रिटेन में जो कुछ तुम देखते हो उसकी नींव, उसका आधार, उसका जन्मदाता यही आदमी था। जर्मन टूरिस्ट बड़े भोलेपन से बोला—नहीं, यह कैसे हो सकता है ? इतना बड़ा आरोप तुम एक आदमी के सर नहीं थोप सकते हो।"

सबने मिल कर एक क़हक़हा लगाया। फिर आंद्रे कहने लगा, "और तुम्हारे दूसरे सवाल का जवाब यह है कि फ्रांस में शौहरों का अपनी बीवी के अलावा किसी दूसरी औरत से संबंध होना कोई ऐसी बात नहीं है जिससे

सरकार की नींवें हिल जायें। हमारे यहाँ तो वैवाहिक जीवन भी इस बात से प्रभावित नहीं होता।"

मोना किंचित कटुता से बोली, "आंद्रे, अभी तुम्हारी शादी नहीं हुई है और तुम्हारा मन अभी से बेईमानी की ओर चलने लगा है। जब ऐसी मनोवृत्ति हो तो एक अच्छे, सुखी और समृद्ध परिवार की कल्पना ही करना ग़लत होगा।"

"मोना, जो बात खुल्लमखुल्ला सबके सामने ईमानदारी से कह दी जाये वह बेईमानी कभी नहीं हो सकती।" आंद्रे ने समझाने की कोशिश की।

बार्बरा से चुप न रहा गया। उसने भी बढ़ कर बातचीत का एक सिल-सिला पकड़ लिया। "क्रिस्टीन कीलर कांड का सारा दोष अख़बारों के सर जाता है। किसी की भी निजी ज़िंदगी में झाँक कर देखा जाये तो कुछ घिनौने पहलू ज़रूर मिल जायेंगे। और किसी की भी आवारागर्दी को अगर इतनी पब्लिसिटी दे दी जाये तो वह आप ही आप राष्ट्रव्यापी स्कैंडल बन जायेगी।"

आनन्द ने चुप्पी तोड़ी, "मुझे कीलर और डाक्टर वार्ड से हमदर्दी है। यह स्कैंडल असल में इंगलैंड के उच्च वर्ग की नैतिकता का जनाज़ा है। यह समाज की ख़राबी है जहाँ कीलर जैसी लड़कियों को पंद्रह साल की उम्र में यौन-अनुभव हो जाते हैं और फिर इक्कीस साल की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते वे संभोग और व्यभिचार में अभ्यस्त हो जाती हैं।"

ख़ालिद का प्राच्य-प्रेम जागा और वह आंद्रे को संबोधित करके कहने लगा, "यही वह जगह है जहाँ हम पूरब के लोग अपनी परंपराओं का सम्मान करने लगते हैं। यूरोप के समाज की यह ख़राबी है कि यहाँ लड़कों और लड़कियों को कम उम्र में यौन-अनुभव हो जाता है और यह बताने की ज़रूरत नहीं कि यहाँ की ८० फ़ीसदी औरतों की शादी उस समय होती है जब वे गर्भवती हो चुकी होती हैं।"

मार्गरेट से चुप न रहा गया। "लेकिन ख़ालिद इसमें दोष किसका होता है। और फिर यह कि अगर ऐसी ख़तरनाक स्थिति में ८० फ़ीसदी लोग शादी कर लेते हैं तो यह तो बड़ी अच्छी बात है वरना ये अभागी

लड़कियाँ ज़हर खाकर मर जायें।"

ख़ालिद पहले तो चुपचाप बार्बरा के चेहरे का निरीक्षण करता रहा फिर कहने लगा, "मैं तो ऐसी सूरत में शायद कभी शादी न करूँ। यह तो सरासर ब्लैकमेलिंग है। मुझे अगर ऐसी लड़की से शादी करनी ही पड़े तो मैं पहले उसका एबॉर्शन कराऊँगा और फिर धूमधाम से शादी कर लूँगा।"

आनन्द बीच में आ गया। "लेकिन एबॉर्शन के लिए हर लड़की तैयार नहीं हो सकती। उसके दुष्परिणाम बहुत दूरगामी होते हैं।"

"तो फिर ये सारे ख़तरे रात बिताने से पहले सोचने चाहिए।"

"किसको सोचने चाहिए ? तुमको या लड़की को ? हम पूरब के लोगों की बस यही एक कमज़ोरी है जो खुद उनको कभी नज़र नहीं आती। मज़ा लूटेंगे सारी रात और अगर कोई बात हो गयी तो सारा दोष लड़की पर रख कर उठ खड़े होंगे। अरे बेवकूफ़ आदमी, अगर तुमको अपनी परंपराएँ इतनी ही प्यारी हैं तो फिर पाँच हज़ार मील की यात्रा करके यहाँ आने की क्या ज़रूरत थी ? तुम्हारी परंपराएँ अगर अच्छी हैं तो उन पर चलते क्यों नहीं ? और ख़ालिद साहब, आप यक़ीन जानिये यही परंपराएँ हैं जो आपके पूरे देश में जिंसी भूख को, काम-वासना को महामारी की तरह फैलाये हुए हैं।"

"जिंसी भूख के लिए मुल्क और क़ौम की क़ैद नहीं लगानी चाहिए। यह चीज़ हर जगह पायी जाती है," ख़ालिद बोला।

आनन्द बोलता रहा : "तुम्हारे यहाँ जिंसी भूख ताऊन बन चुकी है, दीमक है जो नौजवानों के विकास को चाट ले रही है। आज सुबह ही की बात है। कोई आठ बजे होंगे, मेरे पास टेलीफ़ोन आया। आवाज़ नयी थी इसलिए मैं पहचान न सका। पूछने पर मालूम हुआ कि एक पुलिस कांस्टेबल निजी हैसियत से बोल रहा है। उसने टेलीफ़ोन डायरेक्टरी उठा कर हिंदुस्तानियों के नाम ढूंढ़ना शुरू किये तो मेरा नाम सामने आ गया। मामला यह था कि एक साहबज़ादे एक्ज़ीबिशन हाल के क्यू में खड़े अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे थे। उनके आगे एक लड़की खड़ी हुई थी। और यह साहबज़ादे बार-बार किसी न किसी बहाने उससे टकरा जाते थे। एक बार, दो बार, तीन बार तो उस लड़की ने घूर कर नाराज़गी से देखा भी। लेकिन उनकी

चेतना पर तो औरत सवार थी। थोड़ी देर के बाद उन्होंने बहुत ही नामाक़ूल हरकत की, यानी धीरे-धीरे उसके पास खिसकते गये और फिर एकदम उसकी पीठ से चिपक कर उसे अपनी बाँहों में जकड़ लिया। वह बेचारी लड़की बड़े ज़ोर से चीख़ी लेकिन लड़के की जकड़ मज़बूत होती चली गयी। फिर उसके मुँह से आवाज़ें निकलना शुरू हो गयीं। लोगों ने उसे छुड़ाने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहे। और जब उसकी पकड़ ढीली हुई तो वह हाँफ रहा था। पुलिसवाले ने जब लड़के को पकड़ा तो उसके सारे कपड़े ख़राब हो चुके थे।"

"यह तो पागलपन है !" ख़ालिद ने राय ज़ाहिर की।

"बिलकुल ठीक है। एक समाज कीलर को पैदा करता है और दूसरा समाज सेक्स के भूखे पागलों को जन्म देता है," आनन्द ने कहा।

"लेकिन पुलिस वाले ने तुमको फ़ोन किस लिए किया था ?"

"मुझे फ़ोन इसलिए किया था कि साहबज़ादे लंदन में किसी को जानते नहीं थे। वह अपने बयान में झूठ पर झूठ बोले चले जा रहे थे। पुलिस वालों ने लाख समझाया कि अगर तुम सच बोलोगे तो हो सकता है कि तुमको सज़ा न मिले।

"पुलिस वाले बेवकूफ नहीं होते। उन्होंने अपना रिकार्ड चेक किया तो पता चला कि एक बार और वह किसी टूरिस्ट लड़की को परेशान करने के अपराध में पकड़े जा चुके हैं। और बेवकूफ़ी यह कर रहे थे कि पुलिस के इस रिकार्ड को वह झूठा बता रहे थे।

"ख़ालिद, मैं उस लड़के की सूरत कभी नहीं भूल सकता। उम्र ज्यादा नहीं थी, लेकिन चेहरे पर एक अजीबो-ग़रीब किस्म की वहशत, आँखों में एक अजीबो-ग़रीब किस्म की भूख और सूनापन। गालों की हड्डियाँ ज़रूरत से ज़्यादा उभरी हुई और आँखों के चारों ओर काले घेरे। ऐसे चेहरे आप का पीछा करते हैं। मैंने उसे हिन्दुस्तानी भाषा में समझाने की कोशिश की और जब झूठ बोलने के नतीजे बताये तो बात उनकी समझ में आ गयी।"

आंद्रे को गम्भीर बातों से अधिक दिलचस्पी नहीं थी। वह चुपचाप दूसरे कमरे में चला गया। बार्बरा उसे उठता देख कर मुस्करायी। वह खुद

भी उठना चाहती थी लेकिन ख़ालिद की गम्भीरता देख कर उसने अपना इरादा टाल दिया।

जेन ने व्हिस्की की ख़ाली बोतल हटा कर एक नयी बोतल खोली। आनन्द जब सबके गिलास भर चुका तो कहने लगा, "इसीलिए कहता हूँ कि समस्याओं को मुल्कों में बाँटना नहीं चाहिए। गिने-चुने लोग ख़राब होते हैं, मुल्क ख़राब नहीं होते। आम लोगों में से ज़्यादातर हर मुल्क में अच्छे होते हैं। और फिर सेक्स का मसला ऐसा है जिसकी पेचीदगियाँ न कभी सुलझी हैं और शायद न कभी सुलझेंगी।"

संगीत की लहरें अब ऊँची हो गयी थीं। दूसरे कमरे से मिले-जुले क़हक़हे उठ रहे थे। एक-दो जोड़ों ने उठ कर नाचना भी शुरू कर दिया था। बार्बरा का ध्यान अब आनन्द की बातों की ओर नहीं था। संगीत की आकर्षक धुन उसको अपनी ओर खींच रही थी।

पाइप और सिगरेट के धुएँ ने बिजली के बल्ब को धुँधला दिया था। बार्बरा को जी कुछ निढाल होता-सा मालूम हुआ। गिलास मेज़ पर रख कर 'अभी आती हूँ' कह कर वह उठ गयी। ख़ालिद बार्बरा को दूसरे कमरे में जाते हुए देखता रहा। वाल्ट्ज़ की धुन शुरू हो चुकी थी। वह सोचने लगा—बार्बरा को यह नृत्य बहुत पसन्द है, क्यों न वह भी दूसरे कमरे में जाकर अपने को संगीत की लहरों और बार्बरा की बाँहों के हवाले कर दे।

अभी विचारों का क्रम यहीं तक पहुँचा था कि दरवाज़े से बर्नी ने प्रवेश किया। आनन्द और ख़ालिद उसका स्वागत करने के लिए बढ़े ही थे कि एक नाज़ुक-सी लड़की उनके सामने आ गयी।

बर्नी ने कहा, "लिंडा, इनसे मिलो। यह मेरे दोस्त आनन्द, यह ख़ालिद और यह जेन है। और यह है लिंडा, मिसेज़ बर्नी भी तुम लोग कह सकते हो।

ख़ालिद सन्नाटे में आ गया। आनन्द ने पाइप मुँह में लगा कर माचिस जलायी। जेन ने लपक कर लिंडा से हाथ मिलाया मानो कह रही हो—बड़ा अच्छा किया जो फ़ौरन शादी कर ली।

आनन्द ने बर्नी का गिलास भरते हुए हिन्दुस्तानी में पूछा, "कहिये शहीदे-आज़म साहब, गुलामी की दस्तावेज़ पर किस दिन दस्तख़त किये

थे ? मुहब्बत के दूसरे दिन या तीसरे दिन ?"

"कौन ग़ाज़ी हुआ और कौन शहीद, यह तो बाद में पता चलता है।"

मोना एकदम बोल उठी, "आनन्द, तुम फिर हिन्दुस्तानी बोलने लगे। वैसे मैं जानती हूँ तुम बर्नी से क्या पूछ रहे हो।"

"अगर तुम बता दो तो जो इनाम माँगोगी, मिलेगा।"

मोना कहने लगी, "तुम इनसे पूछ रहे हो कि तुमने शादी कब की ?"

आनन्द बड़े ज़ोर से हँसा, "इसका मतलब यह है कि तुम वह नहीं हो जो ऊपर से नज़र आती हो।"

"क्या मतलब, मैं समझी नहीं ?" मोना ने सवाल किया।

"मतलब यह है कि तुम बहुत ही समझदार लड़की हो," आनन्द ने एक ज़ोरदार क़हक़हा लगाया।

ख़ालिद बर्नी से बहुत दिनों के बाद मिला था। वह बर्नी की इस दुर्घटना का पूरा ब्योरा जानने के लिए बेचैन था। लेकिन बर्नी ने बहुत संक्षेप से काम लेते हुए कहा, "नेपोलियन के नाम से वाबस्ता किया जाता है यह वाक़या शायद।"

"कौन-सा वाक़या ?" ख़ालिद उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था।

"यही कि आया, देखा और फ़तह कर लिया।" ख़ालिद और बर्नी दोनों हँस पड़े। लेकिन ख़ालिद ने बर्नी का हाथ दबाया और आँख मार कर कहने लगा, "मुझे भी तुम्हारी भाभी की बड़ी फ़िक्र थी। खुदाए-बस्तर ने इंतज़ाम करके घर में भिजवा दी। चलो, दूसरे कमरे में चलते हैं, तुमको उनसे भी मिलवा दें।"

दोनों उठ कर दूसरे कमरे में गये। कमरे में सिगरेटों का धुआँ भरा हुआ था। हल्की रोशनी, हल्का संगीत और हल्का नशा एक विचित्र-सा वातावरण पैदा कर रहा था। तीन जोड़े नाच में खोये हुए थे और बार्बरा आँखें बंद किये आंद्रे की बाँहों में झूल रही थी। ख़ालिद पर एक क्षण के लिए स्तब्धता छा गयी। उसका चेहरा लाल हो गया। फिर उसने अपने पर क़ाबू पाकर बर्नी से सिर्फ़ इतना कहा, "उपफ़ोह, यहाँ तो धुआँ भरा हुआ है। कुछ दिखायी भी नहीं देता।" और फिर बर्नी का हाथ पकड़ कर वापस उसी कमरे में ले आया। बर्नी मौक़े की नज़ाकत को भाँप तो ज़रूर गया

लेकिन उसने उस विषय पर बात करना उचित न समझा।

बर्नी और ख़ालिद ने जैसे ही कमरे में प्रवेश किया। मोना ने दोनों को पकड़ कर एक को दायीं और दूसरे को बायीं ओर बिठा लिया और ख़ालिद के कान में कहने लगी, "आनन्द पर इलहाम की कैफ़ियत तारी हो चुकी है।"

आनन्द पूरे ज़ोर-शोर से बातें करने में व्यस्त था। जब उसने बर्नी को देखा तो कहने लगा, "हम लोग यहाँ सेक्स की बातें कर रहे थे।"

"यह तो बुढ़ापे में की जाती हैं।" आनन्द ने बर्नी की बात सुन कर क़हक़हा ज़रूर लगाया लेकिन वह अपने विषय से हटा नहीं। "तुम्हें याद है, हमारे ग्रुप में एक लड़का था क्वालिस्की ?" आनन्द ने सवाल किया।

बर्नी अपने दिमाग़ पर ज़ोर डालते हुए बोला, "शर्मीला, एकतरफ़ा इश्क़ करने वाला।"

"हाँ, हाँ, बिलकुल वही। उसके इश्क़ की दास्तान बहुत दिलचस्प और सबक़ देने वाली है। जाने कितना वक़्त और कितना पैसा ख़र्च करने के बाद उसने एक लड़की से परिचय प्राप्त किया। और फिर जब उसकी निकटता प्राप्त हुई तो चारों ख़ाने चित हो गया। लड़की सचमुच खूबसूरत, मानसिक रूप से प्रौढ़ और सुरुचि वाली थी। क्वालिस्की उसे क्लब में बुलाता और शराबें पिलाता। ड्रामों में लेकर जाता और जब सम्बन्ध बहुत बढ़ गये तो क्वालिस्की ने हिम्मत की।

—तुम बहुत ख़ूबसूरत हो।

—यह बात बहुत-से लोग कह चुके हैं।

—इसका यह मतलब तो नही है कि बात ग़लत है।

"लड़की ने हँसते हुए अपनी ग़लती मान ली।

—यह रूप अकेला कब तक फिरता रहेगा ?

—यह तो खुदा ही बता सकता है।

—मैं खुदा तो नहीं हूँ लेकिन इस बात का जवाब दे सकता हूँ।

—तुम नहीं बता सकते, क्वालिस्की !

"क्वालिस्की ने लड़की का हाथ दबाया, आँखों में आँखें डालने की कोशिश की और बहुत रोमांटिक ढंग से कहने लगा—डार्लिंग, मैं तुम से शादी करना चाहता हूँ। क्या तुम मेरी इस प्रार्थना को स्वीकार करोगी ?

"लड़की थोड़ी देर तक चुपचाप क्वालिस्की को देखती रही, फिर पत्थर की मूर्ति बोल उठी—क्वालिस्की, मुझे मर्दों से कोई दिलचस्पी नहीं है।

"क्वालिस्की बात समझ न सका। कहने लगा—डार्लिंग, तुम ग़लत लोगों से मिली होगी। सब मर्द एक जैसे नहीं होते हैं। सबकी मुहब्बत एक जैसी नहीं होती है। मैंने तुमको दूर से चाहा है, पास से चाहा है, सपनों में प्यार किया है और मेरा ख़याल है कि मैं अपने को तुम्हारे क़ाबिल बना सकता हूँ।

लेकिन मेरा शादी का कोई इरादा नहीं है।

शादी के बारे में मैंने भी कभी नहीं सोचा। लेकिन जब एक अच्छी लड़की मिल जाये तो इश्क़ के बिना रहा भी तो नहीं जा सकता।

—अच्छी लड़की मिल जाये तो इश्क़ के बिना रहा भी नहीं जा सकता। क्वालिस्की, मुझे मर्दों में किसी तरह का सेक्स आकर्षण नहीं महसूस होता।

"क्वालिस्की को लड़की का यह भाव कुछ अच्छा नहीं लगा। लेकिन जब उसने सिर उठा कर देखा तो लड़की का चेहरा लाल हो रहा था और उसके होंठों पर एक अजीबो-ग़रीब मुस्कराहट थी। यह वह मुस्कराहट थी जो किसी का दिल तोड़ने से हासिल होती है। वह कुछ क्रोध से बोला—तुम झूठ बोलती हो। अगर तुमको मर्दों से दिलचस्पी नहीं है तो फिर तुम रोज क्लब में हम लोगों के ग्रुप में क्यों बैठती हो ?

—तुम्हें तकलीफ़ होगी अगर मैं सच-सच बता दूं।

—तुम जितनी तकलीफ़ पहुँचा सकती थीं पहुँचा चुकी हो।

"लड़की बड़े दृढ़ विश्वास से बोली—क्वालिस्की, मैं उस ग्रुप में इसलिए शामिल होती हूँ कि वह ग्रुप खूबसूरत कुँवारे लड़कों का है, जहाँ लड़कियाँ शहर की मक्खियों की तरह टूटती हैं। मैंने उसी ग्रुप से सैंड्रा को उड़ाया था।

—तुम कितनी ख़बीस, कितनी मक्कार और कितनी घिनावनी हो ! क्वालिस्की बड़े ज़ोर से चीख़ा। उसे अपनी घृणा व्यक्त करने के लिए इससे अधिक कठोर शब्द न मिले। उसे ऐसा लगा जैसे उसे क़ै हो जायेगी। यह सारा वातावरण कितना घिनौना है ! थोड़ी देर वह स्तब्ध बैठा रहा।

फिर उसने एक लम्बी साँस ली और एक क्षण के लिए उसका जी चाहा कि वह उस औरत को उठा कर खिडकी से बाहर फेंक दे। लेकिन फिर दिमाग़ के दरवाज़े खुल गये। आँखों पर जैसे दूरबीन लग गयी। दूर की सरू चीज़ों की एक-एक बारीकी दिखायी देने लगी। उस लड़की की पिछले तीन महीने की हर बात, हर अदा ने अपना रंग और अपना मतलब बदल दिया। क्वालिस्की को बहुत देर में मालूम हुआ कि उसकी प्रेमिका एक सर्व के पेड़ की तरह सुन्दर और बाँझ है जो न फल दे सकता है और न घनी छाया।"

जेन बहुत देर से चुप बैठी सेक्स पर दिये जाने वाले इस प्रवचन को सुन रही थी। कहने लगी, "सेक्स एक निजी समस्या है। उसका ताना-बाना सिर्फ़ दो इंसानों के गिर्द लिपटा होता है। और मैं समझती हूँ कि अगर वे दो इंसान बालिग़ हैं तो उनको उनके हाल पर छोड़ देना चाहिए।"

मोना धीरज न रख सकी। "लेकिन जेन, इसकी हमें कोई हद तो तय करनी होगी। वरना ग़लत रास्ते पर चलने का चलन इतना ज्यादा फैल जायेगा कि फिर उसकी रोकथाम भी क़ाबू से बाहर हो जायेगी। और फिर यह समस्या निजी समस्या नहीं रह जायेगी, समाजी समस्या बन जायेगी। लेकिन यह भी सच है कि काम-वासना की आग को न माँ-बाप रोक सकते है और न क़ानून। उसका इलाज सिर्फ़ एक है और वह है धर्म। धर्म की मान्यताएँ अगर तुम्हारे अन्दर कूट-कूट कर भर दी जायें तो फिर तुमको पाप से डर लगेगा। उस समय डर लगेगा जिस समय अकेले में तुम पाप करने जा रही होगी। भगवान का डर अगर दिल में होगा तो फिर बहकने की सम्भावना कम हो जायेगी।"

लिंडा अभी तक चुप बैठी हुई बातें सुन रही थी। अब उसने बहस का सिरा पकड़ा, "आनन्द, पाप क्या चीज होती है ? हो सकता है कि मैं उस चीज़ को पाप न समझती हूँ जिसे तुम समझते हो। तुम्हारे देश में सड़कों पर प्यार करने वाले पकड़ लिये जाते हैं। हमारे यहाँ यह कोई अपराध नहीं है। तुम्हारे यहाँ मर्द सड़कों पर एक-दूसरे के हाथ में हाथ डाल कर चल सकते हैं लेकिन हमारे यहाँ यह हरकत बेहद बुरी समझी जाती है। तुम अपने यहाँ खुशबुएँ लगा कर इत्र मल कर घूमते हो। और अगर यहाँ मर्द इत्र लगायें तो शरीफ़ आदमी उसके पास से उठ कर चले जायेंगे। तो

अगर हर देश के अपने नैतिक मूल्य हो सकते हैं तो क्या हर आदमी के अपने मूल्य नहीं हो सकते ?"

ख़ालिद ने अवसर देख कर एकदम सवाल किया, "लिंडा, तुम्हारे नैतिक मूल्य क्या हैं ?"

"वही जो तुम्हारे हैं," लिंडा ने उत्तर देने में अधिक समय नहीं लिया।

"हम तो एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर बैठ जाते हैं।"

"और हम तो एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर बैठ चुके हैं," लिंडा के इस बे-झिझक उत्तर पर महफ़िल में एक क़हक़हा गूँजा और ख़ालिद ने बर्नी को सम्बोधित करते हुए कहा, "बर्नी, यह पसन्द मुबारिक हो ! लेकिन हमारी पसन्द तुमसे कम नहीं है। देखो, हम भी तुमको अपनी क़िस्मत से मिलवाते हैं।"

ख़ालिद दूसरे कमरे की तरफ़ देख कर चिल्लाया, "बार्बरा !" दूसरे कमरे से कोई आवाज़ नहीं आयी, लेकिन ठीक उसी समय टेलीफ़ोन की घंटी बजनी शुरू हो गयी। टेलीफ़ोन ख़ालिद के पास रखा हुआ था। उसको टेलीफ़ोन की बे-वक्त घंटी बहुत बुरी लगी। उसने पहले टेलीफ़ोन उठाया फिर रिसीवर रख दिया। लाइन कट गयी। वह फिर चिल्लाया, "बार्बरा !" दूसरे कमरे की ख़ामोशी पहले की तरह ही बनी रही। टेलीफ़ोन की घंटी फिर ज़ोर-ज़ोर से चीख़ रही थी। उसने रिसीवर उठा कर बटन दबा दिया। हैलो-हैलो की आवाज़ बटन दबाते ही बंद हो गयी। इस बार उसने सुविधा के लिए रिसीवर मेज़ पर रख दिया। वह दूसरे कमरे की ओर देख कर फिर चिल्लाया, "बार्बरा !" कोई आवाज़ नहीं आयी। ख़ामोशी, ख़ामोशी, ख़ामोशी ! ख़ालिद को आशंका की भावना ने एकदम घेर लिया। वह तेज़ी से कमरे की ओर लपका, लेकिन मोना की आवाज ने उसका पीछा किया।

"ख़ालिद, कहाँ जा रहे हो ? वे दोनों अभी बाहर गये हैं।"

"कौन दोनों अभी बाहर गये हैं?" ख़ालिद के ऊपर और नीचे के दाँत एक-दूसरे को दबाने की कोशिश कर रहे थे। उँगलियों ने मुट्ठी का रूप धारण कर लिया था। और वह धीरे-धीरे मोना की ओर बढ़ रहा था। मोना सहम गयी। उसका उत्तर बहुत संक्षिप्त था, "बार्बरा और आंद्रे।"

"हरामज़ादा !" ख़ालिद दरवाज़े की तरफ़ भागा लेकिन मोना ने लपक कर उसका कोट पकड़ लिया। "छोड़ दो मुझे !" मोना एक झटके में मेज़ पर जाकर गिरी। दो-तीन गिलास फ़र्श पर लुढ़क गये। इतने में बर्नी भी दौड़ता हुआ पहुँच गया। सबने ख़ालिद को पकड़ कर ज़बर्दस्ती सोफ़े पर बिठा दिया। ख़ालिद का ख़ून खौल रहा था। उसने बार-बार उठने की कोशिश की लेकिन बर्नी की पकड़ ढीली न हुई।

"इसमें परेशान होने की क्या ज़रूरत है ? कहीं बाहर गये होंगे, अभी आ जायेंगे। बल्कि हम सब लोग उनका इंतज़ार करेंगे।"

मोना के विचार बिल्कुल स्पष्ट थे। वह कहने लगी, "मैं आंद्रे को जानती हूँ। मेरी राय में उसकी वापसी का इंतज़ार बेकार होगा," फिर वह ख़ालिद से कहने लगी, "ख़ालिद, आज बार्बरा नहीं आयेगी।"

ख़ालिद पूरी ताक़त से चीख़ा, "तुम झूठ बोलती हो।"

"मैंने सिर्फ़ अपनी राय दी है," मोना के स्वर में ठहराव था और उसी ठहराव को देख कर ख़ालिद भड़क उठा। उसने लपक कर मोना का गरेबान पकड़ कर उसे खड़ा कर दिया। "तुम-तुम उसकी दलाल हो या गर्ल फ्रेंड।"

बर्नी ने ख़ालिद के हाथ मज़बूती से पकड़ कर एक झटका दिया। उसकी पकड़ ढीली हो गयी। उसको सोफ़े पर धक्का देते हुए बर्नी बड़े ज़ोर से चीख़ा, "क्या बदतमीज़ी है ? आदमी हो या जानवर ?"

ख़ालिद पर जैसे किसी ने जादू कर दिया हो। वह निढाल होकर सोफ़े पर गिर गया।

"ओ मेरे ख़ुदा, यह कैसी दुनिया है, यह कैसा क़हवाख़ाना है !"

आनन्द अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ यह सारा तमाशा देख रहा था। लेकिन जब ख़ालिद उसके पास आकर सोफ़े पर गिरा तो आनन्द ने एक लंबा कश लेकर मुँह से पाइप निकाला। धुएँ का एक हल्का-सा बादल ख़ालिद और आनन्द के बीच बाधक हो गया। फिर आनन्द कहने लगा—

"ख़ालिद, लंदन एक बड़ा-सा रेसकोर्स है और तुम ज़िंदगी में चूँकि पहली बार रेसकोर्स में आये हो तो हैरान होकर पूछ रहे हो, 'यहाँ घोड़े इतना तेज़ क्यों भागते हैं ?' और यह एक बेवकूफ़ी का सवाल है।"

बार्बरा जब बदहवास होकर आनन्द के घर से निकली तो उसका सर चकरा रहा था और सारे शरीर में एक सनसनी-सी दौड़ रही थी। आंद्रे ने अगर उसको सहारा न दिया होता तो शायद वह कब की ज़मीन पर ढेर हो चुकी होती। आँतों को खुरच डालने वाली मतली पूरे ज़ोर-शोर से होती लेकिन ऊपर पहुँचते-पहुँचते ग़ायब हो जाती। पीड़ा के मारे उसका मुँह खुल जाता। मुँह से तो कुछ न निकलता। हाँ, आँखों से आँसू जारी हो जाते। और उसी तनाव के वातावरण में उसके कान ख़ालिद की आवाज़ से फटे जा रहे थे। वह चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा था, "यह ब्लैकमेल है, सरासर ब्लैकमेल है !"

उसने अपने कानों पर हाथ रख लिये, लेकिन जब यह पीछा करती हुई आवाज़ फिर भी न रुकी तो वह पागलों की तरह चीख़ने लगी, "नहीं, नहीं। यह ब्लैकमेल नहीं है। ख़ालिद, यह सच है, यह सच है, ख़ालिद !"

आंद्रे अभी तक बार्बरा की एक बात भी न समझ सका था। वह परेशान होकर सोच रहा था कि कहीं बार्बरा पर कोई दौरा तो नहीं पड़ा है। या फिर वह बहुत बीमार है। और फिर जब बार्बरा को थोड़ी शांति मिली तो आंद्रे पूछने लगा, "बार्बरा, क्या बात है ? मुझे बताती क्यों नहीं हो ?"

"मैं खुद भी यही जानना चाहती हूँ, आंद्रे ! तुम मुझे फ़ौरन किसी अस्पताल ले चलो। मेरी तबियत बहुत ख़राब है, आंद्रे !"

रात के सन्नाटे में जब टैक्सी अस्पताल के सामने रुकी तो बार्बरा अपनी शंकाओं और कल्पित दुष्परिणामों के नीचे दब कर अधमरी हो चुकी थी। लेकिन जब अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करने के बाद डाक्टर मुस्कराया तो बार्बरा ने बड़े आश्चर्य से उनकी ओर देखा। डाक्टर अब भी मुस्करा रहा था।

"क्या बात है, डाक्टर ?"

"कुछ नहीं, अब आपको सावधानी बरतनी होगी। आपके पेट में बच्चा है।"

भाग्य का यह निर्णय सुन कर बार्बरा ने एक विचित्र परिवर्तन अनुभव किया। उसका तनाव, उसकी घबराहट, उसकी नर्वसनेस सब ख़त्म हो

चुकी थी। वह एक संतोष, एक इतमीनान महसूस कर रही थी। फिर आंद्रे की ओर देख कर वह मुस्करायी। "आंद्रे, अब तुम्हें अपने सवाल का जवाब मिल गया।"

डाक्टर भी आंद्रे को देख कर मुस्कराया। "यह पहला लड़का है ?"

आंद्रे की समझ में न आया कि डाक्टर को क्या जवाब दे। बार्बरा उसकी ओर से बोल उठी, "हाँ, डाक्टर !"

डाक्टर ने लपक कर आंद्रे से हाथ मिलाया और बधाई देकर नुस्ख़ा लिखने लगा।

बार्बरा के विचार पारे की तरह बहक रहे थे। कभी वे छलाँग लगा कर भविष्य में पहुँच जाते और कभी अतीत उन्हें अपनी ओर खींच लेता। अतीत के जाने कितने बहुत-से दिन थे जो एक नया वेश धारण करके उसके सामने नाच रहे थे। ख़ालिद कह रहा था—होगा यह कि किसी डाक्टर की मदद लेनी होगी। अब ख़ालिद और गंभीर हो गया था।

'हम लोगों के हालात बिल्कुल ऐसे नहीं हैं कि हम बच्चे पाल सकें।'

बार्बरा उसको समझा रही थी और वह चिल्ला रहा था—'मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ कि मेरे हालात जो हैं उनमें बच्चों के लिए कोई जगह नहीं है।'

फिर उसे आनन्द की पार्टी याद आ गयी। ख़ालिद चीख़ रहा था, 'मैं ऐसी सूरत में शायद कभी शादी न करूँ। कभी शादी न करूँ। कभी शादी न करूँ।'

'बस, बस ख़ालिद, बस करो। खुदा के लिए बस करो।'

उसने अपने दोनों हाथों से कान बंद कर लिये—'ओ ख़ुदा यह गूँज बंद करनी होगी। फिर वह गिड़गिड़ाते हुए कहने लगी—'ख़ालिद, तुम जानते हो कि यह बच्चा तुम्हारा है ! ख़ालिद, तुम जानते हो कि मेरा, तुम्हारा और इस बच्चे का भविष्य एक धागे में पिरोया हुआ है। इस धागे को मत तोड़ो, ख़ालिद, नहीं तो ये सारे मोती बिखर जायेंगे। और फिर कौन जाने कौन-सा मोती गंदी नाली में बह जाये।'

६

दिले-ख़ानाख़राब की बातें

ख़ालिद आनन्द की बोतल-पार्टी में एक हँसमुख, बेफ़िकरे नौजवान की तरह एक खूबसूरत लड़की की कमर में हाथ डाले विजेता की तरह पहुँचा था जैसे उसने जिंदगी के सारे मोर्चे जीत लिये हों। लेकिन जब वापस लौटा तो ख़ालिद एक परेशान आदमी था।

वही कमरा था, वही कुर्सी थी, वही वातावरण था। वह बिस्तर पर लेट गया। पहले तो कमरे की छत पर आनन्द की पार्टी की फ़िल्म देखता रहा, फिर विचार अचानक खुल जाने वाले नल की तरह मकान की चहारदीवारी में उबल पड़े। धीरज ने साथ छोड़ दिया तो तकिये पर मुँह रख कर फूट-फूट कर रोने लगा। "बार्बरा, तुमने मुझे धोखा दिया है। मैंने तुम्हारी पूजा की है, बार्बरा !"

और जब रोते-रोते निढाल हो गया तो उसकी आँखें बंद हो गयीं। नींद के पंख खुल गये, और फिर सब कुछ उसके साये में आ गया।

गहरी नींद से जब उसकी आँख खुली तो सुबह हो चुकी थी। वातावरण धुँधला था और कड़ाके की सर्दी ने गैस के जलते हुए हीटर को इतना ठंडा कर दिया था कि उसको छूकर देखा जा सकता था। लेटे-लेटे वह क़ालीन के बेल-बूटों पर इस तरह नज़र दौड़ाता रहा जैसे बच्चे काग़जी भूल-भुलैयों पर पेंसिल चलाते हैं। फिर उसने करवट ली। नज़रें छत पर पहुँची और फिल्म फिर शुरू हो गयी।

कल रात कितनी जानलेवा साबित हुई थी ! कितनी ढेर सारी पवित्र और उज्जवल भविष्य वाली मुहब्बतों का खून हुआ था ! कितने बहुत-से मंसूबे बन कर बिगड़ गये थे ! भविष्य की उसने कितनी सुंदर तसवीरें

बनायी थीं, सब की सब किसी ने रौंद डाली थीं।

उसके दिमाग़ पर हथौड़े चल रहे थे और उनकी हर चोट यही कहती थी—ख़ालिद तुम धोखा खा गये। ख़ालिद, तुम धोखा खा गये। लेकिन अब वह बार्बरा से कभी नहीं मिलेगा, चाहे उसको यह घर छोड़ देना पड़े।

घर मिलना कोई आसान काम नहीं था। इसलिए बेहतर यही है कि जब तक दूसरा घर न मिले वह पौ फटे घर से निकल जायेगा और देर रात को घर वापस आया करेगा। इस घर में अब उसके लिए कोई आकर्षण बाक़ी नहीं रह गया था।

ख़ालिद को फ़ैक्टरी में ओवरटाइम करने से हमेशा नफ़रत रही। लेकिन अब उसने फ़ैक्टरी में रोज़ाना ओवरटाइम करना शुरू कर दिया। डिक ने कई बार उससे हँसते हुए पूछा भी, "मेट, शादी करने का इरादा है ?" लेकिन ख़ालिद बात को हँसी में टाल गया। फ़ैक्टरी से निकल कर वह सीधा शराबख़ाने में चला जाता, कभी अकेला और कभी डिक को साथ लेकर। डिक ने कई बार ख़ालिद की परेशानी मालूम करने की कोशिश की, लेकिन उसको बताने से वह हमेशा इंकार करता रहा।

"तो फिर इतनी शराब क्यों पीने लगे हो ?" डिक सवाल करता।

"यों ही, जी बहलाने के लिए," ख़ालिद डिक को बहला देता।

"तुमने इसे अपनी परेशानियों को हल करने की दवा तो नहीं समझा है ?" और ख़ालिद को याद आया कि जब वह पहली बार बार्बरा से मिला था तो उसने भी यही कहा था। उसने शायद कहा था—'शराब अगर आप किसी मसले के हल की तलाश के सिलसिले में पीते हैं तो बेहतर यही होगा कि छोड़ दीजिये।'

"डिक, तुम इतमीनान रखो, परेशानियाँ मेरा पीछा नहीं करतीं।" ख़ालिद डिक से यह कैसे कह सकता था कि वह लड़की जिससे मैं मुहब्बत करता हूँ किसी दूसरे के साथ भाग गयी है।

ख़ालिद अकसर सोचता—'बार्बरा मेरे कितना पास थी। वह ज़हनी तौर पर बुरी थी, जिस्मानी तौर पर बुरी थी। बार्बरा को मैंने कितने पास से देखा है ! उसकी दाहिनी जाँघ के ऊपरी हिस्से पर जो एक काला तिल है उसे मेरे अलावा किसी दूसरे ने नहीं देखा है।' और फिर जब उसे

ख़याल आता कि उसका यह भेद अब भेद नहीं रहा है तो ख़ालिद के सारे बदन में आग लग जाती। वह तपने लगता। उसे घिन महसूस होने लगती। और फिर नफ़रत इतनी बढ़ जाती कि वह खुद उसमें भस्म होने लगता।

बियर के भरे हुए गिलास को उसने रोशनी की तरफ़ उठा कर देखा। साफ़-सुथरी बियर थी। लेकिन बार्बरा की नयी तसवीर, उसकी घिनौनी शक्ल और उससे भी घिनौना उसका केरेक्टर इस गिलास में कैसे डूब सकेगा ? इसमें से तो वह उभरती चली आयेगी। विचार बहकते चले गये। नफ़रत फैलती चली गयी। और अधीरता बढ़ते-बढ़ते उसका दम घोंटने लगी।

'स्पेन यार्ड' के खुले हुए शराबख़ाने में वह जाने कब तक खड़ा हुआ अपने इन्हीं विचारों में उलझा रहा। फिर एक क्षण के लिए जब बार्बरा की कल्पना उसके दिमाग़ से उतरी तो उसने किसी को ऊँची आवाज़ में 'खुदा की क़सम' खाते हुए सुना। अंग्रेज़ी माहौल में यह लफ्ज़ अजीब-सा तो ज़रूर लगा लेकिन परिचित है दिमाग़ इस खुदा की क़सम से। उसने मुड़ कर देखा। बाँयीं तरफ के कोने में एक मौलाना को हिंदुस्तानी विद्यार्थी घेरे हुए थे। मौलाना कम-उम्र थे और उस वक्त शराब के नशे में उन पर सच बोलने का भूत सवार था। उनकी ज़बान तो ज़रूर लड़खड़ा रही थी लेकिन उसमें कड़वाहट बुझे हुए सिगार जैसी थी। मौलाना तक़रीर किये चले जा रहे थे—

"खुदा की ख़सम, यह दाढ़ी मेरी नहीं है मेरे बाप की है। खुदा की क़सम यह शराफ़त का लेबल मेरा नहीं है मेरे बाप का है। मैं शरीफ़ आदमी बिलकुल नहीं हूँ। यह लेबल मेरे ऊपर ज़बर्दस्ती लगाया गया है। मैंने तो आज तक किसी औरत को नेकनीयती से नहीं देखा है। मैंने दिमाग़ी तौर पर अपने दोस्तों की बीवियों से, उनकी लड़कियों से, उनकी बहनों से कोर्टशिप की है। उनके शौहरों को फूंक से उड़ा कर उनकी बीवी को ले भागा हूँ। लेकिन, लेकिन मैं अपने मंसूबों को कभी अमली जामा नहीं पहना सका। और इसीलिए लोग मुझे शरीफ़ आदमी कहते हैं। लानत है ऐसे शरीफ़ों पर !"

"तुम दोनों शरीफ़े हो, खाये जाने वाले," उनमें से एक लड़के ने अपनी समझ में बड़ी दिलचस्प बात कही और फिर खुद ही ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा।

मौलाना को यह हँसी बहुत बुरी लगी। वह एकदम बरस पड़े, "बंद करो यह बकवास !" लड़का सहम गया। ख़ामोशी फैल गयी। मौलाना इस बार पहले से ज़्यादा संजीदा थे। "मुझे गुनाह करने का मौक़ा नहीं मिला और अब शराफ़त का लेबल इस बुरी तरह चिपक गया है कि उस को अलग करना मुमकिन नहीं है। लोगों को शरबत पीने की आदत होती है, मुझे बड़ी लगन और ख़ाकसारी में इबादत करने की आदत है। यह आदत भी मेरी अपनी नहीं है, डाली गयी है, थोपी गयी है। और अब मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि खुदा की इबादत के बिल बहुत देर में अदा होते हैं। मैं ऐसा सौदा करने के लिए हरगिज़ तैयार नही हूँ।"

"तो फिर इबादत छोड़ कर ज़िदगी को नये सिरे से क्यों नहीं शुरू करते।" एक साथी ने मशविरा दिया।

"बरसहा-बरस सिज्दे करके जा-नमाज़ पर कुछ ढूँढता रहा, लेकिन कुछ न मिला। यह 'कुछ' का लफ्ज़ बहुत बड़ा होता है। इतना बड़ा कि इसमें सब कुछ आ जाता है। लेकिन मुझे कुछ न मिला।"

"तुम्हारी बीमारी का इलाज शादी है," दूसरा मशविरा दिया गया।

"शादी ? मेरे बाप ने जिंदगी में ऐयाशी के सिवा कुछ नहीं किया। वह भी सिर्फ एक औरत के साथ जो उसकी बीवी थी। धड़ाधड़ बच्चे पैदा करते रहे। और उसी में से मैं भी एक हूँ। मेरा अकसर जी चाहा कि उनका गरेबान पकड़ कर पूछूँ, मेरी पैदाइश आख़िर किस ख़ुशी के सिलसिले में हुई है। लेकिन इस सवाल का जवाब वह बेचारे कहाँ दे पाते, लेकिन मैं दे सकता हूँ। सिर्फ़ एक लफ्ज़ में दे सकता हूँ, और वह लफ्ज़ है 'ऐयाशी'। मेरी पैदाइश किसी की ऐयाशी का नतीज़ा है।"

ख़ालिद थोड़ी देर के लिए अपना ग़म भूल गया। उसे मौलाना की बातों में सच और दुख का मेल नज़र आया। वह धीरे-धीरे उनकी तरफ़ बढ़ा। दूसरों की महफ़िल में इस तरह दख़ल देना उसकी आदत नहीं थी, लेकिन उसके क़दम मौलाना की तरह उठते चले गये।

माफ़ी माँगते हुए उसने अपना परिचय कराया। मौलाना के चेहरे पर मुस्कराहट थी। उन्होंने बैठने का इशारा किया और फिर पूछा, "क्या नाम है ?"

"ख़ालिद।"

"मुसलमान हो ?"

"था।"

"इसी बात पर हाथ मिलाओ," फिर अपने दोस्त से कहने लगा, "ज़रा इनके लिए, जो कभी मुसलमान थे, गिलास तो मँगाओ।"

"इसकी कोई ज़रूरत नहीं है," अपना गिलास दिखाते हुए ख़ालिद ने कहा, "अभी तक मैंने शुरू भी नहीं की है।"

"तो फिर बिस्मिल्लाह कीजिये," मौलाना बोले, "क्या तकलीफ़ है ?"

"वही जो आपको है। यह शराफ़त का लेबल नहीं छुटता।"

"तो छुड़ाना क्यों चाहते हो ? उसी के ऊपर दूसरा लेबल लगा दो।"

"लेबल से क्या होता है, मौलाना ? बोतल तो वही रहेगी," ख़ालिद ने निराश होकर कहा।

मौलाना ने भेद लेने की कोशिश की, "यहाँ सब अपने हैं। तुम चाहो-तो हाले-दिल कह सकते हो। क्या कहीं चोट लगी है ?"

"मेरी वफ़ादारी—बस यही परेशानी है," ख़ालिद अपना गिलास दोनों हथेलियों के बीच लेकर धीरे-धीरे घुमाने लगा।

"हम दोनों की पहली मुलाक़ात बिलकुल इत्तफ़ाक से हुई। फिर राहो रस्म बढ़ी। ताल्लुक़ात गहरे होते चले गये, और फिर जब दोनों एक-दूसरे पर मरने लगे तो वह किसी और के साथ भाग गयी।" उसने एक लंबा घूँट लिया। "मुश्किल सिर्फ़ इतनी-सी है कि मैं अभी तक उसे छोड़ नहीं सका हूँ।"

ख़ालिद कई दिनों से क़िसी अजनबी की तलाश में था, जिससे वह खुल कर बातें कर सके, अपने मन की ऐसी कमज़ोरियाँ बता सके जिनकी जानकारी दोस्तों को मज़ाक उड़ाने पर मजबूर कर देती है। लेकिन अजनबी का क्या, वह तो पल-भर का साथी होता है।

मौलाना काफ़ी संजीदा थे। "एक बात कहूँ, अगर तुम बुरा न मानो।"

"बहुत-सी अच्छी चीज़ों से धोखा खा चुका हूँ। जब यही पता न हो कि क्या बुरा है और क्या अच्छा तो बुरा मानने का सवाल ही पैदा नहीं होता।"

मौलाना बोले, "इस केस में शुरू से लेकर आख़िर तक तुम्हारी ग़लती मालूम होती है। तुम्हारा यह जुमला बिलकुल ग़लत है कि 'हम दोनों एक-दूसरे पर मरने लगे।' इसको यों होना चाहिए 'हम उस पर मरने लगे।' अगर वह भी तुम पर मरती तो भागने का सवाल ही न पैदा होता। और नम्बर दो यह कि तुम अपने बारे में छानबीन करो। कहीं-न-कहीं कोई ग़लती या ख़राबी निकलेगी। वरना लड़कियाँ इस तरह भागती नहीं है। और नम्बर तीन, वह लड़की तुम्हारी बीवी तो थी नहीं, सिर्फ़ दोस्ती थी। उसने अगर दोस्ती जारी रखना मुनासिब नहीं समझा और सिलसिला खत्म कर दिया तो इसमें रोने-धोने की क्या ज़रूरत है ? दोस्त को बहरहाल इसकी आज़ादी होनी चाहिए।"

"इसीलिए तो मैंने कहा था कि शिकायत जो है वह अपनी वफ़ादारी से है।" ख़ालिद फिर सोच में पड़ गया।

"अरे, गोली मारो इस वफ़ादारी को," मौलाना ने गिलास को मुँह से लगा कर ख़ाली कर दिया, "और देखो देवदास बनने की ज़रूरत नहीं है। लंदन में पागल को देवदास कहते हैं।"

मौलाना की उम्र मुश्किल से पच्चीस साल होगी। खूबसूरत फ्रेंच-कट दाढ़ी उन पर सजती थी। लेकिन ऐसा लगता था कि माँ-बाप मज़हब को उनके हुलिये के अलावा कहीं और न समो सके। रूह प्यासी रह गयी जिसकी प्यास बुझाने के लिए उन्हें लंदन में आवे-निशातअंगेज़ मिल गया।

ख़ालिद खुश था और अगर वह इस उथल-पुथल से न गुज़र रहा होता तो शायद उसने मौलाना की बात को इतनी अहमियत न दी होती। लेकिन इस वक्त तो उसे किसी ऐसे मशवरे की ज़रूरत थी जो खुद उसकी अपनी राय भी हो। मौलाना ने ठीक ही कहा था कि शादी से पहले अपना हक़ जताना कुछ ग़लत बात मालूम होती है।

ख़ालिद अब इस महफ़िल से उठना चाहता था। वह इजाज़त लेकर बाहर निकला। घड़ी पर नज़र डाली, वह बंद थी। कल रात वह घड़ी में चाभी देना भूल गया था। लेकिन अभी तो बहुत वक्त है। अब यह क्या करे, कहाँ जाये ? और दिल है कि बैठा चला जा रहा है। आँसू हैं कि उमड़े चले आ रहे हैं। वह किससे हाले-दिल बयान करे ? जाने क्यों उसका बे-अख्तियार रोने को जी चाहने लगा। उसे अपनी माँ बुरी तरह याद आने लगी। रोने के लिए महबूबा की गोद से ज़्यादा मुनासिब जगह कोई नहीं होती। फिर एकदम उस पर बार्बरा को देखने का भूत सवार हुआ। वह सिर्फ़ एक झलक देखना चाहता था।

लेकिन अब वह बार्बरा से मिलेगा नहीं। बुझी हुई आग को कुरेदने से क्या हासिल ! वह फिर भड़क उठी तो क्या होगा ?

वह निरुद्देश्य स्टेशन की ओर चलने लगा। दोनों हाथ ओवरकोट की जेब में छिपाये वह बढ़ता चला गया। ठंडी और बे-रहम हवाएँ तकलीफ़ पहुँचाने पर तुली रहीं, उसके गिर्द मँडलाती रहीं। लेकिन वह सबसे बे-ख़बर, सबसे उदासीन, चिन्ता का लबादा ओढ़े आगे बढ़ता रहा। स्टेशन पहुँच कर उसने जेब से चार पेनियाँ निकालीं। टेलीफ़ोन बूथ में पहुँच कर उसने अपनी लम्बी उँगली से डायल घुमाना शुरू कर दिया। दूसरी तरफ़ घंटी बज रही थी। किसी ने रिसीवर उठाया। ख़ालिद के हाथ काँप रहे थे। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। किसी ने टेलीफ़ोन पर 'हेलो, हेलो' दो-तीन बार कहा। लेकिन ख़ालिद चुपचाप खड़ा रहा। 'हेलो, हेलो' का जब कोई जवाब न मिला तो दूसरी तरफ़ से किसी ने रिसीवर रख दिया। टेलीफ़ोन बंद होने की आवाज़ ऐसी लगी जैसे दूर कहीं लड़ाई के मैदान में आख़िरी गोली चली हो।

ख़ालिद थोड़ी देर रिसीवर अपने गालों से लगाये दूर शून्य में देखता रहा। जब वह टेलीफोन बूथ से बाहर निकला तो उसकी आँखें छलक उठी थीं। सड़क वीरान थी। बंद मकानों की खिड़कियों के मोटे-मोटे परदे उजाले और अँधेरे के बीच दीवार बन कर खड़े हुए थे। फिर भी रोशनी की कोई बाग़ी किरन दहलीज़ पार करके सड़क तक आ गयी थी। रोशनी की यह क्षीण-सी रेखा फुटपाथ को नापती हुई सड़क पर बिछी हुई थी। ख़ालिद

रोशनी की इस लकीर को धीरे से फलाँग कर अँधेरे में आ गया। उसके क़दमों की आवाज़ सन्नाटे को तोड़ती रही। वह चलता रहा, बढ़ता रहा, निरुद्देश्य !

रात अभी बहुत बाक़ी थी। बारह बजे से पहले घर पहुँचने पर बार्बरा से मुलाक़ात का डर था। वह सोचने लगा—'हर मंज़िल के दो रास्ते होते हैं—एक लंबा रास्ता और दूसरा छोटा। लेकिन अजीब बात यह है कि सारे छोटे रास्ते शराबख़ाने से होकर गुज़रते हैं। यह मुल्क कितना प्यारा मुल्क है जहाँ हर मोड़ पर शराबख़ाने मौजूद हैं और जहाँ शराब पीना कल्चर का एक हिस्सा है, जुर्म नहीं है।'

क्यों न वह अपने पड़ोस के शराबखाने में वक्त गुज़ारे ? ग्यारह बजे तक ज़िंदगी की ऊँच-नीच पर ग़ौर करे और फिर जब शराबख़ाना बंद होने लगे तो दबे पाँव अपने कमरे में जाकर सो जाये।

शराबख़ाना पड़ोस की जानी-पहचानी सूरतों से खचाखच भरा हुआ था। बियर के पीपों के नल ख़ाली गिलासों को भरते चले जा रहे थे। वक्त के साथ-साथ प्यास बढ़ रही थी। ख़ालिद एक पाइंट वर्थिंगटन हाथ में लिये किसी ख़ासी जगह की तलाश में भटकने लगा। पूरब की ओर वाले कोने में एक बूढ़ा आयरिश जोड़ा गिनेस पी रहा था। ख़ालिद सोचने लगा, ये आयरिश लोग कड़वी और काली गिनेस को पीना देशभक्ति क्यों समझते हैं ! वे यह कभी नहीं सोचते कि एक आयरिश करोड़पति ख़ानदान जनता की देशभक्ति की भावना से खेल रहा है।

यह बूढ़ा जोड़ा पिछले बरसहा-बरस से इसी शराबख़ाने में रोज़ शाम को आता है। यह जोड़ा यहाँ के हर शराब पीने वाले को नाम या सूरत से जानता है। ख़ालिद से इनकी मुलाक़ात बस 'हेलो' तक थी। उन्होंने ख़ालिद को अपनी मेज़ की तरफ़ बुला लिया। ख़ालिद चुपचाप उनके पास जाकर बैठ गया। मौसम की बात हुई। एक-दूसरे के स्वास्थ्य का हाल पूछा गया और फिर बात राजनीति से होती हुई आयरलैंड की क्रांति तक पहुँच गयी। आयरिश लोगों और हिंदुस्तानियों का स्वभाव बड़ी हद तक एक-दूसरे से मिलता है। दोनों की आज़ादी की लड़ाई एक तरह से लड़ी गयी थी और दोनों का दुश्मन भी एक ही था। और अब भी जब किसी

अंग्रेज की कोई बात उनको नागवार गुज़रती है तो पिछले इतिहास का हवाला देकर ये अंग्रेज़ों को गालियाँ देना शुरू कर देते हैं।

ख़ालिद राजनीति पर बात करने के मूड में नहीं था। इसलिए उसने नयी बात छेड़ी। "आपकी शादी को कितना ज़माना गज़र चुका है ?" बूढ़े जोड़े के चेहरे पर रंग आ गया। उन्होंने एक-दूसरे को मुस्करा कर देखा, फिर बूढ़ा बड़े गर्व से कहने लगा, "अगले हफ्ते हमारी शादी की पचासवीं सालगिरह है और इसी खुशी में तुम्हें हमारे साथ शराब पीनी होगी।" ख़ालिद के दिमाग़ ने झटका खाया। उसे यह बूढ़ा जोड़ा बहुत ही अच्छा लगने लगा। पचास साल बहुत होते हैं साथ निभाने के लिए। लेकिन मालूम नहीं इनमें से किसने अपने व्यक्तित्व की कुर्बानी दी है। इनमें से यक़ीनन कोई एक जीता होगा। हारा हुआ चेहरा कौन-सा है इनमें ?

लेकिन ख़ालिद को दोनों चेहरे एक जैसे नज़र आये, जैसे भाई-बहन के होते हैं। इतने लंबे साथ के बाद सूरत भी एक जैसी हो जाती है।

ख़ालिद और जानकारी हासिल करना चाहता था। "आप दोनों की पहली मुलाक़ात किस तरह हुई थी ?"

बूढ़ा बड़ी ज़ोर से हँसा। "आज से पचास साल पहले एक बार मेरी आँख में कोई चीज़ पड़ गयी थी। यह समझीं कि मैं आँख मार रहा हूँ।"

"तुम झूठ बोलते हो, डेविड !" बुढ़िया ने हँसते हुए डाँटा।

"इसमें झूठ क्या है ? आँख मारने और आप ही आप पलक झपकने में फ़र्क़ क्या है। मुझे याद है तुमने मुझे बड़े ताज्जुब से देखा था। लेकिन दूसरे दिन तुम फिर उसी जगह उसी वक्त मौजूद थीं। मैंने डरते-डरते तुमसे बात की थी। उसके बाद हम लोग रोज़ाना एक ही वक्त पर उस स्टोर में सौदा ख़रीदने के लिए आने लगे। और फिर मेरा सौदा भी यही ख़रीदने लगीं।"

दोनों एक-दूसरे से बड़ी देर तक मज़ाक करते रहे—फीके, बुझे-बुझे मज़ाक़। ऐसे मज़ाक़ जो सिलवर जुबिली मना चुके थे और गोल्डेन-जुबिली मनाने जा रहे थे। ऐसे मज़ाक़ जो बहुत ज्यादा इस्तेमाल होने की वजह से घिस-पिट चुके थे। जले हुए पटाख़ों में अब धमाके की क्षमता नहीं रही थी।

बूढ़ा कहने लगा, "ख़ालिद, तुमको अगले हफ्ते हमारी गोल्डेन जुबिली में शरीक होना होगा।" बात अभी यहीं तक पहुँची थी कि ख़ालिद ने अपने कंधे पर एक मोटे, भारी झुर्रियाँ पड़े हुए हाथ का दबाव महसूस किया। मुड़ कर देखा तो एक बूढ़ा हट्टा-कट्टा अंग्रेज़ पीछे खड़ा था। उसके कोट की आस्तीन पर एक बड़ा-सा चमड़े का पैबंद लगा हुआ था और उसके पीले मटियाले होठों के बीच फँसे हुए पाइप से 'एर्नमोर' तंबाकू के भपके निकल रहे थे। बूढ़ा अंग्रेज हिंदुस्तानी जबान में कहने लगा, "सलाम साहब, हमको एक पाइंट बियर पिलाइयेगा।"

ख़ालिद को इस फ़रमाइश पर कोई ताज्जुब नहीं हुआ। "मुझे माफ़ कीजिये," उसने इस तरह कहा जैसे फ़क़ीर से कहा जाता है—'माफ़ करो बाबा, आगे जाओ।'

ख़ालिद उस आयरिश जोड़े की ओर फिर ध्यान देने वाला था कि अंग्रेज़ ने फिर कंधा पकड़ा और मुँह से पाइप निकाल कर कहने लगा, "तुम बहुत बड़ा काला साहब है !'

"लेकिन तुम बहुत छोटा गोरा साहब है।" ख़ालिद का चेहरा सुर्ख़ था और आवाज़ इतनी ऊँची थी कि बहुत-से लोगों ने मुड़ कर उसकी तरफ़ देखा और फिर अपने-अपने गिलासों में उलझ गये।

बूढ़ा अंग्रेज़, 'सलाम साहब, सलाम साहब !' करता हुआ बाहर चला गया, लेकिन उसके भाव में व्यंग था।

आयरिश जोड़ा बड़ी हैरत से हिंदुस्तानी बातचीत सुन रहा था। ख़ालिद ने उनके सवालिया चेहरों को देख कर ग़लतफ़हमी दूर करने का फ़ैसला किया। और फिर अंग्रेज़ी राज की कटुताएँ उभर आयीं। उसने अपने मुँह में कड़वाहट महसूस की। वह कहने लगा, "फैक्टरियों में काम करने वाले आम अंग्रेज़ इतने प्यारे होते हैं कि उनको गले लगा लेने को जी चाहता है। लेकिन एक बात याद रखो, हिंदुस्तानी ज़बान बोलने वाला हर अंग्रेज़ क़ातिल होता है। उसने अपने जवानी के दिन हिंदुस्तान की जंगे-आज़ादी को कुचलने में बिताये होते हैं। यही बूढ़ा जो अभी भीख माँगने आया था, हिंदुस्तान में हमारे हर सवाल का, हमारी हर माँग का जवाब टामीगन से दिया करता था। कोई हिंदुस्तानी ख़ानदान ऐसा नहीं होगा

जिसका कोई न कोई आदमी इनके हाथों तबाह न हुआ हो। और इसलिए मुझे हर उस अंग्रेज़ से नफ़रत है जो हमारी ज़बान जानता है। हिंदुस्तानी बोलने वाला अंग्रेज चाहे भिखारी हो या शाही ख़ानदान का हो, मुझे खूनी नज़र आता है।"

आयरिश जोड़ा बड़े ग़ौर से सुनता रहा, हाँ में हाँ मिलाता रहा और फिर ख़ामोश होकर शायद आयरलैंड के इतिहास के पन्ने दोहराने लगा। ख़ालिद चुपके से उठा और गिनेस की दो बोतलें लाकर मेज़ पर रख दीं। कहने लगा, "अगले हफ्ते की गोल्डेन जुबिली के लिए यह तोहफ़ा क़बूल कीजिये। गुडनाइट!"

शराबख़ाने में उसका दम घुटने लगा था, लेकिन अभी बंद होने में आधा घंटा बाक़ी था। लोगों की आवाज़ें बहुत ऊँची हो गयी थीं। सिगरेटों के धुएँ ने हर चीज़ को धुँधला दिया था और बियर की बू हर तरफ़ फैली हुई थी। बाहर निकल कर उसने खुली हवा में लंबी-लंबी साँसें लीं। सड़क चौड़ी थी। उसे अपना घर सामने दिखायी दे रहा था। एक टैक्सी रेंगती हुई आगे बढ़ रही थी जिसकी लाल रोशनी अँधेरे में दीदे फाड़-फाड़ कर झाँक रही थी।

बूढ़े जान के कमरे में अँधेरा था। बार्बरा शायद सो चुकी थी। थोड़ी देर तक वह निरुद्देश्य सड़क पर घूमता रहा। जब और वक्त बीत गया तो ख़ालिद दबे पाँव अपने घर की तरफ़ बढ़ा।

अगर बार्बरा से मुलाक़ात हो गयी तो वह साफ़-साफ़ कह देगा, 'बार्बरा, मुझे अफ़सोस है, मैं तुम्हारा साथ नहीं दे सकता।' बार्बरा की तरफ़ से खुद ही सवाल करता, खुद ही जवाब देता और फिर खुद ही ख़फ़ा हो जाता। वह बढ़ता चला गया, दिल की धड़कन तेज़ से तेज़तर होती चली गयी। वह सोचने लगा कि पंजों के बल चलने वाला इंसान चोर होता है। मैंने कोई चोरी नहीं की है। मैंने कोई डाका नहीं डाला है। मैं तो वह हूँ जो धोखा खाने के लिए पैदा होते हैं। तो फिर मैं पंजों के बल क्यों चलूँ?

ज़ीने ख़त्म हो गये। बार्बरा के कमरे में अँधेरा था। वह तेज़ी से आगे बढ़ गया। जान के कमरे से बिजली का बटन दबने की आवाज़

उभरी। दरारों ने आँखें फाड़ कर घूरना शुरू कर दिया। उसने जान के दरवाज़े पर कान लगा कर सुनने की कोशिश की। अंदर बिल्कुल ख़ामोशी थी।

ख़ालिद ने अपने कमरे के ताले में चाभी घुमायी। विजली के बटन पर हाथ रखा तो सारा कमरा रौशन हो गया। हर चीज़ अपनी जगह पर थी। किताबें फैली हुई थीं। ऐश-ट्रे में अभी तक आधा जला हुआ सिगार संभाल कर रखा हुआ था। उसके सिरे पर लंबी-सी राख अभी तक सलामत थी।

सूट पहने-पहने वह अपनी आराम-कुर्सी पर लंबा हो गया। बायें हाथ को स्टैंड बना कर उसने अपना दु:खी और उदास चेहरा इस तरह रख दिया कि हाथ की दो उँगलियों पर माथा था और अँगूठा ठोड़ी को सहारा दिये हुए था। आँखें बंद करके वह अभी अपने दिमाग़ के दरवाज़े खोलने भी नहीं पाया था कि बूढ़ा जान दरवाज़ा खोल कर अंदर आ गया।

ख़ालिद एकदम चौंक कर खड़ा हो गया। "जान, सब ख़ैरियत है ?"

"हाँ, मैं ख़ैरियत से हूँ। शुक्रिया ! लेकिन तुम्हें क्या हो गया है ? तुम्हें कम-से-कम मुझसे मशविरा तो लेना चाहिए। मैं उम्र में तुम्हारे बाप से भी बड़ा हूँ।"

ख़ालिद ने अपने ठीक होने का यक़ीन दिलाया लेकिन बूढ़े जान को सब कुछ मालूम था। ख़ालिद की बे-तरतीब ज़िंदगी, उसके चेहरे की परेशानी सब भेद खोले दे रही थी। उसकी बेहंगम ज़िंदगी चिल्ला-चिल्ला कर कह रही थी—कहीं किसी जगह, जिस्म के किसी हिस्से में कोई चीज़ टूट गयी है।"

"वह तुम्हारे पास अपनी बे-गुनाही के सर्टीफ़िकेट लेकर आयी होगी ! यह लड़ाई की बात किसने कही तुमसे ?"

"मुझसे किसी ने कुछ नहीं कहा, यही तो शिकायत है। मैं पागल तुम्हें अपना बेटा समझने लगा था। और यक़ीन रखो ख़ालिद, अगर मुझसे मशविरा लिया गया होता तो मैं उसे यहाँ से हरगिज़ जाने न देता।"

"क्या बार्बरा यहाँ से चली गयी है ?" ख़ालिद ने ताज्जुब से पूछा। उसके लहज़े में परेशानी भी थी।

"बहुत दिन हो गये उसको यह घर छोड़े हुए।"

"लेकिन जान, तुमने मुझे बताया क्यों नहीं ? कब छोड़ा उसने यह घर ?"

"मुझे तो आज पता चला। लैंडलेडी का हिसाब करने के लिए आंद्रे आया था। फिर वह मुझसे मिलने भी आया।"

"तुमने उस कमीने के मुँह पर थप्पड़ नहीं मारा !" ख़ालिद का पारा फिर चढ़ने लगा।

"वह यह कहने आया था कि बार्बरा की तबियत ख़राब है और थोड़े दिनों के लिए वह आराम करने जा रही है।"

"और यह आराम उसे सिर्फ़ आंद्रे पहुँचा सकता है," वह चिल्लाया। "उससे कह दो कि मेरी जिंदगी को तबाह करके उसे आराम नहीं मिलेगा।"

"ख़ालिद, तुम बार्बरा से क्यों लड़ लिये ? वह तो बहुत अच्छी लड़की है !" ख़ालिद के जैसे किसी ने चुटकी ले ली हो। वह बूढ़े जान के भरोसे को किसी क़ीमत पर ख़त्म नहीं होने देगा। वह जोश में उबल पड़ा।

"जान, तुम्हारी बेटी हेलेन और बार्बरा स्मिथ में बहुत बड़ा फ़र्क़ है। इतना बड़ा फ़र्क़ जिसका अंदाज़ा नहीं कर सकते हो। तुम यक़ीन जानो मैं और कृष्ण, यानी ख़ालिद और कृष्ण एक हैं। बिल्कुल, एक हैं। लेकिन हेलेन और बार्बरा एक नहीं हैं।"

"तुम्हें जल्दी नहीं करनी चाहिए। थोड़ा मौक़ा दिया होता," जान ने समझाने की कोशिश की।

"जान, जल्दी मैंने नहीं की। जल्दी, उसको थी जल्दी, जान ! हेलेन का प्यार अमर था। कृष्ण के मरने के बाद उसने किसी दूसरे मर्द की तरफ़ नज़र उठा कर नहीं देखा। ज़हर खा लिया था। याद है, जान ? लेकिन बार्बरा स्मिथ ने मुहब्बत की पहली मंजिल में किसी दूसरे के कंधे पर सर रख दिया था। बार्बरा को तजुर्बों का शौक़ है, तजुर्बों का !"

बूढ़ा जान चुपचाप ख़ालिद के चेहरे के बदलते हुए रंग देखता रहा। उसकी कुछ समझ में नहीं आया कि ख़ालिद की बातों का जवाब क्या दे।

ख़ालिद ने थोड़ी देर की उस खामोशी को फिर तोड़ा। "जान, अच्छा हुआ जो उसने इस दोस्ती का खुद अपने ही हाथों गला घोंट दिया। मैं अब

खुली हवा में साँस तो ले सकता हूँ।"

ख़ालिद के दिल की भड़ास निकली तो उसके स्वर में नरमी आ गयी। लेकिन बूढ़ा जान यह सोच रहा था कि बार्बरा की तबियत सचमुच ख़राब भी तो हो सकती है। उसने अपना संदेह व्यक्त किया। "लेकिन ख़ालिद, आंद्रे कह रहा था कि उसकी तबियत ठीक नहीं है, इसलिए वह आराम करने जा रही है।"

"लेकिन जान, शायद तुम भूल गये हो। आंद्रे के सीने से लग कर नाचते हुए उसकी तबियत ख़राब हुई थी। फिर आंद्रे उसको इलाज के लिए अपने फ्लैट पर ले गया था। फिर बीमार की तीमारदारी के लिए उसके साथ रहने लगा था—बेवफ़ाई की कितनी छोटी-सी कहानी है!" ख़ालिद पूरे विश्वास और भरोसे के साथ बोल रहा था।

१०

ज़ख्म फिर लगा खिलने

बेवफ़ाई की यह छोटी-सी कहानी जोंक की तरह ख़ालिद के शरीर से चिपट गयी। अपने काम और घर के अलावा उसने सारे रिश्ते-नाते तोड़ दिये। बस एक बूढ़ा जान था, जो बीच-बीच में आकर उसे तसल्ली देता रहता था। जीवन के इस रीतेपन ने उसके अंदर एक उद्विग्नता-सी पैदा कर दी थी। कमरे में बैठे-बैठे उसका दम घुटने लगता तो वह भाग कर सड़क पर आ जाता। और फिर सड़कों पर निरुद्देश्य घूमते-घूमते वह तरह-तरह की बातें सोचने लगता।

लंदन में चाँद कभी नहीं निकलता। ऊपर एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैली हुई चादर पर सितारे कभी नहीं झिलमिलाते। आसमान के नीले रँग को यहाँ की लड़कियों ने चुरा कर अपनी आँखों में छुपा लिया है। इसीलिए मैला-मैला-सा आकाश इतना नीरस होता है कि सर उठा कर ठंडी आह भी भरने को जी नहीं चाहता। अगर सूरज निकलने का नाम दिन है तो फिर यहाँ दिन महीनों नहीं निकलता, सिर्फ़ शाम होती है, रात आती है। आज का दिन बहुत सर्द है। हवा की ख़ुनकी बता रही है कि बर्फ़ गिरेगी। लेकिन सड़कों की चहल-पहल है कि उस पर किसी चीज़ का कोई असर नहीं होता।

रीजेंट स्ट्रीट की ऊँची दुकानों में आम आदमी का गुज़र नहीं होता। इसीलिए उन दुकानों की हर शो-विंडो बड़े ध्यान से सजायी जाती है और सड़कों पर घूमने वाले प्राणी उनके शीशों पर नाक चिपका कर राल टपकाते रहते हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि इस शहर को दुनिया की सैकड़ों क़ौमों ने मिल कर बसाया है, जहाँ मेहमानों की भरमार ने घर वालों

को मुँह छिपा लेने पर मजबूर कर दिया है। चहल-पहल आज ज़रूरत से कुछ ज़्यादा ही हैं। काले सूट पहने हुए लोग और ओवरकोट में लिपटी हुई लड़कियाँ इस माहौल में सजती हैं। तरह-तरह की भाषाएँ बोलने वाले तरह-तरह के लोग बड़े व्यस्त भाव से आ-जा रहे हैं। और उनमें अगर अँग्रेज़ नज़र आता भी है तो ख़ामोश, सारे शिष्टाचार को निभाता हुआ। न किसी से कुछ लेना और न किसी को कुछ देना, जैसे अपने घर में खुद मेहमान आया हो। बर्नार्ड शा ने कहा था : 'अंग्रेज़ हर काम करता है लेकिन वह कभी कोई ग़लत काम नहीं करता। वह आपसे युद्ध करने पर उतारू हो जायेगा लेकिन देशभक्ति के सिद्धांत के अनुसार; वह आपको लूट लेगा लेकिन व्यापारिक सिद्धांत के अनुसार; वह आपको गुलाम बना लेगा लेकिन राजतांत्रिक नियम के अनुसार।'

सामने फुटपाथ पर एक हिंदुस्तानी लड़का शेरवानी और चूड़ीदार पाजामे में इतराता फिर रहा है। उसे यह नहीं मालूम कि इस मुल्क में यह पाजामा सिर्फ़ रात का पहनावा समझा जाता है। घर के बाहर यह लिबास सिर्फ़ उन लोगों पर अच्छा लगता है जिनके व्यक्तित्व और ख्याति का एक बहुत बड़ा तेज-मंडल उनके साथ-साथ चलता है। यह लड़का अभी नया-नया आया है। थोड़े ही दिनों बाद इसकी शेरवानी बक्स की तह में खो जायेगी।

ख़ालिद यों ही निरुद्देश्य सड़कों पर घूमता रहा। कभी एक शो-विंडो के पास खड़ा हो जाता, कभी दूसरी को झाँकने लगता। इन सजी हुई खिड़कियों को देख कर एक अजीब तरह की प्यास का अनुभव होता है, जिसमें भविष्य की कल्पनाएँ जन्म लेने लगती हैं।

एक बहुत प्यारी-सी लड़की, खोयी-खोयी, निरीह भाव से एक लिबास को तक रही है। ख़ालिद को एकदम ऐसा लगा कि जैसे वह उस लड़की को कहीं देख चुका है। लड़की में एक आकर्षण था। निश्चित सौंदर्य था जो हर आदमी का ध्यान अपनी ओर खींचे ले रहा था। ख़ालिद भी धीरे से बढ़ कर उसी शो-विंडो के पास खड़ा हो गया। पहले तो लड़की को किसी दूसरे आदमी के मौजूद होने का आभास नहीं हुआ लेकिन जब ख़ालिद ने उसे घूरना शुरू किया तो वह घबरा गयी। ख़ालिद को अब यक़ीन हो चुका

कि यह मार्गरेट है। उसने धीरे से पुकारा—"मार्गरेट !"

मार्गरेट ने मुड़ कर पुकारने वाले को ग़ौर से देखा। वह अब भी ख़ालिद को पहचान न सकी। ख़ालिद के दिल पर एक और चोट लगी। यह वही लड़की है जो उसके दिमाग़ पर कई दिन, कई हफ्ते बल्कि कई कहीने छायी रही थी। ख़ालिद का जी चाहा कि सिर्फ़ इतना कह कर आगे बढ़ जाये, 'माफ़ कीजियेगा गलतफ़हमी हो गयी थी।' लेकिन दूसरे ही क्षण वह अपना परिचय दे रहा था।

"आपने मेरे साथ सिर्फ़ कुछ लम्हे गुज़ारे हैं लेकिन मैंने अपना बहुत-सा वक्त आपकी नज़र किया है। इसीलिए शायद आप मुझे इतनी अच्छी तरह नहीं जानती जितना मैं आपको जानता हूँ। याद है आपको, चाँदी की वे बालियाँ ?"

"ओ—ख़ालिद तुम हो ?...कितने बदल गये हो!" मार्गरेट के दिमाग़ में तसवीरें उभरने लगीं।

"एक उम्र गुज़र गयी है आप से मिले हुए। क्या आप अब भी लड़कों को नचाती हैं किलबर्न के डांस हाल में ?"

"हाँ, वह तो मेरा पेशा है। वैसे यह बताओ तुम्हें कोई गर्ल फ्रेंड मिली या नहीं ?" मार्गरेट ने हँसते हुए सवाल किया।

ख़ालिद को उसकी हँसी अच्छी नहीं लगी। "और आपको रायल फेमिली का कोई शहज़ादा मिला ?"

"ख़फ़ा होने की बात नहीं है। मैंने तो सिर्फ़ हमदर्दी के ख़याल से पूछा था," मार्गरेट ने सफ़ाई देते हुए कहा।

ख़ालिद को दु:ख झेलने में उतनी तकलीफ़ नहीं होती, जितनी किसी की हमदर्दी से। वह अपनी खुशियों में तो दूसरों का शरीक़ होना गवारा कर लेता है, लेकिन दु:खों में उसे अकेला होना चाहिए, बिलकुल अकेला होना चाहिए। "एक वक्त था जब मेरा ख़याल था कि मैं मार्गरेट के बिना ज़िंदा न रह सकूँगा। फिर मैं समझा कि मैं बार्बरा के बिना एक पल न जी सकूँगा। और अब ऐसा लगता है कि इन सबके बिना जिया जा सकता है। मार्गरेट, मैं उस वक्त बहुत नासमझ और नातजुर्बेकार था।"

मार्गरेट ने एक क़हक़हा लगाया, जिसका मतलब था कि तुम अब भी

बेवकूफ़, नातजुर्बेकार, जज़्बाती जानवर हो। फिर वह बहुत संजीदगी से पूछने लगी, "ख़ालिद, तजुर्बेकार किसको कहते हैं और नातजुर्बेकार कौन होता है ? मैं एक मुद्दत तक अपने को बहुत समझदार, होशमंद और तजुर्बेकार समझती रही। लेकिन मेरे तजुर्बों ने मुझको सनकी बना दिया है। तो, क्राइस्ट के लिए, तुम अपने को तजुर्बेकार न कहना।"

"इस वक्त कितने बजे हैं, मार्गरेट ?" ख़ालिद ने कुछ सोच कर बात काटी।

मार्गरेट ने कलाई पर नज़र डाली। "साढ़ पाँच बजे हैं।"

"मेरा जी चाहता है कि आज फिर तुम्हारे साथ कुछ वक्त गुज़ारूँ। अगर तुम्हारे पास भी वक्त हो तो शराबख़ाने खुल चुके हैं, हम लोग थोड़ी देर साथ रहें।"

"मुझे उम्मीद थी कि तुम यही बात करोगे। तुम हिंदुस्तानी दो गिलास बियर पीकर बहक जाते हो। तुम सब के सब नशे के लिए शराब क्यों पीते हो ? मैं बताऊँ दो गिलास बियर पीने के बाद तुम क्या पूछोगे ?"

ख़ालिद कहने लगा, "हाँ बताओ, मैं क्या पूछूँगा।"

"तुम पूछोगे कि आप हिंदुस्तानी खाना पसंद करती हैं। मैं कहूँगी 'हाँ'। तो तुम कहोगे 'अगर आप मुनासिब समझें तो मेरे घर चलिए। मैं ख़ुद पका कर आपको खिलाऊँगा।' वहाँ तुम शराब की बोतलें निकाल कर सामने रख दोगे। मैं संभल कर पीना चाहूँगी, तुम ज़िद करके पिलाना चाहोगे। दो-तीन गिलास हलक़ में उँडेलने के बाद तुम पर इश्क़ का दौरा पड़ेगा। तुम सोचोगे कि मुझे देर होती चली जाये, नशा होता चला जाये और फिर सबसे आख़िर में तुम हाथ बढ़ाना शुरू कर दोगे।"

मार्गरेट ने एक साँस में ख़ालिद के दिमाग़ का पूरा नक़शा खींच दिया, जैसे कोई बंद डिब्बा खोल कर मेज़ पर उलट दे।

लेकिन मार्गरेट का यह अनुमान बिल्कुल ग़लत निकला। ख़ालिद हैरानी से मार्गरेट का मुँह तकता रहा। इतनी खरी-खरी बातें कहना किसी दुर्घटना का संकेत दे रहा था। "मार्गरेट, अब मुझे तुम्हारे इश्क़ की बिलकुल ज़रूरत नहीं है। मैं जब तुमसे मिला था तो तुम एक देवी की तरह मासूम लग रही थीं। आज इतने दिनों के बाद वह लगन एक बार फिर

जागी है। लेकिन चरणों में गिर जाने वाली उमंग अब सो चुकी है, मर चुकी है।"

"मैं उस वक्त मासूम थी या नहीं, लेकिन तुममें एक मासूमियत ज़रूर थी। और मेरा ख़याल है कि अब तुम उस मासूमियत को खो चुके हो।"

ख़ालिद ने बात काटना चाही। "यह बताओ कि तुम्हारे पास वक्त है या नहीं ?"

"वक्त तो सारे का सारा गुज़र चुका है। अब जो बचा है उसकी कोई क़ीमत नहीं है। जिसका जी चाहे लूट ले। मेरा उससे कोई संबंध नहीं है।"

ख़ालिद को यह सुन कर दुःख हुआ। बहुत दिन हुए मार्गरेट से बिछुड़ कर उसने सोचा था कि मार्गरेट अब किसी बड़े-से आलीशान महल में राज कर रही होगी। प्यार करने वाला शौहर और चाहने वालों की पलटन होगी। लेकिन यहाँ तो कुछ भी नहीं है। ऐसा लगता है कि कोई तूफ़ान उठा था जो आन की आन में वीरानियाँ, उदासियाँ और तनहाइयाँ पीछे छोड़ कर आगे निकल गया। उसने मार्गरेट को थोड़ी देर के लिए अपने साथ ले जाना ज़रूरी समझा। लेकिन मार्गरेट अब बहुत बदल चुकी थी। उसे शराब पीता हुआ इंसान दुम दबा कर भागते हुए आदमी की तरह नज़र आने लगा है। क्लबों की ज़िंदगी का खोखलापन अब ऐसी भयानक आवाज़ें निकालता है कि उसके कान फटने लगते हैं। मार्गरेट कहने लगी, "ख़ालिद, आज तुम मेरे साथ चलो। मैं तुमको एक नयी जगह ले जाऊँगी। मेरा ख़याल है कि तुमको पसंद आयेगी वह जगह।"

दोनों चुपचाप चलते रहे। शायद वे दोनों इस वक्त कुछ नहीं सोच रहे थे।

एक चौराहे पर रीजेंट स्ट्रीट, आक्सफ़र्ड स्ट्रीट से आकर मिल जाती है। उसके पीछे की एक गली में छोटे-से एक दरवाज़े के सामने नौजवान लड़कों और लड़कियों की भीड़ लगी हुई है। लड़कियाँ कसी हुई पतलूनों पर चुस्त जर्सियाँ पहने हुए बहुत स्मार्ट लग रही हैं। कटे हुए बाल, चाल में बे-परवाही और मिज़ाज में फक्कड़पन—यही उनकी विशेषता है। कुछ

लड़कों के हाथ में अख़बार और कुछ के हाथ में गिटार है। लड़कों के बाल लड़कियों से बड़े हैं जिसकी वजह से माहौल कुछ अजीब-सा लग रहा है।

ख़ालिद को ताज्जुब हुआ कि मार्गरेट जो किसी बड़े घराने की लड़की मालूम होती है क्यों और कैसे इतना बदल गयी है! आख़िर मार्गरेट ने चुप्पी तोड़ी। "मैंने लोगों को स्टेशन पर लगी हुई स्लाट मशीन से टिकट निकालने पर मशीन का शुक्रिया अदा करते सुना है। यह पार्टीज़ान कैफ़े मुझे इसीलिए पसंद है कि यहाँ बात-बात पर 'थैंक यू' नहीं कहा जाता। यहाँ वे लोग आते हैं जो बाहर की उथल-पुथल में अपने को गुम नहीं कर पाते। इस कैफ़े में सब एक बिरादरी के मालूम होते हैं। यहाँ अगर बेंचें न ख़ाली हों तो लोग ज़मीन पर बैठ कर चाय पी लेते हैं। और शतरंज खेलते हैं तो शतरंज की बिसात पर, ज़िंदगी की बिसात उनको रास नहीं आती।"

बातें करते-करते वे दोनों ज़ीने उतरने लगे। अंदर धुआँ इतना था कि ख़ालिद की आँखें जल उठीं। कई लोगों ने मार्गरेट को दूर ही से 'हेलो' किया। एक तरफ़ गिटार की धुन पर नाच हो रहा था। दूसरी तरफ़ किसी बात पर ज़बर्दस्त बहस छिड़ी हुई थी। ज़ीनों पर बैठे हुए नौजवान लड़के और पाउडर और लिपस्टिक से छुटकारा पायी हुई लड़कियाँ काफ़ी के गिलास हाथों में लिये अपनी समस्याएँ सुलझा रही थीं। एक और ग्रुप में कुछ लड़कियाँ लड़कों की गोद में बैठी थीं। उनके चेहरों पर फ़रिश्तों जैसी मासूमियत थी। मार्गरेट ख़ालिद को एक कोने में बिठा कर कहने लगी—"मैं अभी आती हूँ तुम इंतजार करना।"

ख़ालिद बैठे-बैठे कैफ़े का नक़शा समझ रहा था कि इतने में मार्गरेट काफ़ी के दो भरे हुए गिलास लिये हुए, टक्करों से बचती हुई, मुस्कराती हुई, सिगरेट पीती हुई आ गयी। गिलास मेज़ पर रखते हुए कहने लगी, "अब कहो ख़ालिद, क्या कहना चाहते हो?"

ख़ालिद अभी तक कमरे को समझने की कोशिश कर रहा था। "अच्छी जगह है।"

"हाँ, मुझे पसंद है। शुक्र है कि तुमको भी पसंद आयी। यहाँ मैं तुम्हारे दोस्त आनन्द से भी मिली हूँ।"

"अच्छा, तो तुम्हारी मुलाक़ात आनन्द से हो चुकी है ?" ख़ालिद को ताज्जुब हुआ।

"हाँ, यहाँ वह अकसर आता है। तनहाई के मसले पर डॉक्टरेट कर रहा है," दोनों बरबस हँस पड़े।

"अच्छा, ख़ालिद, इतने दिन तक तुम क्या करते रहे ?"

"मैं इश्क़ करता रहा। और इस ग़लतफ़हमी में पड़ा रहा कि वह भी मुझसे इश्क़ करती है। लेकिन फिर एक दिन वह लड़की मुझे धोखा देकर चली गयी। बस उसी दिन से अपनी वफ़ादारी और उसकी बेवफ़ाई का गिला शुरू कर दिया है जो आज तक जारी है।"

"कभी यह सोचा कि उसने बेवफ़ाई क्यों की ? हो सकता है कि बीच में ग़लतफ़हमियाँ हों," मार्गरेट ने समस्या को समझने की कोशिश की।

"बीच में ग़लतफ़हमियों की दीवार नहीं थी, बीच में आंद्रे था। मार्गरेट, तजुर्बे करना अच्छी बात होती है। अगर उनसे सबक़ लिया जाये तो जीने का सलीक़ा आता है। लेकिन मुझे ऐसी लड़कियाँ हरगिज़ पसंद नहीं हैं जो इन तजुर्बों में अपना सब कुछ लुटा दें। ख़ैर, छोड़ो इस क़िस्से को, तुम अपनी सुनाओ। तुम्हारे हुस्न पर अभी तक उतार के आसार दिखायी नहीं देते !"

"हाँ, यह अजीब बात है। मैं पिछले दिनों जिन हालात से गुज़री हूँ, वे किसी भी लड़की को पागल कर देने के लिए काफ़ी थे।" मार्गरेट बहुत गंभीर थी।

"क्या तुम भी कहीं धोखा खा गयीं ?"

मार्गरेट ने ख़ालिद की बात का कोई जवाब नहीं दिया। कुछ सोचते हुए सिगरेट के लंबे-लंबे कश लेती रही फिर कहने लगी, "ख़ालिद, आज मैं बेवा हो गयी हूँ।"

"तुम झूठ बोल रही हो," ख़ालिद के मुँह से अनायास निकल गया।

"नहीं, मैं झूठ नहीं बोल रही हूँ। ख़ालिद, बहुत दिन हुए उसी किलबर्न के डांस हाल में मेरे पास एक बहुत खूबसूरत, बहुत दिलचस्प और बहुत अमीर लड़का डांस सीखने के लिए आया। मुझे पहले ही दिन अंदाज़ा हो गया कि उसे डांस करना आता है। मैंने उससे पूछा, भी लेकिन उसने

साफ़ इंकार कर दिया। कहने लगा, 'हर खूबसूरत चीज़ मेरे मिज़ाज में, मेरी रग-रग में बसी हुई है।' और यह कहते हुए वह लड़का मेरी आँखों में झाँकने की कोशिश कर रहा था।

"फिर कुछ दिन बीत गये। वह मुझसे रोज़ मिलने लगा। मेरे लिए तोहफ़े लाने लगा। मुझे अपनी कार में बिठा कर बड़े रेस्तोराओं में खाने खिलाने लगा। मतलब यह कि मेरे ताल्लुक़ात उससे बहुत बढ़ गये। मैंने उससे कभी नहीं पूछा—तुम क्या करते हो, तुम्हारी तालीम क्या है? तुम्हारा ख़ानदान कौन-सा है? मैं तो बस अंधी हो गयी थी। एक दिन मैं बीस पौंड फ़ी हफ्ते के शानदार फ्लैट में उसके साथ लेटी हुई अपनी क़िस्मत को सराह रही थी कि उसने शादी का सुझाव रख दिया। मेरा स्वभाव तो तुम कुछ हद तक जानते ही हो। मैं फैसला करने में ज़्यादा वक्त नहीं ख़राब करती हूँ। जैसे कोई सिक्का उछाल कर 'टास' कर ले। मैंने कहा कि एक शर्त पर मैं तुमसे शादी कर सकती हूँ। उस एक क्षण में उसने जाने क्या कुछ सोच डाला होगा! कहने लगा कि मुझे तुम्हारी हर शर्त मंजूर है।

"उसके इस जवाब ने फैसला करने की मेरी रही-सही ताक़त भी ख़त्म कर दी। मैंने कहा कि शर्त यह है कि हम लोग कल ही शादी करेंगे।

"इस तरह दूसरे दिन हम लोगों की शादी हो गयी।

"ख़ालिद, मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा जीवन सफल हो गया हो। जैसे मेरे पिछले जन्म की कोई नेकी काम आ गयी हो। जैसे लंदन की सबसे ज़्यादा भाग्यशाली लड़की मैं हूँ। घर में पैसे की कमी नहीं थी। प्यार का इतना बहुत-सा ढेर था जिसे ख़त्म करने के लिए दो ज़िंदगियाँ काफ़ी हों। ख़ुदा की इतनी मेहरबानियों से मुझे डर लगने लगा। मैं रिश्वत देने पर उतर आयी। पाबंदी से चर्च जाने लगी। क्राइस्ट की बड़ी-सी तसवीर मेरे घर में आ गयी।"

मार्गरेट एक क्षण के लिए रुकी, फिर पूछने लगी, "ख़ालिद, कल तुमने अख़बार देखा था?"

"हाँ, देखा था—क्यों?"

"कल जो बैंक पर डाला डालने की ख़बर थी, वह मेरे शौहर ने डाला

था। लेकिन मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं थी। मुझे तो उस वक्त पता चला जब अख़बारों के प्रतिनिधियों और प्रेस फ़ोटोग्राफ़रों ने मेरे घर आकर मुझे घेर लिया। तुम यक़ीन जानो, उस समय मेरे प्यार और मेरी मुहब्बत ने सबसे ऊँची चोटियों को छू लिया था। चूहों की तरह पेंशन की उम्मीद में जीने वालों से मुझे हमेशा नफ़रत रही है। मेरे शौहर ने काम बुरा ज़रूर किया था लेकिन वह दूसरों से अलग था और ऐसा काम किया था जिसमें ज़्यादा मर्दानगी और ज़्यादा बहादुरी की ज़रूरत होती है।

"उसे दो साल की सज़ा हो गयी। उसने कहा था कि तुम मेरा इंतज़ार करना। मैंने सोचा था कि मैं उसका इंतज़ार करूँगी—चाहे उस इंतज़ार में मेरी ज़िन्दगी ख़त्म हो जाये। लेकिन यह इंतज़ार अभी शुरू ही हुआ था कि कल एक खूबसूरत औरत मुझसे मिलने के लिए घर पर आयी। वह औरत बहुत परेशान दिखायी दे रही थी। उसके चेहरे से लगता था कि जैसे उसने ज़िन्दगी में बहुत दुख झेले हों। वह पूछने लगी, 'मार्गरेट तुम्हारा ही नाम है ?' मैंने कहा, 'हाँ, मेरा ही नाम है।' यह सुन कर उसने कुछ कहने से पहले दो बहुत ज़ोरदार तमाचे मेरे गालों पर लगा दिये। तमाचे खा कर मुझे गुस्सा बिलकुल नहीं आया और न जवाब देने के लिए अपना हाथ उठाया। मुझे एकदम ऐसा लगा कि कहीं कोई मोहरा ग़लत पड़ गया है। वह कहने लगी, 'तुमने आर्थर से शादी कर ली है ?' मैंने बड़े भरोसे के साथ कहा, 'हाँ, कर ली है। लेकिन इन तमाचों का मेरी शादी से क्या वास्ता है ?' वह बोली, 'वास्ता है—तुम्हारे शौहर का नाम आर्थर नहीं आर्नल्ड है। आर्नल्ड की बीवी मैं हूँ। और यह बच्चा...।' उसके साथ एक बच्चा था जिसे घसीट कर उसने मेरे सामने कर दिया। 'इसकी सूरत देखो—ग़ौर से देखो। यह हम दोनों का है। हम दोनों का न तो तलाक़ हुआ है और न होने वाला है।'

"मेरी आँखों में पहली बार—बरसहा-बरस के बाद पहली बार—आँसू आ गये। मैं फ़ौरन समझ गयी कि इस खेल में मैं हार गयी हूँ।"

मार्गरेट ने एक नयी सिगरेट जलाने के लिए माचिस माँगी। माचिस देते हुए ख़ालिद कहने लगा, "फिर तुमने कुछ कहा नहीं ?"

"मैंने सिर्फ़ एक बात की। अपनी हार मान ली। ग़लती मेरी थी।"

माचिस की तीली एक रगड़ से भड़क उठी थी।

"ख़ालिद, मैंने पहले सोचा था कि आर्थर दुनिया का सबसे अच्छा प्रेमी है। फिर मेरी शादी हो गयी। मैंने सोचा कि वह सबसे अच्छा शौहर है। फिर वह जेल चला गया। मैंने सोचा कि वह सबसे बहादुर मर्द है। और आज जब कि मेरे दोनों गालों में अब भी तमाचों की जलन है, मैं सोच रही हूँ कि मर्द इस धरती का सबसे घटिया जानवर है।"

थोड़ी देर तक वह चुपचाप छत को देखती रही, फिर कहने लगी, "जब मैंने डाके की ख़बर सुनी थी तो मुझे ख़याल हुआ था कि आर्थर कुछ कर सकता है। मैं उसे सुधार लूँगी। लेकिन अब मुझे अंदाज़ा होता है कि वह आदतन एक मुजरिम है और आदी मुजरिमों को सुधारने के लिए किसी आदमी की ज़रूरत नहीं होती, संस्था की ज़रूरत होती है।"

ख़ालिद अपने सारे ग़म भूल गया। वह सोच रहा था कि हर आदमी उस वक्त तक अपने को सबसे ज़्यादा दुखी समझता है, सबसे ज़्यादा सताया हुआ समझता है, जब तक वह किसी दूसरे के दिल का हाल नहीं जानता। वह हमदर्दी करना चाहता था मगर कहाँ से शुरू करे? हमदर्दी की बातों में कितनी बनावट होती है, चाहे वे दिल ही से क्यों न निकलें।

मार्गरेट कहने लगी, "ख़ालिद, मुझे अब कोई दुख नहीं है। दुख तो उस वक्त तक होता है जब तक आदमी किसी को समझ न पाये। जब किसी की कमज़ोरियाँ मालूम हो जायें तो फिर शिकायतें ख़त्म हो जाती हैं, क्योंकि उनकी वजह समझ में आ जाती है। और मैं समझती हूँ कि अगर शतरंज के खिलाड़ी अपने पिटे हुए मोहरों के ग़म में लग जायें तो फिर अगली बाज़ियाँ जीतने का कोई मौक़ा बाक़ी नहीं रह जाता।"

"लेकिन मार्गरेट, दुखों का कोई अन्त नहीं है। एक से दूसरे का सिलसिला कुछ इस तरह मिलता है कि कुछ पता नहीं चलने पाता। बीच-बीच में खुशियाँ आती भी हैं तो धूप में बादल की छाँव की तरह, जिनमें एक लम्हे का ठहराव नहीं होता।"

मार्गरेट बात का रुख़ बदलना चाहती थी। कहने लगी, "ख़ालिद, यह बताओ आनन्द कैसा आदमी है?"

"आनन्द पानी की वह बूंद है जिसके लिए किसी सीप का मुँह न खुल

सका। वह जो न बन सका उसमें उसकी ग़लती नहीं है। और जो कुछ बन सका है उसमें उसका कमाल है। एक बात और बताऊँ ?"

"हाँ, बताओ।"

"नास्तिक आनन्द इतना खूबसूरत है जैसे किताबों में मज़हब होता है।"

मार्गरेट ने भी आनन्द के बारे में कुछ उसी तरह की राय क़ायम की थी। लेकिन उसे ऐसा महसूस हुआ था कि उसकी तह में कोई दुख छिपा हुआ है। वह कहने लगी, "आनन्द चोटें खाया हुआ आदमी लगता है। वह कुछ परेशान भी था उस दिन।"

"परेशान तो वह अकसर रहता है—लेकिन दूसरों की ख़ातिर। उसके दिमाग़ पर लंदन स्कूल ऑफ़ एकानामिक्स का एक लड़का छाया हुआ है।"

ख़ालिद ने बात यहीं ख़त्म करना चाही थी लेकिन मार्गरेट को जिज्ञासा हुई। पूछने लगी, "उस लड़के की क्या प्राब्लम है ?"

"प्राब्लम यह है कि उसे रात में नींद नहीं आती। अपने डाक्टर के पास गया। उसने कोई दवा दी, जिससे कोई फ़ायदा नहीं हुआ। इसलिए शिकायत लेकर वह फिर उसके पास पहुँचा। इस बार डाक्टर ने और तेज़ दवा दी, लेकिन वह नुस्ख़ा भी काम न आया। आख़िर डाक्टर ने उस लड़के का साइको-एनालिसिस करने का फ़ैसला किया। पता चला कि पिछले पच्चीस साल में, यानी पैदाइश से आज तक उसने किसी लड़की का हाथ तक नहीं पकड़ा था। लेकिन जब से बालिग़ हुआ है इसी उम्मीद के सहारे जी रहा है कि 'कभी', 'कहीं', 'किसी' जगह कोई लड़की उसे ऐसी ज़रूर मिलेगी जो उसके इश्क़ में दीवानी हो जायेगी। इसलिए डाक्टर ने पूरी संजीदगी से मशविरा दिया कि तुम शादी कर लो, और या फिर कोई गर्ल-फ्रेंड ढूँढ़ने की कोशिश करो। अगर तुम्हारी महफ़िल में, तुम्हारे इर्द-गिर्द लड़कियाँ हों तो फिर तुम नार्मल हो जाओगे और नींद भी आने लगेगी। डाक्टर का यह मशविरा भी बेकार गया। क्योंकि वह लड़का इकानामिक्स के बड़े-बड़े मसले तो हल कर सकता था लेकिन गर्ल-फ्रेंड ढूँढ़ लेना उसके बस की बात नहीं थी। अब डाक्टर ने ज़रूरी समझा कि वह उस लड़के को किसी ऐसी औरत के पास भेजे जिसे पैसे लेकर जिस्म बेचने में कोई एत-

राज़ न हो। लेकिन इतना शर्मीला लड़का इस मोर्चे को ज़िन्दगी-भर नहीं जीत सकता था। अकसर नतीजा वही रहा—रात-रात-भर जागना। तंग आकर डाक्टर ने कहा कि अब सिर्फ़ एक सूरत बाक़ी रह गयी है। यानी तुम अपनी मदद खुद कर लिया करो। हफ्ते में ज़्यादा-से-ज़्यादा एक बार करो—और यह समझ कर करो कि तुम कोई जुर्म नहीं कर रहे हो। अगर तुमने यह समझा कि तुम कोई ग़लत काम कर रहे हो तो फिर उसका असर सेहत पर पड़ेगा।

"मुझे मालूम नहीं कि उस लड़के को नींद आने लगी कि नहीं। मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ कि वह बहुत शरीफ़, बहुत समझदार और ग़ैर-मामूली खूबियों वाला लड़का है।"

मार्गरेट को यह घटना सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ और साथ ही कौतूहल भी। उसने जीवन को इस पक्ष से न कभी देखा था और न सुना था। शायद इसीलिए वह कोई सलाह भी न दे सकी। वह कहने लगी, "मैं खुद एक लड़के को जानती हूँ जिसकी प्राब्लम है 'एक घंटा'। इसमें ताज्जुब की ज़रूरत नहीं है। उसकी तमन्ना सिर्फ़ यह है कि दिन चौबीस घंटे की जगह पच्चीस घंटे का होने लगे।

"वह छः बजे रोज़ी कमाने के लिए निकल जाता है। शाम को वहीं से अपने कालेज चला जाता है। रात के ग्यारह बजे कमरे पर वापस आता है। खाना खाते-खाते बारह बज जाते हैं। और अगर वह सुबह पाँच बजे सोकर न उठे तो ठीक वक्त पर अपने काम पर नहीं पहुँच पाता। नतीजा यह है कि उसकी नींद पूरी नहीं होती। और अगर बहुत दिन तक नींद पूरी न हो तो फिर उसका जो असर दिल और दिमाग़ पर पड़ता है, वह तो तुम जानते ही हो।"

ख़ालिद ने बीच में बात काटते हुए कहा, "मार्ग, तुम जानती हो यहाँ हर आदमी परेशान है। यह समाज एक फटी हुई जेब की तरह है, जिसमें तुम पैसा डालती चली जाओ, गिरता चला जायेगा। तुम या मैं या आनन्द इन दुखों का कोई इलाज नहीं कर सकते। अगर तुम्हारे बस में हो तो यह फटी हुई जेब-सी डालो।"

मार्गरेट की बातों से लगता था कि वह एशियाई लोगों के ग्रुप में बहुत

दिन रही है। उसे इन लोगों के मिज़ाज, मूड और दुखती रगों का खूब अन्दाज़ा था। उसका ख़याल था कि ज़्यादातर एशियाई विद्यार्थी इसलिए परेशान रहते हैं कि उनमें भरोसे की कमी होती है। हसरतें, उमंगें और आरज़ूएँ हैं लेकिन हिम्मत नहीं है। वह कहने लगी, "ख़ालिद, इन एशियाई लड़कों में—चाहे वे हिन्दुस्तान के हों या पाकिस्तान के—एक अजीब बात मैंने यह देखी है कि ये अपने आप कुछ नहीं कर सकते। लेकिन इनको कोई ढकेलने वाला हो या हिम्मत बढ़ाने वाला हो तो ये दूसरों से ज़्यादा कर गुज़रते हैं। ये लड़के इतने बेवकूफ़ होते हैं कि अगर कोई लड़की किसी लड़के को पकड़ कर ज़बर्दस्ती मुँह चूम ले तो उसके इश्क़ में मरने के लिए तैयार हो जायेंगे। मैं तो यूरोपियन लड़कियों को मशविरा दूँगी कि जिस लड़की की शादी न हो सकती हो उसे हिन्दुस्तान चला जाना चाहिए।"

ख़ालिद मार्गरेट से सहमत नहीं था। कहने लगा, "शायद यही वजह है कि ये मासूम लड़कियाँ अकसर धोखा खा जाती हैं। मार्गरेट तुम्हारा ख़याल ग़लत है। फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि हमारे यहाँ बालिग़ होने की उम्र बहुत देर में आती है। इसके अलावा लड़की का मुँह चूम लेने पर ख़ानदान की कई सौ बरस की इज्ज़त भी चली जाती है। मतलब यह है कि हम यहाँ आते हैं सोडे की बंद बोतल की तरह। तुम लोग उसकी काग उड़ा देते हो। शुरू में यह बोतल खूब उछलती है, मचलती और बलबलाती है, फूँ-फाँ करती है लेकिन जल्द ही नार्मल भी हो जाती है।"

मार्गरेट इस वक्त उस ख़ालिद के बारे में सोच रही थी जो उसे डांस-हाल में मिला था—शर्मीला, भावुक और अनाड़ी। लेकिन आज वही ख़ालिद इस विषय पर कितने भरोसे से बोल रहा था। सोडे की बोतल फूँ-फाँ बंद कर चुकी थी।

दोनों बड़ी देर तक ऐसी ही समस्याओं पर विचार करते रहे। लोगों के दुख कोई कहाँ तक बाँट सकता है! अपने ग़म को भूल कर दूसरों के ग़म में खो जाने वाले लोग दिल के अच्छे लोग होते हैं। ख़ालिद और मार्गरेट देर तक उन्हीं उलझनों में फँसे रहे।

जब वे पार्टीज़ान कैफ़े से निकले तो बेहद सुकून महसूस हुआ। बाहर ठंडक थी, ख़ामोशी थी और बर्फ़ से ढकी हुई काली इमारतें संगमरमर की

मालूम हो रही थीं। इक्का-दुक्का गुज़रने वालों के सिर, भवें और कंधे बर्फ़ से ढँके हुए थे। सारे वातावरण पर इंग्मार बर्गमैन की फ़िल्मों की विच्छृंखलता, निर्जनता और रहस्यमयिता का मिला-जुला जादू छाया हुआ था। और निस्तब्धता कुछ इस तरह छायी हुई थी जैसे लोग अधूरा काम छोड़ कर कहीं गये हों और अब आया ही चाहते हों। या फिर जैसे किसी बहुत बड़ी फ़ैक्टरी में दोपहर के खाने की घंटी बज चुकी हो।

सड़कों पर कई इंच गहरी बर्फ़ जमी हुई थी और उस बर्फ़ पर लोगों के क़दमों के गहरे निशान धीरे-धीरे मिटने शुरू हो गये थे। मार्गरेट इन निशानों से बचती हुई अपने क़दमों के अलग निशान बनाती हुई स्टेशन की ओर बढ़ने लगी।

ख़ालिद से विदा होते समय उसने सिर्फ़ एक बात कही, "ख़ालिद, तुम मुझे उस लड़के से मिलाओ जिसको नींद न आने की शिकायत है। शायद मैं उसके कुछ काम आ सकूँ।"

१०

दूसरा गाल

वक्त ज़ख्मों पर मरहम रखता रहा। और ज़ख्म बग़ावत पर तुले रहे। कभी अच्छे हो जाते, कभी रिसने लगते। खिड़की के सामने लगे हुए पेड़ पर जाने कितने मौसम आये और निकल गये। इन दिनों उस पर नंगे-पन का दौरा पड़ा था। सड़क के किनारे वह इस तरह सीना ताने खड़ा था जैसे अपने दोष छिपाने के खिलाफ़ उसने लड़ाई का ऐलान कर दिया हो।

ख़ालिद उस नंगे पेड़ के पेचो-ख़म देखता रहा। उनकी लंबाई, उनकी मोटाई, उनके झुकाव, उनके घेरे, उनके तिकोन—सबके सब इतने आकर्षक थे कि ख़ालिद थोड़ी देर के लिए उनमें खो गया। फिर यह पेड़ धीरे-धीरे चारों ओर के वातावरण में घुलना शुरू हो गया। अब उसकी जगह एक खूबसूरत, सुडौल, नाजुक शरीर था। उसका लोच, उसकी गोलाइयाँ, उसके कटाव—साटन की तरह चिकना फिसलता हुआ शरीर। यही सब कुछ तो बार्बरा के पास भी था।

ज़ख्म फिर हरे होने लगे। वह उठ कर कमरे में टहलने लगा। फिर उसने एक क़िताब के नीचे से दो कार्ड निकाले। उनमें एक क्रिसमस कार्ड था और एक 'वैलेंटाइंस डे' पर भेजा हुआ गुमनाम मुहब्बतनामा।

दोनों कार्ड उसने मेज़ पर सजा दिये। टहलने की रफ्तार विचारों के साथ-साथ तेज़ होती चली गयी। ख़ालिद ने दोनों कार्ड उठाये। उनको बड़ी सावधानी से बराबर किया और फिर फाड़ कर रद्दी की टोकरी में डालते हुए कहने लगा, "ज़िंदगी के इस बाब को बंद हो जाना चाहिए।"

अपने विचारों में वह इतना खोया हुआ था कि दरवाज़े की लगातार

दस्तक व्यर्थ होती रही। फिर किसी ने धीरे से दरवाज़ा खोला। "अरे, तुम अंदर बैठे हो ! मैं दस मिनट से दरवाज़ा पीट रहा हूँ।" जान कुछ आश्चर्य से बोला। "ख़ालिद, मुँह लटका कर ज़िंदगी गुज़ारने से अच्छा है कि आदमी मुहब्बत से तोबा कर ले।"

"मुहब्बत तो छोड़े एक ज़माना हो गया है, जान ! यह देखो, अभी-अभी मैंने आख़िरी निशानी रद्दी की टोकरी के हवाले की है। मेरीज़ि दगी का यह बाब अब कभी नहीं खुलेगा।"

बूढ़ा जान मुस्कराया। "कार्ड फाड़ कर मुहब्बत ख़त्म कर दी, कमाल कर दिया। जैसे कमीज़ गंदी हो जाती है तो उतार कर फेंक देते हैं। इतना आसान काम था तो पहले क्यों नहीं किया ?"

जान ने एक ठंडी साँस ली। फिर जैसे अपने से बातें करने लगा—यह काम काश इतना ही आसान होता तो आज मेरी ज़िंदगी कितनी सुखी होती !'

"जान, मैं तुमसे कितनी बार कह चुका हूँ कि इस तकलीफ़देह ज़िक्र को मत छेड़ा करो। ज़ख्मों को कुरेदने से तुम्हें क्या मज़ा मिलता है ? हम दोनों दुखी हो जाते हैं। जान, एक वादा करोगे ?"

"हाँ, करूँगा।"

जान थोड़ी देर तक ख़ालिद के चेहरे पर नज़रें जमाये रहा, फिर बोला, "बात करने से जी हल्का हो जाता है। और यह जो कहते है कि वक्त हर चीज़ का इलाज है, यह ग़लत है। ख़ालिद, बिलकुल ग़लत है। वक्त जो है ना—वह ह्विस्की का नशा तीन गुना कर देता है। ज़ख्मों को नासूर बना देता है और यादों को—यादों के ज़हर को मथ कर दिल के अंदर उतार देता है। मैंने ये सब ज़हर पिये हैं और इसीलिए मैं चाहता हूँ कि तुम वह ग़लती न करो जो मैंने की है।"

"जान, तुम जज़्बाती होते जा रहे हो," ख़ालिद बोला।

"हाँ, जज़्बाती मैं कभी-कभी हो जाता हूँ इसलिए कि मैं हस्सास आदमी हूँ। लेकिन आज जज़्बाती होने का ख़ास सबब है।"

"क्या सबब है ?" ख़ालिद को कुछ शंका हुई।

"पिछले दिनों मैं बार्बरा से मिलता रहा हूँ।" और यह कह कर जान

ख़ालिद के चेहरे को तकने लगा।

लेकिन ख़ालिद ने उसे ज़्यादा मौक़ा नहीं दिया, हालाँकि जान की बात चौंका देने वाली ज़रूर थी। "जान, मुझे बार्बरा का हाल मालूम करने की बिलकुल ख्वाहिश नहीं है। इसलिए उसके बारे में बात करने की तुम्हें ज़रूरत नहीं है।"

जान, जो अभी तक ख़ालिद की तरफ़ टकटकी बाँधे देख रहा था, कहने लगा, "उस दिन आनन्द की पार्टी में अचानक उसकी तबीअत ख़राब होने की ख़बर ठीक थी।"

"लेकिन फिर आंद्रे की बाँहों में उसे सुकून मिल जाने की ख़बर शायद तुमने नहीं सुनी थी," ख़ालिद ने जल कर कहा।

"आंद्रे उसका बचपन का साथी है और बार्बरा उसे भाई की तरह मानती है।"

ख़ालिद से अब बर्दाश्त न हो सका। "ऐसे भाई-बहन जो सीने से सीने लगा कर नाचते हैं। ऐसे भाई-बहन कि अगर हालात साज़गार मिलें तो रातें भी साथ गुज़ार लेते हैं !"

जान बहुत संजीदा था। "लेकिन मैं जो बात कहने जा रहा हूँ वह इससे भी ज़्यादा ज़रूरी है। बार्बरा माँ बनने वाली है।"

ख़ालिद एक क्षण के लिए अवाक् रह गया। उसका सारा शरीर बर्फ़ की तरह ठंडा हो गया। फिर वह भूल गया कि जान भी उस कमरे में बैठा हुआ है। 'आंद्रे, तुम कितने कमीने हो ! तुमने दो जिंदगियाँ तबाह कर दीं हैं। तुमने बार्बरा को वहाँ पहुँचा दिया है कि अगर मैं उसको लाना भी चाहूँ तो नहीं ला सकता—और आंद्रे तुम तो इस लायक़ हो कि जान से मार दिये जाओ। मैं तुम्हारा गला दबा सकता हूँ, आंद्रे !"

फिर ख़ालिद की मुट्ठियाँ भिंच गयीं और वह चीख़ा, "मैं तुम्हारा गला दबा दूँगा, आंद्रे !"

जान ने धीरे से ख़ालिद को पकड़ कर बिठा दिया। फिर कहने लगा, "नफ़रत का ऐलान इतनी जल्दी नहीं कर देना चाहिए। तुमको सही हालात नहीं मालूम हैं इसलिए तुम ऐसी बातें कर रहे हो—ख़ालिद, सही हालात यह हैं कि उस दिन पार्टी से जाने के बाद आंद्रे ने तुमको दो बार

फ़ोन करने की कोशिश की और दोनों बार किसी ने जान-बूझ कर टेलीफ़ोन काट दिया। अगर तुमने वह टेलीफ़ोन सुन लिया होता तो शायद बात यहाँ तक न पहुँचती।"

"मुझे याद है उस दिन दो बार बे-वक्त घंटी बजी थी।"

"यह खुद आंद्रे कहता है, बार्बरा कहती है।"

"ये सब चालें हैं, फ़रेब हैं।—यह उस हरामजादी मोना ने 'टिप' दिया होगा और फिर बार्बरा के तेज़ दिमाग़ ने कहानी तैयार कर ली होगी।"

"तुम बार्बरा से इस तरह नफ़रत नहीं कर सकते हो, ख़ालिद! मैं तुमको नफ़रत नहीं करने दूंगा। तुम उसकी ज़िंदगी को तबाह नहीं करोगे, ख़ालिद!"

"आवारगी का बीज पेट में लेकर घूमने वाली को तबाह कौन कर सकता है!"

"वह तुम्हारा बच्चा है।"

ख़ालिद ने एक जहरीला शैतानी क़हक़हा लगाया जो कमरे में बड़ी देर तक गूँजता रहा। "जान, पिछले कई हफ्तों से मैं बिलकुल यही बात सोच रहा था। लेकिन मेरा दिल कहता था, 'नहीं, बार्बरा इतनी कमीनी नहीं हो सकती।' जान, दिल झूठ नहीं बोला करता, लेकिन उस दिन—मेरा दिल झूठ बोल रहा था। बार्बरा गिरी हुई चालबाज़ औरत निकली।"

जान ने ख़ालिद की बात काटते हुए कहा, " अच्छे लोगों के दिल सच बोला करते हैं। तुम्हारे दिल ने जो बात कही थी, ख़ालिद, वह ठीक बात थी। बार्बरा खराब लड़की नहीं है। मुझे उसके कैरेक्टर पर पूरा भरोसा है।"

ख़ालिद कहने लगा, "जान, मैं जब लंदन आया था तो एक दिन आनन्द ने मुझे अपने दोस्त रमेश का क़िस्सा सुनाया था।"

जान संजीदगी से कहने लगा, "लेकिन बात अब क़िस्सों की हद से बाहर निकल चुकी है।"

ख़ालिद ने जान की बात पर कोई ध्यान न दिया। "...तो वह क़िस्सा यह था कि रमेश की गर्ल-फ्रेंड हफ्ते में दो दिन उससे मिलने आया करती

थी और बाक़ी पाँच दिन वह अपनी माँ के साथ बिताती थी।...फिर एक दिन पता चला कि लड़की के पेट में बच्चा रह गया है। रमेश चूँकि लड़की को बहुत चाहता था इसलिए अपनी ग़लती को निभाने के लिए तैयार हो गया। लेकिन बाद में भेद खुला कि लड़की की माँ को मरे हुए चार साल हो चुके हैं। रमेश के दिल में एक सवाल पैदा हुआ कि आख़िर यह लड़की हफ्ते में पाँच दिन कहाँ बिताती थी ? और सवाल का जवाब जब खोजा गया तो पता चला कि पाँच रातें गुज़ारने वाले दोस्तों में से बच्चा पालने की ज़िम्मेदारी लेने के लिए कोई तैयार नहीं था।"

बूढ़ा जान बड़े शांत भाव से बोला, "इसका मतलब यह हुआ कि तुम्हारी गिनती भी उन्हीं पाँच रातों को काम आने वाले और वक्त पर धोखा देने वाले दोस्तों में की जाये।"

ख़ालिद को जान की बात अच्छी नहीं लगी। वह कहने लगा, "जान, तुम मुझे धोखा देने वालों की फ़ेहरिस्त में रखते हो ? आज तुमने मेरे कैरेक्टर पर शुबहा किया है, जान !"

"मैंने तुम्हारे कैरेक्टर पर शुबहा नहीं किया है। मैं तो सिर्फ़ यह समझाने आया हूँ कि बार्बरा का कैरेक्टर वह नहीं है जो तुम समझ रहे हो।"

"बार्बरा की वकालत करने वाले तुम कौन होते हो ?—मैं जानता हूँ कि उसके नापाक जिस्म में पलने वाली औलाद मेरी नहीं है। और आंद्रे के गुनाहों का बोझ ढोने के लिए मैं हरगिज़-हरगिज़ तैयार नहीं हूँ।"

बूढ़ा जान गुस्से को पीकर बड़े धीरज से कहने लगा, "ख़ालिद, इतना गुस्सा ठीक नहीं है। जिस दिन से बार्बरा तुमसे अलग हुई है मैं उससे मिलता रहा हूँ। और आज वह इस लायक़ नहीं है कि अपने घर जा सके, उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है, उसको सहारा देने वाला कोई नहीं है। और यही वक्त होता है जब लड़की को सहारे की ज़रूरत होती है।"

ख़ालिद को ऐसा महसूस हुआ कि जैसे जान उसको चारों ओर से घेर कर यह मनवा लेना चाहता है कि बार्बरा ख़ालिद के लड़के को पाल रही है। बूढ़े जान से उसे ऐसी उम्मीद कभी न थी। अब ख़ालिद में नफ़रत

भड़क चुकी थी और नफ़रत का यह लावा बार्बरा की तरफ़ से हट कर बूढ़े जान की ओर बढ़ रहा था—

"जान, मैं कितनी बार तुमसे कह चुका हूँ कि बार्बरा ने मुझे अपने नित नये सेक्स के तजुर्बों के लिए छोड़ा था। कुछ औरतें होती हैं जिन्हें कहीं तस्कीन नहीं मिलती। और तुम एक ऐसी ही औरत से साठ-गाँठ करके मेरे पास आये हो। तुम कान खोल कर सुन लो, जान, मैं किसी आवारा बाज़ारू औरत का हाथ पकड़ने के लिए तैयार नहीं हूँ।"

बूढ़े जान का चेहरा लाल हो गया था। वह गुस्से में खड़ा हो गया। "आवारा और बाज़ारू औरत कौन होती है, यह तुमको मालूम है ? और तुम्हें इतनी बेहूदा और गंदी ज़बान में मुझसे बात करने की ज़रूरत नहीं है।"

ख़ालिद अपनी पूरी ताक़त से चिल्लाया, "ज़रूरत है। क्योंकि एक आवारा औरत को तुम ज़िंदगी-भर के लिए मेरे गले डालना चाहते हो। एक आम बाज़ारी औरत जो हर रात किसी नये बिस्तर की खोज में रहती है। और फिर जब उसके बच्चा रह जाता है तो किसी सीधे-सादे आशिक़ का हाथ पकड़ कर कहती है कि यह बच्चा तुम्हारा बच्चा है। सड़क की आवारा कुतिया का नाम तुमने कभी सुना है, जान ?"

एक भरपूर थप्पड़ की आवाज़ उभरी। जान का भारी-भरकम हाथ काँप रहा था। और ख़ालिद के गाल पर चार उँगलियों के निशान उभर आये थे।

"तुम्हारा बाप अगर यहाँ होता तो शायद वह तुम्हारे दूसरे गाल पर इससे ज़्यादा ज़ोर से थप्पड़ मारता।"

जान दरवाज़ा खोल कर बाहर निकल गया।

इतवार की सुबह थी। एक टैक्सी बार्बरा के घर के सामने रुकी। बार्बरा ने कुर्सी से उठ कर देखा तो जान का उदास चेहरा दिखायी दिया। वह अपना सूटकेस लिये दरवाज़े पर खड़ा था। बार्बरा उसको देख कर मुस्करायी, लेकिन जान के संजीदा चेहरे पर मुस्कराहट का दूर-दूर तक पता न था। उसकी

गम्भीरता का अर्थ बार्बरा के लिए बहुत स्पष्ट था। बार्बरा ने जान के सूटकेस पर नज़र डालते हुए कहा, "जान, लड़की जब पेट से होती है तो उसे शौहर से ज़्यादा अपने बाप की ज़रूरत होती है।"

जान की समझ में न आया कि वह बार्बरा की बात का क्या जवाब दे। वह बढ़ा और बार्बरा को सीने से लगा कर उसके माथे पर प्यार किया। और फिर बड़बड़ाया, "वह बड़ा अच्छा लड़का है। बहक गया है।" फिर कुर्सी पर बैठ कर जाने क्या सोचने लगा। धीरे-धीरे उसकी आँखें छलकने लगीं और फिर टप-टप आँसू गिरने लगे। वह मुँह फेर कर उठा। "कितनी गरमी है ! लाओ, खिड़की खोल दें।"

लेकिन बार्बरा ने जान की छलछती हुई आँखें देख लीं थीं। कहने लगी, "तुम बिलकुल पागल हो। इतनी फिक्र मत करो। मैं अपनी गुत्थियाँ खुद सुलझा सकती हूँ। और अब मेरा ख़याल है कि मुझे वहाँ जाना चाहिए।"

जान एकदम बोला, "नहीं बार्बरा, मेरा ख़याल है कि हम दोनों को चर्च जाना चाहिए। आओ जल्दी करो।"

जान ने बोलर-हैट सर पर रखा, छतरी हाथ में लेकर अपनी कुहनी बार्बरा की तरफ़ बढ़ा दी। वह एक क्षण रुकी। उसने अपने कपड़ों पर नज़र डाली और फिर अपना हाथ जान की बाँह में पहना दिया।

दूर चर्च के घंटे बज रहे थे और बार्बरा के भारी क़दम अपने आप आवाज़ की तरफ़ उठते चले जा रहे थे।

११

काला बच्चा

ख़ालिद अब एक ऐसी उलझन में फँस चुका था जिससे बाहर निकलने के लिए एक पूरी ज़िंदगी का तजुर्बा दरकार होता है। आंद्रे, बार्बरा और जान ने मिल कर एक ऐसा त्रिकोण बना दिया था जिसके अंदर वह घुटता चला जा रहा था। उसके दिमाग़ पर डर और परेशानी लगातार छायी रहने लगी थी। ज़रा-सी आहट पर वह चौंक उठता। टेलीफ़ोन की घंटी से उसे डर लगने लगा। और उसके उप-चेतन मन में एक कीड़ा बिलबिला रहा था। 'कोई हादसा होने वाला है। कोई बुरी ख़बर मिलने वाली है। कोई मुसीबत सर पर टूटने वाली है।'

लेकिन तेज़ी से गुज़रते वक्त ने तकलीफ़ की गहराई कम कर दी थी और फिर ज़िंदगी धीरे-धीरे अपने रास्ते पर आ गयी।

जब कमरे में ख़ालिद का दम घुटने लगा तो उसने खिड़की खोल दी लेकिन ताज़ी हवा का एक झोंका अंदर न आया। "क्या इस मनहूस कमरे में अब हवा भी न आयेगी ?" वह दरवाज़ा खोल कर सड़क पर निकल गया।

सड़क लंबी थी लेकिन गलियाँ पेड़ की टहनियों की तरह जगह-बे-जगह फूट कर निकल आयी थीं। वह चलता रहा। लंबे-लंबे क़दम उठाते हुए, सड़क की गहमा-गहमी से अनजान, निरुद्देश्य चलता रहा।

"ख़ालिद ! ख़ालिद !" किसी ने ज़ोर से पुकारा।

ख़ालिद ने पीछे मुड़ कर देखा तो आनन्द भागा चला आ रहा था।

"हेलो आनन्द, क्या हाल है ?" ख़ालिद ने ताज्जुब से पूछा।

अपनी मंज़िल तुम्हें खुद तय

करनी होगी ।" आनन्द ने लंबी सड़क की तरफ़ इशारा करते हुए कहा ।

"लेकिन मुझे मालूम है मैं कहा जा रहा हूँ ।"

"कोई बीस मिनट से मैं तुम्हें पकड़ने की कोशिश में पीछे-पीछे भाग रहा हूँ । जा कहाँ रहे हो ?" आनन्द ने सवाल किया ।

"मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ..."ख़ालिद बोला ।

"मैं एक बहुत बुरी ख़बर सुनाने के लिए तुम्हारे घर गया था, लेकिन तुम वहाँ मिले नहीं । तुम्हारी लैंडलेडी ने बताया कि तुम अभी-अभी कमरे से निकले हो ।"

ख़ालिद तो जाने कब से किसी दुर्घटना की प्रतीक्षा कर रहा था । वह एक दम सन्नाटे में आ गया ।

"बात यह है कि जान एक बार मरने से पहले तुमसे मिलना चाहता है ।"

ख़ालिद के दिमाग़ में एक साथ जाने कितनी बहुत-सी तसवीरें उभरीं और फिर डूब गयीं ।

"जान कौन-से अस्पताल में है ?" उसने घबरा कर सवाल किया ।

"तुम मेरे [illegible]," आनंद ने एक गुज़रती हुई टैक्सी को इशारा किया [illegible] दोनों उसमें बैठ गये । दोनों चुप थे । ख़ा[illegible] सोच रहा था । हेलेन की मौत, का[illegible] लगाव और फिर चार उँगलियों के [illegible] पर जल उठे । उसने ड्राइवर से कहा [illegible] और मिलेंगे ।"

[illegible] की तेज़ी ने सड़क के मामूली-मामू[illegible]र ने अचानक ब्रेक लगाया और [illegible] से टकरा गये । आनन्द ने मुँह से [illegible]ा, "अगर धीरे चलाओगे तो द[illegible]हुए गाड़ी धीमी कर दी । हैम्पस्टे[illegible] ड्राइवर ने सर निकाल कर मका[illegible] रही, फिर नंबर दस के [illegible] में डाल दिया ।

११

काला बच्चा

ख़ालिद अब एक ऐसी उलझन में फँस चुका था जिससे बाहर निकलने के लिए एक पूरी ज़िंदगी का तजुर्बा दरकार होता है। आंद्रे, बार्बरा और जान ने मिल कर एक ऐसा त्रिकोण बना दिया था जिसके अंदर वह घुटता चला जा रहा था। उसके दिमाग़ पर डर और परेशानी लगातार छायी रहने लगी थी। ज़रा-सी आहट पर वह चौंक उठता। टेलीफ़ोन की घंटी से उसे डर लगने लगा। और उसके उप-चेतन मन में एक कीड़ा बिलबिला रहा था। 'कोई हादसा होने वाला है। कोई बुरी ख़बर मिलने वाली है। कोई मुसीबत सर पर टूटने वाली है।'

लेकिन तेज़ी से गुज़रते वक्त ने तकलीफ़ की गहराई कम कर दी थी और फिर ज़िंदगी धीरे-धीरे अपने रास्ते पर आ गयी।

जब कमरे में ख़ालिद का दम घुटने लगा तो उसने खिड़की खोल दी लेकिन ताज़ी हवा का एक झोंका अंदर न आया। "क्या इस मनहूस कमरे में अब हवा भी न आयेगी ?" वह दरवाज़ा खोल कर सड़क पर निकल गया।

सड़क लंबी थी लेकिन गलियाँ पेड़ की टहनियों की तरह जगह-बे-जगह फूट कर निकल आयी थीं। वह चलता रहा। लंबे-लंबे क़दम उठाते हुए, सड़क की गहमा-गहमी से अनजान, निरुद्देश्य चलता रहा।

"ख़ालिद ! ख़ालिद !" किसी ने ज़ोर से पुकारा।

ख़ालिद ने पीछे मुड़ कर देखा तो आनन्द भागा चला आ रहा था।

"हेलो आनन्द, क्या हाल है ?" ख़ालिद ने ताज्जुब से पूछा।

"यह सड़क तुमको कहीं नहीं ले जायेगी। अपनी मंज़िल तुम्हें खुद तय

करनी होगी।" आनन्द ने लंबी सड़क की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"लेकिन मुझे मालूम है मैं कहा जा रहा हूँ।"

"कोई बीस मिनट से मैं तुम्हें पकड़ने की कोशिश में पीछे-पीछे भाग रहा हूँ। जा कहाँ रहे हो ?" आनन्द ने सवाल किया।

"मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ..."ख़ालिद बोला।

"मैं एक बहुत बुरी ख़बर सुनाने के लिए तुम्हारे घर गया था, लेकिन तुम वहाँ मिले नहीं। तुम्हारी लैंडलेडी ने बताया कि तुम अभी-अभी कमरे से निकले हो।"

ख़ालिद तो जाने कब से किसी दुर्घटना की प्रतीक्षा कर रहा था। वह एक दम सन्नाटे में आ गया।

"बात यह है कि जान एक बार मरने से पहले तुमसे मिलना चाहता है।"

ख़ालिद के दिमाग़ में एक साथ जाने कितनी बहुत-सी तसवीरें उभरीं और फिर डूब गयीं।

"जान कौन-से अस्पताल में है ?" उसने घबरा कर सवाल किया।

"तुम मेरे साथ आओ," आनंद ने एक गुज़रती हुई टैक्सी को इशारा किया। ड्राइवर को पता बताते हुए दोनों उसमें बैठ गये। दोनों चुप थे। ख़ालिद उस वक्त सिर्फ जान के बारे में सोच रहा था। हेलेन की मौत, कार्नेशन के लाल फूल और कृष्ण से वेहद लगाव और फिर चार उँगलियों के लाल निशान धीरे-धीरे उसके गाल पर जल उठे। उसने ड्राइवर से कहा, "अगर तेज़ चलाओगे तो दस शिलिंग और मिलेंगे।"

गाड़ी हवा से बातें करने लगी। रफ्तार की तेज़ी ने सड़क के मामूली-मामूली मोड़ भी ख़तरनाक बना दिये। ड्राइवर ने अचानक ब्रेक लगाया और एक झटके से दोनों मुसाफ़िर अगली सीट से टकरा गये। आनन्द ने मुँह से पाइप निकाला और ड्राइवर से कहने लगा, "अगर धीरे चलाओगे तो दस शिलिंग ज़्यादा मिलेंगे।" ड्राइवर ने हँसते हुए गाड़ी धीमी कर दी। हैम्पस्टेड हीथ के एक चौराहे पर गाड़ी घूमी। ड्राइवर ने सर निकाल कर मकानों के नंबर देखे। टैक्सी थोड़ी दूर तक रेंगती रही, फिर नंबर दस के समाने ब्रेक लगा कर ड्राइवर ने गाड़ी का गियर न्यूट्रल में डाल दिया।

आनन्द टैक्सी से उतर कर अंदर भागा। ख़ालिद सहमा-सहमा उसके पीछे था। दो कमरों का एक फ्लैट था। असाधारण रूप से धूप चमक रही थी और बुड्ढा जान बहुत उदास और परेशान एक आराम-कुर्सी की पीठ पर सर रखे सो रहा था।

ख़ालिद उसके पास जाकर चुपचाप खड़ा हो गया। बुड्ढे जान की आँखें पहले की तरह ही बन्द रहीं। आनन्द ने धीरे से जान को पुकारा। जान ने आँखें खोल कर देखा तो ख़ालिद समाने खड़ा था। पहले तो उसको यक़ीन न आया। आँखें मल कर उसने शुवहा दूर करने की कोशिश की और जब जान को यह यक़ीन हो गया कि वह सपना नहीं देख रहा है तो उसकी आँखें मुस्करा उठीं और उसके चेहरे पर जीता-जागता रंग दौड़ गया। उसने आश्चर्य से पूछा, "ख़ालिद, तुम ! तुम यहाँ कैसे आ गये ?"

"जान, तुम्हारी तबीअत कैसी है ?" ख़ालिद ने घबरा कर पूछा।

"मेरी तबियत ? अभी सौ साल और जिऊँगा।"

"लेकिन-लेकिन आनंद कह रहा था...।"

"...कि जान मरने से पहले एक बार तुमसे मिलना चाहता है," आनन्द ने ख़ालिद का वाक्य पूरा कर दिया। "मैंने कोई झूठ नहीं बोला था। तुम पूछ लो जान से, वह सचमुच मरने से पहले तुमसे मिलना चाहता था।"

"तो मेरी बीमारी की ख़बर सुन कर तुम भागे चले आये। क्या तुम अभी तक मेरा इतना ख़याल करते हो ! मैं तो समझता था...ख़ैर छोड़ो... अब तुम आ ही गये हो और फिर मालूम नहीं कि दुबारा मिलने का मौक़ा मिले या न मिले। मैं तुमसे माफ़ी माँगना चाहता था। उस दिन मैंने तुम पर हाथ उठा दिया। ख़ालिद, मुझे माफ़ कर दो। बुड्ढा आदमी हूँ, गुस्सा आ जाता है।"

ख़ालिद अपने गाल को सहलाते हुए कहने लगा, "अब तो यह ठीक हो गया है, लेकिन यह दूसरा गाल हाज़िर है।"

"नहीं, अब यह ग़लती कभी नहीं होगी।"

"जान, मैं अकसर तुम्हारे बारे में सोचता रहा हूँ...।" ख़ालिद अभी कुछ और कहना चाहता था कि अंदर के कमरे से किसी नवजात शिशु के

रोने की आवाज़ उभरी—और जान अपनी कुर्सी से उछल कर कमरे की ओर भागा।

ख़ालिद अभी तक जान के घर का नक़शा नहीं समझ पाया था। यहाँ कौन रहता है? क्या सचमुच यह घर जान का है? इतने में जान एक छोटे-से बच्चे को गोद में उठाये हुए कमरे में दाख़िल हुआ। बच्चा अब चुप था। उसके भोले होंठों पर मुस्कराहट थी। उसके नन्हें-मुन्ने हाथों की मुट्ठियाँ कसी हुई थीं और उसकी मुस्कराती हुई गोल-गोल आँखों में दो मोती अभी तक झलक रहे थे।

ख़ालिद टकटकी बाँध कर लड़के को घूरने लगा। साँवला रंग—वह अभी तक रंग ही में खोया हुआ था कि जान बच्चे को गोद में समेटे हुए ख़ालिद की ओर बढ़ा और कहने लगा, "हैलो करो डैडी को!"

बच्चे ने अपना मुन्ना-सा हाथ ख़ालिद की तरफ़ कर दिया।

अब ख़ालिद की सहनशक्ति जवाब दे चुकी थी। उसकी सारी शंकाएँ दूर हो चुकी थीं। उसका अपना खून, उसके अपने व्यक्तित्व, उसके अपने अस्तित्व का एक हिस्सा, अपना ही अंश उसके सामने था। उसने लपक कर बच्चे को जान के हाथों से छीन लिया। फिर उसके चेहरे को ढेर सारे प्यारों से ढँक दिया। उसके होंठ, उसकी आँखें, उसकी नाक, उसकी ठुड्डी, उसके काले बाल सब-कुछ ख़ालिद का था। यह तो उसकी अपनी तसवीर थी—बचपन की तसवीर। यह उसका अपना ख़ून था।

फिर कुछ इस तरह बच्चे को लिपटाया कि ख़ालिद की आँखों से आँसुओं की धारा फूट निकली। प्यार के शिकंजे में फँस कर लड़के ने चीख़-चीख़ कर रोना शुरू कर दिया।

जान ने बढ़ कर ख़ालिद के हाथों से बच्चे को ले लिया। "इसको अपने दादा से ज़्यादा प्यार है।" जान रो रहा था और उसके आँसू टप-टप करके बच्चे पर गिर रहे थे। और बच्चा बुड्ढे दादा को रोते देख कर एकदम चुप हो गया था।

ख़ालिद भाव-विह्वल होकर जान से लिपट गया, फिर फूट-फूट कर रोने लगा। "बार्बरा कहाँ है?" वह बेतहाशा दूसरे कमरे की ओर भागा।

दूसरे कमरे में जेन ऐप्रन बाँधे सफ़ेद तामचीनी का बड़ा-सा प्याला

लिये रास्ते में मिल गयी। उसने ख़ालिद को रोकने की कोशिश की। लेकिन ख़ालिद उसे एक तरफ़ ढकेलते हुए आगे बढ़ गया।

एक़ पीले पत्ते की तरह बार्बरा अपने पलँग पर पड़ी हुई थी। ख़ालिद को देख कर वह मुस्करायी। उसने उठने की कोशिश की लेकिन जेन ने उसे उठने न दिया। ख़ालिद थोड़ी देर तक डबडबायी हुई आँखों से उसे देखने की कोशिश करता रहा, फिर धीरे से पलँग की पट्टी पर बैठ कर उसके गालों पर अपने गाल रख दिये। गर्म-गर्म आँसुओं के झरने बह निकले। बार्बरा उसको प्यार करती रही और बीच-बीच में कहती जाती, "मैं जानती थी, मैं जानती थी, ख़ालिद, तुम आओगे। मैं जानती थी, ख़ालिद कि तुम ज़रूर मेरे पास लौट आओगे।"

ख़ालिद की आँखों से उमड़ता हुआ सोता एक-क्षण को न रुका। वह हिचकियाँ लेते हुए कह रहा था, "बार्बरा, मुझे माफ़ कर दो...मैं बहुत नीच आदमी हूँ। घटिया, कमीना और बुज़दिल आदमी हूँ। बार्बरा, मैंने तुमको कितने बहुत-से दुख दिये हैं! बार्बरा, मैं उनका प्रायश्चित कैसे कर सकूँगा?"

"ख़ालिद, तुमसे अलग होकर डैडी का सहारा न मिलता तो शायद मैं मर चुकी होती।"

"डैडी कहाँ हैं तुम्हारे? मैं उनसे माफ़ी माँगना चाहता हूँ। अरे जेन, तुम यहाँ हमारे बेडरूम में मियाँ-बीवी की प्राइवेट बातें क्यों सुन रही हो? निकलो बाहर। फ़ौरन निकलो।"

जेन ख़ालिद की बात सुन कर मुस्करायी। जाने के लिए मुड़ी थी कि बार्बरा ने उसे धीरे से पुकारा, "डार्लिंग, ज़रा डैडी से कह दो हेलन उन्हें बुला रही है।"

"तो...तो क्या जान तुम्हारे डैडी हैं?"

"वह मुझे हेलेन कहते हैं और मैं उन्हें डैडी," बार्बरा मुस्करायी।

"तो जान से कह दो, जेन, कि कृष्ण उन्हें बुला रहा है। और अगर वह फ़ौरन नहीं आयेंगे तो हम लोग खफ़ा हो जायेंगे।"

जान तो पहले ही दरवाज़े पर खड़ा हुआ यह सब तमाशा देख रहा

था। कहने लगा, "नहीं बेटे, अब मैं कृष्ण और हेलेन को कभी नहीं ख़फ़ा कर सकता।"

बार्बरा कहने लगी, "ख़ालिद, तुम जानते हो तुमने हम दोनों को मज़-हबी बना दिया है।"

"वह कैसे, डार्लिंग ?" ख़ालिद ने आश्चर्य से पूछा।

"हम दोनों, यानी मैं और डैडी रोज़ रात को पूजा करते और हर इतवार को पाबंदी से चर्च जाते थे और ख़ालिद वहीं हमने खुदा को धमकी दी थी।"

"खुदा को धमकी दी थी !"

"हाँ हाँ, हमने उससे कहा था कि हम लोगों का सब कुछ लुट चुका है। हम सब कुछ छोड़ चुके हैं और अब अगर तूने हमारी न सुनी तो फिर हम तुमको भी छोड़ देंगे।"

ख़ालिद कहने लगा, "धमकियों से ऊपर वाला डर जाता है। उसने ज़रूर सुन ली होगी।"

"हाँ डार्लिंग, उसने मेरी और जान की दुआ सुन ली। नहीं तो मैं शायद खुदक़ुशी कर लेती।"

"ऐ, क्या दुआ माँगी तुम लोगों ने ?" ख़ालिद ने प्यार से सवाल किया।

"मैंने उससे काला बच्चा माँगा था, ख़ालिद !"

ख़ालिद ने धीरे-से झुक कर बार्बरा के होंठों पर होंठ रख दिये। ज़रा-सा सिर उठा कर देखा तो जान और आनन्द दरवाज़े पर खड़े मुस्करा रहे थे। उसने होंठ पर से होंठ हटाये बिना इशारा किया कि बाहर जाओ।